स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद

सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।

DCWH - 02

फीचर लेखन

पेज 15

चतुर्थ खण्ड

पुस्तक समीक्षा एवं साक्षात्कार

17, महर्षि दयानन्द मार्ग (थार्नहिल रोड), इलाहाबाद – 211 001

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

DCWH-02

फीचर लेखन

खंड

4

पुस्तक समीक्षा एवं साक्षात्कार

इकाई 14

समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक 5

इकाई 15

पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति 22

इकाई 16

साक्षात्कार की तैयारी 41

इकाई 17

साक्षात्कार : सामग्री का संपादन और संयोजन 63

इकाई 18

व्यक्ति-चित्र 81

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

श्री विष्णु प्रभाकर
दिल्ली

श्री गिरिराज किशोर
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर

श्री राजेन्द्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी, नयी दिल्ली

प्रो. इंद्रनाथ चौधरी
सचिव, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

प्रो. चंद्रकांत बांदिवडेकर
बंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. असगर वजाहत
जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

सहयोग

प्रो. शिव के. कुमार
हैदराबाद

श्री ब्रजनारायण अग्रवाल
साप्ताहिक हिंदुस्तान, नयी दिल्ली

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
रीडर, हिंदू कालेज, दिल्ली

संकाय सदस्य

प्रो. बख्शीश सिंह
भूतपूर्व निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
प्रो. वी.रा. जगन्नाथन (संयोजक)
डॉ. जवरीमल पारख
डॉ. रीतारानी पालीवाल
डॉ. शत्रुघ्न कुमार

सहयोग

डॉ. शशिप्रभा कामरा
डॉ. सुनयना कुमार

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक

डॉ. सत्यकाम
डॉ. जवरीमल पारख

सहयोग

श्री विनोद भारद्वाज
नवभारत टाइम्स,
नयी दिल्ली

पाठ्यक्रम संपादक

श्री राजेंद्र अवस्थी
संपादक, कादंबिनी, नयी दिल्ली

संकाय सदस्य

डॉ. सत्यकाम
डॉ. पूरन चंद टंडन
डॉ. नीलम फारूकी
श्रीमती विमल खांडेकर

डॉ. जवरीमल पारख
(खंड एवं पाठ्यक्रम संयोजक एवं संपादक)

सामग्री निर्माण

श्री बालकृष्ण सेल्वराज
कुलसचिव
मुद्रण एवं प्रकाशन प्रभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

जून, 1992

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय*, *1992*

ISBN-81-7263-099-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो० आशा एस कंवर निदेशक (मानविकी विद्यापीठ) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेज़र टाईप सेटरः टेसा मीडिया एंड कम्प्यूटर, 106/7, कृष्णा नगर, शफदर गंज इन्क्लेव, नई दिल्ली-110029
प्रभात ऑफसेट प्रेस, दरिया गंज, नई दिल्ली-2
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद की ओर से डा० अरविन्द कुमार सिंह, कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित, सितम्बर 2002
मुद्रक नितिन प्रिन्टर्स, 1 पुराना कटरा, इलाहाबाद द्वारा पुनः मुद्रित। सितम्बर 2002

महादेव बुक बाईंडिग हाउस द्वारा मुद्रित

खंड 4 का परिचय

सृजनात्मक लेखन पाठ्यक्रम के अंतर्गत फीचर लेखन का यह चौथा खंड है। इससे पहले के खंड में आपने यात्रा लेखन और रिपोर्ताज का अध्ययन किया था। इस खंड में हम आपको पुस्तक समीक्षा एवं साक्षात्कार के बारे में बतायेंगे। इस खंड की आरंभिक दो इकाइयों में समीक्षा के संबंध में विचार किया गया है। इकाई 14 में समीक्षा की विशेषताएं और समीक्षक के अपेक्षित गुणों के बारे में बताया गया है। इसके साथ ही पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर, पुस्तक समीक्षा के महत्व और उसके विभिन्न पक्षों पर भी प्रकाश डाला गया है। इकाई 15 में पुस्तक समीक्षा लेखन के व्यावहारिक पक्ष पर विचार किया गया है। पुस्तक समीक्षा कितने प्रकार की हो सकती है। समीक्षा लिखने से पूर्व क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए एवं पुस्तक समीक्षा किस तरह लिखनी चाहिए—इन विभिन्न पक्षों का विवेचन किया गया है।

इकाई 16 और 17 में साक्षात्कार के संबंध में बताया गया है। इकाई 16 में साक्षात्कार की तैयारी पर विचार किया गया है और इकाई 17 में साक्षात्कार के संपादन, संयोजन और प्रस्तुति के बारे में। "साक्षात्कार की तैयारी" के अंतर्गत साक्षात्कार से पूर्व की तैयारी, साक्षात्कार लेने का ढंग, प्रश्नावली का निर्माण, साक्षात्कार की रिकार्डिंग आदि से संबंधित पक्षों को समझाया गया है। इसके अतिरिक्त इस इकाई में साक्षात्कार के महत्व और उसके प्रका ' के बारे में भी बताया गया है। इकाई 17 का संबंध साक्षात्कार के लेखन से संबंधित है ताकि उसे प्रकाशन के लिए अंतिम रूप दिया जा सके।

इस खंड की अंतिम इकाई "व्यक्ति-चित्र" पर है। इसमें किसी उल्लेखनीय व्यक्ति के संबंध में प्रोफाइल तैयार करने के बारे में बताया गया है। प्रोफाइल के लिए कैसे तैयारी की जाए, उसके विभिन्न पक्ष कौन-कौन से हैं और **व्यक्ति-चित्र** कैसे लिखना चाहिए—इसके संबंध में बताया गया है।

उपर्युक्त इकाइयों में पुस्तक समीक्षा, साक्षात्कार और व्यक्ति-चित्र के उदाहरण भी दिये गये हैं ताकि सैद्धांतिक बातों के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष भी उजागर हो सकें। अभ्यास के द्वारा अपनी लेखन कुशलता का विकास भी कर सकेंगे।

इस खंड में साक्षात्कार के संबंध में एक वीडियो का निर्माण किया जा रहा है। उम्मीद है यह आपके लिए ज्ञानवर्धक साबित होगा।

आभार

जनसत्ता, नयी दिल्ली
नवभारत टाइम्स, नयी दिल्ली
हंस, नयी दिल्ली
समीक्षा, पटना
साक्षात्कार, भोपाल
कादम्बिनी, नयी दिल्ली
संडे मेल, (हिन्दी), नयी दिल्ली
इंडिया टुडे, (हिन्दी), नयी दिल्ली
सांचा, नयी दिल्ली
भाषा, नयी दिल्ली
आलोचना, नयी दिल्ली
समकालीन भारतीय साहित्य, नयी दिल्ली
दिनमान, नयी दिल्ली

इकाई 14 समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य
14.1 प्रस्तावना
14.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय
 14.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर
 14.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व
14.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष
 14.3.1 पुस्तक का परिचय
 14.3.2 विषय का महत्व
 14.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन
 14.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ
14.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण
 14.4.1 विशेषज्ञता
 14.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान
 14.4.3 पूर्वग्रहमुक्त
 14.4.4 दृष्टि सम्पन्न
 14.4.5 वस्तुनिष्ठ
 14.4.6 संतुलित लेखन
 14.4.7 सामाजिक दायित्व बोध
14.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ
 14.5.1 वस्तुनिष्ठता
 14.5.2 पूर्वग्रहमुक्तता
 14.5.3 प्रासंगिकता
 14.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान
 14.5.5 सोद्देश्यता
 14.5.6 निजता
 14.5.7 भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ
14.6 सारांश
14.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के चौथे खंड की यह पहली इकाई है। इसमें आप समीक्षा और समीक्षक की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय समझ सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- एक अच्छे समीक्षक के गुणों पर प्रकाश डाल सकेंगे; और
- पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन पाठ्यक्रम की यह इकाई समीक्षा लेखन से संबंधित है। इस इकाई में समीक्षा लेखन के विभिन्न पक्षों एवं विशेषताओं का परिचय दिया गया है। समीक्षा लेखन आप अगली इकाई में सीखेंगे।

समीक्षा लेखन में गतिशील होने के पूर्व नवोदित समीक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह समीक्षा के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त कर ले। इसी उद्देश्य से सबसे पहले समीक्षा का अर्थ स्पष्ट किया गया है। "समीक्षा" और "आलोचना" संज्ञा को लेकर विद्वानों में भी पर्याप्त मतभेद हैं। हमने उन विवादों में पड़े बिना यह स्पष्ट कर दिया है कि समीक्षा का अर्थ पुस्तक समीक्षा है और आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा से विस्तृत है। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए समीक्षक के गुण और समीक्षा की विशेषताओं की जानकारी आपको अवश्य होनी चाहिए। इसी दृष्टि से इस इकाई में इन मुद्दों की चर्चा की गयी है। आप इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर समीक्षा क्षेत्र में कदम रख सकते हैं।

आप ज्यादा से ज्यादा समीक्षाएँ पढ़ें और अच्छी समीक्षा और साधारण समीक्षा में अंतर स्पष्ट करने की कोशिश करें। आमतौर पर सभी पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा का स्तंभ होता है। हिंदी में एक दो पत्रिकाएँ ऐसी भी हैं जो पुस्तक समीक्षाएँ प्रमुखता से प्रकाशित करती हैं।

14.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय

समीक्षा का शाब्दिक अर्थ है: सम्यक् परीक्षा, सम्मति, अन्वेषण आदि। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक की सम्यक् परीक्षा और विश्लेषण किया जाता है। इस परीक्षा और विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय-वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर आदि पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही साथ वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के सम्बन्ध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है। अभिमन्यु अनत के उपन्यास "गांधी जी बोले थे" की समीक्षा यहां उद्धृत की जा रही है। समीक्षक हैं—डॉ. सुरेश चन्द्र त्यागी।

*मॉरिशस के अभिमन्यु अनत ने हिन्दी लेखक के रूप में भारत में विशेष ख्याति प्राप्त की है। उन्होंने अपनी रचनाओं में मॉरिशस की जनचेतना को बड़ी बारीकी से व्यक्त किया है। ... "गांधी जी बोले थे" इन्हीं अभिमन्यु अनत की कथाकृति है जो आवरण की सूचना के अनुसार "लाला पसीना" की अगली कड़ी है। गिरमिटिया मजदूरों के रूप में जो भारतीय ग्रामीण एक सुखद भविष्य का स्वप्न संजोकर मॉरिशस गये थे, उन्हें वहाँ जाकर शोषण का भयावह रूप देखना पड़ा। ... गांधी जी के इन सुझावों को साकार रूप देने के लिए अभिमन्यु अनत ने इस उपन्यास के नायक "परकाश" का चरित्र खड़ा किया है। वह है, नयी चेतना के प्रकाश का प्रतीक, मॉरिशस में रह रहे भारतीय जनों की जागरण कथा का नायक। विभिन्न परिस्थितियों को पकड़ने में अभिमन्यु अनत की भाषा सर्वथा समर्थ है। यह पूरा उपन्यास तीन भागों में विभाजित है जिनमें क्रमशः आठ, सात और पाँच परिच्छेद हैं। ... क्रिओल या फ्रेंच भाषा का यत्रतत्र प्रयोग लेखक ने संवादों में किया है, जिन्हें हिन्दी पाठक समझ नहीं सकता। यदि यह प्रयोग अनिवार्य ही था तो पादटिप्पणी में इनका अनुवाद देना चाहिए था (**समीक्षा**, वर्ष 18 अंक 4)।*

इतना तो आप समझ गये होंगे कि पुस्तक का मूल्यांकन करना पुस्तक समीक्षा है। इसके माध्यम से पाठक पुस्तक की जानकारी प्राप्त करता है और उस पुस्तक के बारे में उसकी एक राय बनती है।

पुस्तक समीक्षा का पहला और प्राथमिक दायित्व पाठकों को पुस्तक से परिचित कराना है। लेकिन परिचय का अर्थ पुस्तक की विषय-वस्तु का सारांश कर देना नहीं है। निश्चय ही पुस्तक की विषय-वस्तु के बारे में जानने की उत्सुकता ही पाठक को पुस्तक समीक्षा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है परंतु यह भी सही है कि वह समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय-वस्तु, संरचना और भाषिक सर्जनात्मकता के सम्बंध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। वह समीक्षक से विश्लेषण और आलोचनात्मक विवेचन की भी अपेक्षा करता है। इसलिए समीक्षा लिखते समय समीक्षक को सतर्क रहना चाहिए कि उसकी समीक्षा पुस्तक का सारांश मात्र बनकर न रह जाए।

14.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर

समीक्षा और आलोचना को आम तौर पर एक समझ लिया जाता है। लेकिन यहाँ हम इन्हें दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त कर रहे हैं। समीक्षा जिसे अंग्रेजी में Review कहा जाता है का प्रयोग पुस्तक समीक्षा (Book review) के अर्थ में किया गया है जबकि आलोचना (Criticism) अधिक व्यापक अर्थ वाला शब्द है।

वस्तुतः समीक्षा आलोचना विधा की एक शाखा या उपशाखा है। समीक्षा का तात्पर्य पुस्तक समीक्षा से है। निश्चित रूप से वह आलोचना के दायरे में आती है; पर आलोचना के दायरे में और भी बहुत कुछ आता है, जैसे किसी विधा, लेखक, प्रवृत्ति आदि का मूल्यांकन। पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केन्द्र में होती है और आलोचना में विधा, लेखक और प्रवृत्ति। लेकिन ऐसा नहीं है कि पुस्तक समीक्षा में विधा, लेखक और प्रवृत्ति की चर्चा नहीं होती या आलोचना में किसी पुस्तक की चर्चा नहीं होती। होती है, पर सन्दर्भ के रूप में। किसी पुस्तक पर समीक्षा लिखते समय समीक्षक उस धारा या प्रवृत्ति और उस क्षेत्र के समकालीन लेखकीय रुझान की चर्चा करेगा या कर सकता है, पर चर्चा के केंद्र में वह पुस्तक ही रहेगी। इसी प्रकार किसी विषय विशेष पर विचार करते समय आलोचक विभिन्न पुस्तकों का सन्दर्भ के तौर पर उल्लेख कर सकता है, उन पर अपनी राय व्यक्त कर सकता है: पर केन्द्र में वह विषय विशेष ही रहेगा न कि कोई पुस्तक। मसलन, अगर कोई लेखक भीष्म साहनी के उपन्यास **मय्यादास की माड़ी** का विश्लेषण करता है, तो यह पुस्तक समीक्षा का उदाहरण होगा। और कोई साहित्यकार भीष्म साहनी के उपन्यास शिल्प का विश्लेषण करता है और इसके लिए वह संदर्भ के तौर पर **तमस** और **मय्यादास की माड़ी** का उपयोग करता है, तो वह आलोचना का उदाहरण होगा।

कभी-कभी पुस्तक समीक्षा आलोचना के दायरे में प्रवेश कर जाती है। जब पुस्तक समीक्षक पुस्तक के बहाने उस लेखक के सम्पूर्ण लेखन या पुस्तक के विषय को आधार बनाकर एक स्वतंत्र लेख लिख दे। उदाहरण के लिए, जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक **भारत एक खोज** की प्रसिद्ध इतिहासविद् दामोदर धर्मानंद कोसंबी द्वारा लिखित समीक्षा को सिर्फ पुस्तक समीक्षा नहीं कहा जा सकता। वह एक स्वतंत्र लेख की तरह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के आलोचनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से लेखक पुस्तक समीक्षा करते हुए कुछ ऐसी महत्वपूर्ण स्थापनाएँ कर जाता है जो पुस्तक समीक्षा से अलग भी अपना महत्व रखती है। साहित्यिक विषयों पर लिखी समीक्षाओं में भी इसकी संभावना रहती है कि समीक्षक पुस्तक के बहाने रचनाकार के संपूर्ण लेखन या किसी खास प्रवृत्ति या उसके भाषिक और शैलीगत विशेषताओं का ऐसा मूल्यांकन प्रस्तुत करे जो उस "समीक्षा" को आलोचना के दायरे में पहुँचा दे।

एक बात आप अब तक समझ गये होंगे कि आलोचना का क्षेत्र समीक्षा से व्यापक होता है। यहाँ व्यापकता का अर्थ क्षेत्र विस्तार से नहीं, बल्कि विश्लेषण की व्यापकता से है। समीक्षा का दायरा छोटा होता है उसमें विश्लेषण किसी पुस्तक तक ही सीमित रहता है। यह विश्लेषण ही समीक्षा और आलोचना को एक दूसरे से जोड़ता है। दोनों में शोध-प्रवृत्ति भी होती है। किसी पुस्तक की समीक्षा करते समय समीक्षक तथ्यों की गहरी छानबीन करता है। आलोचना में खोजबीन का यह दायरा और भी व्यापक हो जाता है।

वस्तुतः समीक्षा और आलोचना एक दूसरे से जुड़े अवश्य हैं, पर एक नहीं है। समीक्षा आलोचना का एक अंग है, पर उसका अपना अस्तित्व है, उसकी एक अलग पहचान है। इसलिए आलोचना और समीक्षा को एक दूसरे का पर्याय नहीं समझना चाहिए।

14.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व

अब यह सवाल उठता है कि पुस्तक समीक्षा क्यों? इसका उद्देश्य क्या है? ऐसे कुछ सवाल आपके दिमाग में पनप रहे होंगे। आइए, इन सवालों का हल ढूंढा जाए।

दरअसल, साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। उसका यह भार पुस्तक समीक्षा हलका कर देती है। इसके अलावा पाठक वर्ग

का एक हिस्सा ऐसा भी होता है जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़े। यहां समीक्षा उनकी मदद के लिए पहुँचती है। इस प्रकार समीक्षा एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुँचा देती है। इससे दो फायदे होते हैं। एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है, दूसरे, वह नये लेखकीय रुझानों से भी परिचित होता चलता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से सम्बद्ध पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुँचती है।

पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठको के लिए सही पुस्तक का चुनाव बड़ा मुश्किल काम है। समीक्षा उसकी इस मुश्किल को कम करती है। इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जोड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही साथ इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ भी विकसित कर सकता है और अपनी राय भी बना सकता है।

बोध प्रश्न

1) पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं? (तीन पंक्तियों में उत्तर दें।)

....

....

....

2) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में क्या अंतर है? (सही उत्तर के सामने √ निशान लगाएं।)

क) पुस्तक समीक्षा में सिर्फ पुस्तक का सारांश और आलोचना में आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है। ( )

ख) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केंद्र में होती है और आलोचना में पुस्तक का संदर्भ के रूप में उपयोग किया जाता है। ( )

ग) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में कोई अन्तर नहीं है। ( )

घ) आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा की अपेक्षा व्यापक होता है। ( )

3) पुस्तक समीक्षा का क्या महत्व है?
(पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।)

....

....

....

....

....

14.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष

अब तक के विश्लेषण से आप समीक्षा के विभिन्न पक्षों का संकेत पा चुके हैं; मसलन पुस्तक का परिचय, विषय का प्रतिपादन और आलोचनात्मक मूल्यांकन। कुल मिलाकर पुस्तक समीक्षा इन्हीं पक्षों को समेट कर चलती है। समीक्षक पाठकों को पुस्तक से परिचित कराता है, उसमें वर्णित विषय पर प्रकाश डालता है और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। समीक्षा में पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएँ भी दी जाती हैं। आइए, इन पर अलग-अलग विचार करें।

14.3.1 पुस्तक का परिचय

पुस्तक का सही परिचय प्रस्तुत करना समीक्षक का मुख्य दायित्व है। समीक्षा लिखते समय आरम्भ में पुस्तक की सामान्य जानकारी पाठक को दे देनी चाहिए। सामान्य जानकारी का तात्पर्य है पुस्तक के लेखक, उसकी विषय वस्तु के बारे में बताना, पुस्तक कब लिखी गई तथा किस विधा में लिखी गई है का भी उल्लेख करना। इससे पाठक को यह पता चल जाता है कि पुस्तक का विषय क्या है और लेखक ने इसे किस विधा में और कब लिखा है। इस तरह की सामान्य जानकारी से पाठक को यह तय करने में सुविधा रहती है कि प्रस्तुत पुस्तक उसकी अभिरुचि के क्षेत्र में आती है या नहीं। इस प्रारंभिक परिचय से ही वह समीक्षा पढ़ने की ओर आगे प्रवृत्त होता है। निम्नलिखित उदाहरण पुस्तक समीक्षा के परिचयात्मक अंश को उजागर करता है।

बम भोलेनाथ *नागार्जुन के सन् 1945 से 1978 तक लिखे गये लेखों और निबंधों का संग्रह है। यद्यपि यह सही है कि इसमें नागार्जुन के लगभग 30-35 वर्ष पुराने लेख या निबंध संकलित हैं किन्तु वे अपनी भावना, संवेदना, विचारधारा और शैली में इतने ताजगी भरे हैं कि आज भी प्रासंगिक और अर्थवान् लगते हैं। मुख्य बात यह है इस संग्रह के निबंध विविध रंगी हैं—कुछ संस्मरण हैं, कुछ यात्रा-वृत्तान्त, कुछ समालोचनात्मक, कुछ परिचयात्मक और कुछ विश्लेषणात्मक। कुछ में ये सभी विशेषताएँ एक साथ मौजूद हैं। उनके निबंधों पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। जैसे नागार्जुन अक्खड़, फक्कड़ और मस्तमौला हैं वैसे ही उनके ये निबंध भी हैं।*

*(श्रीकृष्णचंद्र लाल लिखित नागार्जुन की पुस्तक "**बम बोलेनाथ**" की समीक्षा का एक अंश : **समीक्षा**, वर्ष 22 अंक 3)*

केदारनाथ सिंह के कविता संकलन "**आकलन में सारस**" पर डॉ रामवचन राय की समीक्षा—

*"**अकाल में सारस**" केदारनाथ सिंह की कविताओं का ताजा संग्रह है। इसकी कविताएँ 1983 से 87 के बीच लिखी गयी हैं। ये कविताएँ कवि के पिछले दो संग्रहों—"जमीन पक रही है" और "यहाँ से देखो"—की कविताओं की कड़ी में गिनी जाएँगी। केदारनाथ सिंह की कविताओं का एक खास आकर्षण है। आसपास की साधारण सी लगने वाली चीजें उनकी कविता के विषय हैं। कहने का लहजा बिल्कुल बोलचाल का, ऐसा कि कहीं से लगता नहीं कि कविताई कर रहे हैं।*

*(**समीक्षा**, वर्ष 23 अंक 1)*

उपर्युक्त दोनों अंशों में पुस्तक का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनके लेखन और प्रस्तुति का ढंग अलग-अलग हो सकता है, पर चार बातें कमोबेश दोनों में दृष्टिगोचर होती हैं। ये हैं—पुस्तक का सामान्य परिचय, लेखक का संक्षिप्त परिचय, लेखक के पूर्व संग्रहों का उल्लेख और पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत।

उपर्युक्त चारों बातों से आरंभ में ही पाठक को लेखक, लेखक का रचनात्मक क्षेत्र, पुस्तक का विषय और उसकी विधा का परिचय मिल जाता है। इस परिचय से प्रेरित होकर वह पुस्तक समीक्षा को आगे पढ़ना जारी रखता है। स्पष्ट है कि पुस्तक समीक्षा पुस्तक के परिचय पर समाप्त नहीं होती वरन् उससे आरंभ होती है। वास्तविक "समीक्षा" तो इसके बाद आती है।

14.3.2 विषय का महत्व

पुस्तक का सामान्य परिचय प्राप्त कर लेने के बाद पाठक पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित होना चाहता है। परिचय के क्रम में पाठक यह जानना चाहता है कि पुस्तक का सम्बन्ध ज्ञान के किस क्षेत्र से है : मसलन साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, खेलकूद आदि। विषय के परिचय के साथ उसकी प्रस्तुति की शैली की भी जानकारी आवश्यक है। अर्थात् पुस्तक निबंधात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, उपन्यास, कहानी, प्रश्नोत्तरी आदि किस विधा या शैली में लिखी गई है।

विषय के संबंध में तीसरी जानकारी यह आवश्यक है कि लेखक ने यह पुस्तक किन पाठकों के लिए लिखी है। यह जानना इसलिए आवश्यक है क्योंकि पाठक वर्ग की भिन्नता एक ही

विषय पर लिखी गयी पुस्तकों में बहुत बड़ा अंतर ला देती है। यह अंतर विषय की प्रस्तुति से लेकर भाषा और शैली के चयन तक नजर आता है।

उपर्युक्त बातों का उल्लेख करने के साथ ही विषय वस्तु के संबंध में विचार करना चाहिए। सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि पुस्तक की प्रासंगिकता क्या है? दूसरे, पुस्तक के विषय की प्रस्तुति किस रूप में है? क्या लेखक अपनी बात को प्रभावशाली रूप में रखने में सफल रहा है? तीसरे, लेखक ने विषय के किन-किन पक्षों को पेश किया है और ये पक्ष मूल विषय को स्पष्ट करने में कहाँ तक सहायक हुए हैं।

गिरिराज किशोर के उपन्यास **परिशिष्ट** पर समीक्षा लिखते हुए डॉ. गोपाल ने इसकी विषय वस्तु के महत्व और उसकी प्रासंगिकता को उजागर किया है।

गिरिराज किशोर ने अपने कथा संसार के केन्द्रीय मंच के रूप में एक आई.आई.टी. संस्थान को चुना है जहाँ अधिकतर उच्च वर्ण और सम्पन्न समाज के छात्र प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रवेश पाते हैं। इनमें से अधिकतर छात्र वैसे पब्लिक और मिशनरी स्कूलों से आते हैं जहाँ न केवल अँगरेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, वरन् अंग्रेजी उनको घुट्टी में पिला दी जाती है। ये लड़के विलायती रहन-सहन, विलायती रीति-रिवाज, विलायती मैनर्स, विलायती लहजे, विलायती अनुभाव आदि के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में बोलने, भारतीय ढंग से अभिवादन करने, भारतीय ढंग से कपड़े पहनने आदि में इन्हें शर्म आती है। इनके बीच आरक्षण के बल पर आये अनुसूचित जाति के छात्र अपने को अजनबी महसूस करते हैं। उच्च जाति और वर्ग के छात्र बहुमत में तो होते ही हैं, वे हरिजन छात्रों के प्रति आक्रामक भी होते हैं, ये उच्चवर्गीय छात्र हरिजन छात्रों को अवांछित और घुसपैठिया समझते हैं, जैसे मन्दिर के प्रांगण में दो चार सुअर घुस आये हों। इन पॉश संस्थाओं में रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा, बातचीत वगैरह का ऐसा कृत्रिम ढाँचा बन गया है कि भारत का औसत किसान वहाँ पहुँच कर अनुभव करता है कि वह शायद अपने देश में नहीं है। हरिजन किसान-मजदूर के लिए तो वह दूसरी दुनिया ही है। इन संस्थानों के अधिकतर शिक्षक और उच्चवर्गीय छात्र आरक्षण की व्यवस्था के विरोधी हैं और वे इसका बदला अल्पसंख्यक हरिजन छात्रों से जातिभेद की नीति अपना कर करते हैं। कक्षाओं में, खेल के मैदान में, मेस में, छात्रावास में, अतिथि भवन में, सर्वत्र, उच्चवर्गीय छात्र अल्पसंख्यक हरिजन छात्रों का अपमान करते हैं, डराते धमकाते हैं और उत्तेजित होने पर मारपीट भी करते हैं। इन संस्थाओं की शिक्षा पद्धति भी इस ढंग की है कि आरक्षण पर आये छात्र आवधिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण नहीं हो पाते, वे 'क्विज', 'मिड सेमिस्टर', 'सेमिस्टर' और 'बैक लॉग' की दुर्लंघ्य दीवारों को लाँघ नहीं पाते। सारी पढ़ाई अँगरेजी में होती है, अँगरेजी में ही बातचीत होती है, जिससे सामान्य स्कूलों से पढ़ कर आये छात्रों को न केवल पढ़ाई समझने में कठिनाई होती है वरन् फर्राटे से अँगरेजी न बोल सकने के कारण अपमानित भी होना पड़ता है। इस सबका परिणाम यह होता है कि तकनीकी संस्थाओं में एस.सी.सी.टी. कोटा के अधिकतर छात्र सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई सम्पन्न नहीं कर पाते; अनेक छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर भाग आते हैं और कई तो आत्महत्या तक कर लेते हैं।

(**समीक्षा**, वर्ष 18 अंक 4)

निम्नलिखित उदाहरण में पुस्तक समीक्षा का आरंभ ही पुस्तक के विषय के महत्व को उजागर करने से हुआ है :

हिंदी में बच्चों के साहित्य की कमी की बात अक्सर सुनने में मिलती है। हिंदी की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में बच्चों के लिए "सुरक्षित" पन्नों के बावजूद इस बात में बहुत सच्चाई नज़र आती है। तमाम बाल पत्रिकाओं और कॉमिक्सों में फैंटमों और स्पाइडर मैनों के अलावा रामायण, महाभारत और देशी-विदेशी लोक कथाओं (जो अधिकतर धार्मिक ही होती हैं) से ही ज्यादातर जगह घेरी होती है और इनके बाद जो थोड़ी बहुत जगह बच पाती है, उस पर नन्हें जासूसों का कब्जा है। यह सारी सामग्री बच्चों की रचनात्मकता को, उनकी सृज़नात्मक क्षमता को विकसित करने के बजाय कुंद ही करती है।

(सफदर हाशमी की कविता पुस्तकों पर प्रकाशित समीक्षा का आरंभिक अंश, समीक्षक : **सहीराम, सांचा, अगस्त-सित. 1989**)

14.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन

किसी पुस्तक का सामान्य परिचय देने और उसकी विषय वस्तु पर प्रकाश डालने के बाद समीक्षक पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन की ओर अग्रसर होता है। एक बात यहाँ ध्यान रखने की है कि आलोचनात्मक मूल्यांकन और परिचय को समीक्षा में अलग-अलग रखा जाए, यह आवश्यक नहीं है। बल्कि बेहतर यही है कि पुस्तक के परिचय में ही उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी निहित हो। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि पुस्तक समीक्षा में इतना अवकाश हमेशा संभव नहीं होता कि दोनों कार्य स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत किये जा सकें।

किसी पुस्तक का मूल्यांकन समीक्षक को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर करना चाहिए। यह पूर्वाग्रह लेखक के प्रति भी हो सकता है और उसके लेखन के प्रति भी। इससे हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए। किसी पुस्तक का संतुलित मूल्यांकन समीक्षक की उस विषय पर पकड़, सामान्य ज्ञान की जानकारी और दृष्टि सम्पन्नता पर बहुत कुछ निर्भर करता है। पुस्तक के मूल्यांकन का काम उत्तरदायित्वपूर्ण होता है, क्योंकि इसके आधार पर पाठक वर्ग एक राय बनाता है। इस प्रकार इसके माध्यम से समीक्षक एक सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह करता है। आइए, कुछ उदाहरणों के माध्यम से समीक्षा के आलोचनात्मक पक्ष पर नजर डालें।

गिरिराज किशोर के उपन्यास परिशिष्ट पर डॉ. गोपाल की समीक्षा के कुछ अंशों (विषय वस्तु से संबंधित) का आपने अवलोकन किया है। यहाँ समीक्षा का जो अंश प्रस्तुत किया जा रहा है, वह इस पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन से सम्बद्ध है।

इसमें सन्देह नहीं कि इस उपन्यास के मूल में एक समस्या है। इस समस्या की भयावहता का बोध कराने के लिए भी यह उपन्यास लिखा गया है। पर रचना या कला की दृष्टि से समस्या की प्रमुखता कहीं बाधक नहीं बनी है। उपन्यासकार ने अपने कथा संसार के माध्यम से समस्या को ''प्रस्तुत'' ही किया है, ''कहा'' नहीं है। यहाँ जबकि उपन्यास के पात्र भी इस समस्या पर कहीं अपने विचार प्रस्तुत नहीं करते। कथा के पात्र इस समस्या के बीच से गुजरते हैं, इसे जीते हैं, भोगते हैं, अनुभव करते हैं। उपन्यास पढ़ने पर इस बात का बोध होता है कि उपन्यासकार को यह विज़न उसके चारों ओर की परिस्थितियों से प्राप्त हुआ है। ''' हम जानते हैं कि गिरिराज किशोर आई.आई.टी., कानपुर के एक पदाधिकारी हैं और इसलिए इस उपन्यास का कथा संसार अनुभव की प्राथमिकता से रहित नहीं हो सकता : पर यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि यह आई.आई.टी. कानपुर की ''सत्यकथा'' है। यह वस्तुतः उस मानसिकता के विरुद्ध अभियान है जिसके शिकार उच्च वर्ग के बहुसंख्यक लोग हैं। इस मानसिकता का एक रूप यह भी हो सकता है जो उपन्यास में प्रस्तुत है। यदि इस उपन्यास के आईने में हम अपने चेहरे देख सकें और उन्हें पहचान सकें तो सम्भवतः उपन्यास की यह सबसे बड़ी सफलता होगी।

हरिजनों की जिन्दगी पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास, ''नाच्यो बहुत गोपाल'' आज से लगभग सात वर्ष पूर्व अमृतलाल नागर ने लिखा था। निस्संदेह इस जीवन यथार्थ की गहरी समझ, प्रामाणिक अनुभव, गहन अनुभूति, पात्रों और स्थितियों की जीवन्त सृष्टि, सही शिल्प प्रविधि के चुनाव और भाषा के सर्जनात्मक उपयोग की दृष्टि से ''परिशिष्ट'' ''नाच्यो बहुत गोपाल'' की अगली कड़ी है। इस उपन्यास के प्रकाशन के साथ गिरिराज किशोर हिन्दी की अगली पंक्ति के उपन्यासकारों के बीच अपनी स्थायी जगह बनाने में सफल हो गये हैं।''

(**समीक्षा**, वर्ष 18 अंक 4)

आलोचनात्मक मूल्यांकन और आलोचना को निषेधात्मक समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। आलोचनात्मक मूल्यांकन में पुस्तक की सीमा और विशेषता दोनों पक्षों का विश्लेषण करना चाहिए।

आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के क्रम में समीक्षक पुस्तक के केन्द्रीय विषय, शिल्प और भाषा की गहरी छानबीन करता है और अपनी राय देता है। इसके अतिरिक्त वह उस पुस्तक की तुलना उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तक से भी करता है। उदाहरण के लिए, डॉ. गोपाल ने ''परिशिष्ट'' का मूल्यांकन करते हुए ''नाच्यो बहुत गोपाल'' की भी

चर्चा की है। अन्त में समीक्षक मूल्यांकन संबंधी अपना निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है। कभी-कभी वह यह भार पाठकों पर भी छोड़ देता है।

14.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

पुस्तक के प्रकाशन स्तर और प्रकाशन संबंधी सूचनाओं से पाठक को अवगत कराना समीक्षा का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। पुस्तक का प्रकाशन कैसा हुआ है? उसका मुद्रण का स्तर क्या है? प्रूफ संबंधी भूलें तो नहीं रह गयी हैं आदि बातों का उल्लेख समीक्षा लिखते समय किया जाना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि निम्न स्तरीय मुद्रण या प्रूफ संबंधी त्रुटियाँ पाठक को पुस्तक पढ़ने से विरक्त करती हैं। विश्वकोश आदि में तो ये गलतियाँ अक्षम्य हैं।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित भारतीय साहित्य के विश्वकोश की समीक्षा का निम्नलिखित अंश इस दृष्टि से उल्लेखनीय है :

पुनरावृत्ति के दोष से बचने के साथ ही साथ किसी विश्वकोश के संपादकों को यह भी देखना चाहिए कि उसमें प्रूफ रीडिंग की अशुद्धियाँ न रहने पायें। यह इसलिए भी आवश्यक है कि पाठक विश्वकोश का उपयोग सामान्यतः कोई सूचना प्राप्त करने के लिए करते हैं। अतः प्रूफ रीडिंग की छोटी से छोटी अशुद्धि भी कभी-कभी अर्थ का अनर्थ कर सकती है। पर यह देखकर खेद होता है कि यह विश्वकोश प्रूफ रीडिंग की अशुद्धियों से बच नहीं पाया है। पृष्ठ 895 पर एक लेखक का नाम खलील अली खान "अश्क" दिया हुआ है तो पृष्ठ 895 पर वही नाम खलील अली खां "अष्ठ" हो गया है। इन दोनों में से कौन सा नाम सही है? इसी प्रकार पृष्ठ 842 पर "दलुराय जी नागिरी" प्रविष्टि में राजा का नाम कहीं दलुराय लिखा है तो कहीं दलतूराय"।

(हंस में प्रकाशित समीक्षा का एक अंश : **हंस**, सितंबर, 1990)

पुस्तक के प्रकाशन स्तर के साथ-साथ प्रकाशन संबंधी जानकारी से भी पाठक को अवगत कराना चाहिए। इसके अन्तर्गत पुस्तक के लेखक का नाम, अगर अनूदित पुस्तक हो तो अनुवादक का नाम, प्रकाशक का नाम और पता, प्रकाशन वर्ष, पुस्तक का आकार, पृष्ठ संख्या और पुस्तक के मूल्य का प्रामाणिक ब्यौरा देना चाहिए। ये ब्यौरे पादटिप्पणी में दिए जाने चाहिए। कभी-कभी ये ब्यौरे समीक्षा के आरंभ में शीर्षक के साथ ही दे दिए जाते हैं। समीक्षा लेखन में दोनों ही विधियों का चलन है।

उदाहरणस्वरूप :

1 पहली विधि

पाद टिप्पणी

1) **परिशिष्ट; लेखक—गिरिराज किशोर : प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली : प्रथम संस्करण—1984, आकार—डिमाई, पृ.सं. 308,** सजिल्द, मूल्य 50.00

2) दूसरी विधि
शीर्षक: वली मुहम्मद और करीमन की कविताएँ
लेखक अब्दुल बिस्मिल्लाह : प्रकाशक—पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, **विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली : प्रथम संस्करण** 1988, आकार—डिमाई, पृ.सं. 80, सजिल्द, मूल्य 30.00

पुस्तक के प्रकाशन संबंधी सूचना कहाँ दी जाए यह उतना महत्वपूर्ण सवाल नहीं है। यह पत्र-पत्रिका में स्थान और उसके गेटअप आदि पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ तथ्यात्मक और प्रामाणिक हों। विशेषकर, इसका महत्व शोधार्थियों के लिए अधिक है। अगर प्रकाशन संबंधी सूचना में भूल रह गयी और **शोधार्थी ने उसे अपने शोध में शामिल कर लिया, तो शोध ग्रंथ त्रुटिपूर्ण हो जाएगा। समीक्षक को इस बात का खास ख्याल रखना चाहिए।**

बोध प्रश्न

4) पुस्तक का परिचय देने के क्रम में किन-किन बातों का उल्लेख किया जाता है? किन्हीं तीन के बारे में बताएँ।

क) ....

ख) ....

ग) ....

5) विषय वस्तु का परिचय देते हुए किन-किन बातों का उल्लेख करना चाहिए? (कृपया पांच पंक्तियों में उत्तर लिखें)।

....
....
....
....
....

6) पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। (पांच पंक्तियों में उत्तर दे।)

....
....
....
....
....

अभ्यास

1) किसी पुस्तक का परिचय लिखिए जिनमें पुस्तक के लेखक, विषय और विधा का उल्लेख हो। (उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखें।)

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) किसी पठित पुस्तक (जो आपके पास उपलब्ध हो) में दी गयी प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ नोट कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....

14.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण

आपको एक अच्छा समीक्षक बनना है। इसके लिए ज़रूरी है कि आप यह जान लें कि एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए किन-किन गुणों का होना अपरिहार्य है। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए जरूरी है कि आप उसी क्षेत्र या विधा की पुस्तक की समीक्षा करें जिस क्षेत्र या विधा से परिचित हों। समीक्षक का सामान्य ज्ञान भी विस्तृत होना चाहिए। समीक्षा लिखते समय समीक्षक को अपने को व्यक्तिगत और साहित्यिक पूर्वग्रहों से मुक्त रखना चाहिए। दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता भी समीक्षक का एक प्रमुख गुण है। उसका लेखन संतुलित होना चाहिए। सामाजिक दायित्व बोध से रहित व्यक्ति अच्छा समीक्षक नहीं हो सकता। आइए, समीक्षक के इन सभी गुणों पर संक्षेप में विचार करें।

14.4.1 विशेषज्ञता

एक अच्छे और निपुण समीक्षक की पहली शर्त यह है कि वह उन्हीं पुस्तकों की समीक्षा करे जिससे वह भलीभांति परिचित हो। अगर आपकी रुचि साहित्य में है तो आप साहित्य की ही समीक्षा में प्रवृत्त हों। अगर आप का क्षेत्र इतिहास है और आप विज्ञान संबंधी पुस्तक की समीक्षा लिखेंगे तो संभव है उस विषय के तकनीकी पक्षों की जानकारी न होने के कारण आप पुस्तक के वास्तविक महत्व को न पहचान पाएँ। इस प्रकार आपकी समीक्षा त्रुटिपूर्ण हो जाएगी और आप पुस्तक के साथ न्याय नहीं कर सकेंगे। इसी प्रकार अगर आपकी रुचि खेलकूद में है और आप कला से संबंधित पुस्तक की समीक्षा करने बैठ गये, तो आप गलत रास्ता अख्तियार करेंगे। एक उदाहरण से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। सुनील गावस्कर प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी और खेल विशेषज्ञ हैं। अगर वे क्रिकेट से संबंधित किसी पुस्तक की समीक्षा करेंगे, तो एक श्रेष्ठ समीक्षक के रूप में सामने आयेंगे, लेकिन अगर उन्होंने मकबूल फिदा हुसैन की चित्रकला पर लिखी गयी पुस्तक की समीक्षा की, तो वह असफल समीक्षक ही सिद्ध होंगे। इतना ही नहीं अगर वे फुटबाल या दूसरे किसी खेल पुस्तक पर समीक्षा लिखेंगे, तो भी उनकी पकड़ मजबूत नहीं हो सकेगी। अतः किसी पुस्तक की समीक्षा करने के पूर्व अपने आप को ठोक बजा कर देख लें कि आप उस विषय की जानकारी रखते हैं या नहीं। अगर आप उस विषय से भलीभांति परिचित हैं, तो बेहिचक समीक्षा कर्म में प्रवृत्त हों, इसके अभाव में असफलता ही आपके हाथ लगेगी।

14.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान

किसी खास क्षेत्र में निपुण होने के साथ-साथ समीक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसका सामान्य ज्ञान भी विस्तृत हो। इससे समीक्षा समृद्ध होती है। मान लीजिए, आप खेलकूद के विशेषज्ञ हैं, लेकिन राजनीति की सामान्य जानकारी भी आपको नहीं है तो खेलों पर लिखी किसी पुस्तक में नस्लवाद, रंगभेद, खेलों का बहिष्कार आदि प्रसंग आने पर आप उनका महत्व नहीं समझ पायेंगे। इसी प्रकार भारत में जातिवाद पर लिखी किसी समाजशास्त्रीय पुस्तक का मूल्यांकन करने के लिए जाति प्रथा के "इतिहास" की जानकारी आवश्यक है। वास्तव में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र एक दूसरे से संबद्ध और परस्पर निर्भर होते हैं। इसलिए समीक्षक का सामान्य ज्ञान विस्तृत होना आवश्यक है।

14.4.3 पूर्वग्रहमुक्त

संतुलित और वैज्ञानिक समीक्षा लेखन के लिए समीक्षक का पूर्वग्रह मुक्त होना लाजिमी है। यह पूर्वग्रह व्यक्तिगत भी हो सकता है और विषयगत भी। व्यक्तिगत पूर्वग्रह समीक्षा कर्म में बिल्कुल त्याज्य है। व्यक्तिगत दोस्ती और दुश्मनी का समीक्षा कर्म से कोई वास्ता नहीं होता। अगर आप किसी व्यक्ति को व्यक्तिगत कारणों से पसंद न करते हों और अगर उसकी पुस्तक प्रशंसनीय है, तो जानबूझकर प्रयत्नपूर्वक उसकी निंदा न करें; दूसरी तरफ आपके घनिष्ठ मित्र की पुस्तक आपकी नज़र में श्रेष्ठ नहीं है, तो आप बेहिचक उसकी खामियों की ओर इशारा करें। व्यक्तिगत पूर्वग्रह छोड़े बिना कोई भी व्यक्ति सफल समीक्षक नहीं बन सकता।

पूर्वग्रह का दूसरा पक्ष आपके निजी मत और मान्यता से संबंधित है। समीक्षा में बलपूर्वक अपनी मान्यता को लादने की कोशिश न करें। अगर कोई पुस्तक आपकी मान्यता के विपरीत हो, तो आप तर्कसंगत ढंग से उसका विवेचन करें। अगर लेखक की बातों में दम है, तो आप उस पर ढंग से विचार करें। समीक्षा कर्म के इसी क्षेत्र में अधिकांश समीक्षक फिसल जाते हैं।

14.4.4 दृष्टि सम्पन्न

समीक्षक की दृष्टि खुली होनी चाहिए; दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षा को कमजोर बनाती है। दृष्टिगत संकीर्णता के मुख्यतः दो कारण होते हैं—अज्ञानता और किसी मतवाद विशेष के प्रति आग्रहशील होना। अज्ञानता किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को स्वभावतः संकीर्ण बना देती है। वह अपने अल्प ज्ञान को ही सब कुछ समझता है, और उसकी स्थिति कुएँ के मेढक के समान हो जाती है। दूसरी ओर अगर कोई व्यक्ति किसी खास विचारधारा में विश्वास रखता है परंतु दूसरों की विचारधारा का सम्मान नहीं करता तो उसके लेखन में वैचारिक पूर्वग्रह उत्पन्न हो जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि समीक्षक को अपना दृष्टिकोण रखते हुए भी उदार और पूर्वग्रह मुक्त होना चाहिए।

एक कुशल समीक्षक को वैचारिक संकीर्णताओं से मुक्त होना पड़ता है और दुनिया में घट रही घटनाओं पर व्यापक दृष्टि डालनी पड़ती है। उसे अपना एक तर्कसंगत दृष्टिकोण भी स्थापित करना होता है। व्यापक दृष्टिकोण को लेकर ही वह किसी पुस्तक की सम्यक् समीक्षा कर सकता है।

14.4.5 वस्तुनिष्ठ

एक अच्छे समीक्षक का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। अपने सभी दूराग्रहों और पूर्वाग्रहों को त्यागकर किसी भी पुस्तक का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना समीक्षक का प्रमुख दायित्व है। वस्तुनिष्ठ समीक्षा में समीक्षक यथासाध्य पूर्णतया तटस्थ रहकर पुस्तक का मूल्यांकन करता है और अपने व्यक्तिगत रागद्वेष से उसे प्रभावित नहीं होने देता। वह पुस्तक के सभी पक्षों को उनके सही परिप्रेक्ष्य में जाँचता परखता है। उन पर आत्मनिष्ठ ढंग से विचार करने की बजाय उनके अपने महत्व के अनुसार उनका विश्लेषण करता है वस्तुनिष्ठता के बिना समीक्षक पुस्तक को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं जाँच सकता। वस्तुनिष्ठ होकर ही वह पूर्वग्रहमुक्त और आत्मनिष्ठता से मुक्त हो सकता है।

14.4.6 संतुलित लेखन

समीक्षा में संतुलित लेखन का विशेष महत्व है। इसका संबंध भी पूर्वग्रहमुक्तता, दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता से है। किसी पुस्तक की अनावश्यक बड़ाई या निंदा से समीक्षा कर्म में बाधा उत्पन्न होती है। समीक्षक का यह दायित्व होता है कि वह निष्पक्ष रहकर पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें। अगर उसे पुस्तक का कोई पक्ष अच्छा लगता है या कोई बात उसे पसन्द नहीं आती है, तो बिना किसी हिचक के उसे तर्कपूर्ण एवं शिष्टता के साथ अपनी बात कहनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे पुस्तक के सभी पक्षों पर, जैसे विषय वस्तु भाषा, शिल्प आदि पर अपने मूल्यांकन को प्रस्तुत करना चाहिए। समीक्षक को कभी भी जानबूझकर यत्नपूर्वक किसी पुस्तक की निंदा या बड़ाई नहीं करनी चाहिए। पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन करना एक अच्छे समीक्षक का अपरिहार्य गुण है।

14.4.7 सामाजिक दायित्व बोध

समीक्षक समाज का एक अंग होता है। समाज के प्रति भी उसका दायित्व होता है। पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराना एक सामाजिक कार्य है। इसके माध्यम से वह ज्ञान के क्षेत्र में होने वाली हलचलों से लोगों को परिचित कराता है और उन्हें उनमें शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृत्ति किसी समाज के सभ्य और सुसंस्कृत होने की निशानी है। इसलिए पुस्तक समीक्षा लिखने वाले लेखक का दायित्व बढ़ जाता है। पुस्तकों का चयन करने से लेकर, समीक्षा लिखने तक उसे अपने कार्य के इस सामाजिक पहलू को ध्यान में रखना चाहिए। उसे यह विचार करना चाहिए कि समाज की उन्नति के लिए किस तरह की पुस्तकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पुस्तक की समीक्षा में कौन से पहलू

उभारे जाने चाहिए। पुस्तक के मूल्यांकन का आधार क्या होना चाहिए। बेगम अनीस किदवई की संस्मरणात्मक पुस्तक **आजादी की छाँव में** में स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद होने वाले दंगों से जुड़े संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं। इस पुस्तक के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित समीक्षा अंश में कहा गया है :

__आजादी की छाँव में__ में उस भयानक समय की विस्तृत और व्यक्तिगत डायरी है जब विभाजन के समय रोज नये-नये दल आकर दिल्ली ठहरते थे और आगे पाकिस्तान जाने की राह देखते थे—हर व्यक्ति या परिवार के पीछे आग, अगवा, लूटमार की पृष्ठभूमि थी—या थी वह दहशत जो उन्हें अपने नये शरणस्थल की ओर धकेल रही थी। उन्हीं राहत कैंपों को प्रामाणिक और झकझोर देने वाली ये डायरियाँ उस काल की विभीषिका का धड़कता दस्तावेज है।

(**हंस**, अगस्त 1990 में प्रकाशित गिरिराज किशोर की समीक्षा से उद्धृत है।)

बोध प्रश्न

7) समीक्षक को समीक्षा के लिए अपनी विशेषज्ञता का क्षेत्र ही क्यों चुनना चाहिए? (तीन पंक्तियों में उत्तर दें।)

....

....

....

8) समीक्षक के लिए आवश्यक प्रमुख गुणों का नामोल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

9) सही कथन के आगे √ का और गलत कथन के आगे × का चिह्न लगाएँ।

क) अपने पूर्वाग्रहों का त्यागकर समीक्षक कमजोर समीक्षा ही लिख सकता है। ( )

ख) समीक्षक की दृष्टि वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। ( )

ग) सामान्य ज्ञान की जानकारी समीक्षा कर्म में बाधक होती है। ( )

घ) दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षक की असफलता की कुंजी है। ( )

14.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ

पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों और एक अच्छे समीक्षक के गुणों की चर्चा पहले की जा चुकी है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ इन्हीं से जुड़ी हुई हैं। पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के क्रम में आपने अच्छी पुस्तक समीक्षा के उदाहरण भी देखे हैं। एक अच्छे समीक्षक के गुणों का प्रतिफलन अच्छी समीक्षा में होता है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं पर विचार करते समय आप यह महसूस करेंगे कि यहाँ बहुत सी बातें दुहराई गयी हैं, मसलन वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त जैसे गुणों की चर्चा एक अच्छे समीक्षक के गुण के अन्तर्गत भी हो चुकी है। इसका सहज कारण यह है कि एक अच्छे समीक्षक के प्रयत्नों का परिणाम समीक्षा में ही झलकता है। इसी कारण इन दोनों गुणों का उल्लेख समीक्षा की विशेषताओं में भी किया गया है।

14.5.1 वस्तुनिष्ठता

एक अच्छी समीक्षा की पहली शर्त है—वस्तुनिष्ठता। पुस्तक समीक्षा पढ़कर पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि इसमें पुस्तक के साथ न्याय किया गया है और समीक्षक ने

अनावश्यक रूप से भर्त्सना या स्तुति नहीं की है। पुस्तक की समीक्षा करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि आपकी समीक्षा कहीं पुस्तक का विज्ञापन तो नहीं बन रही है। केवल प्रशंसात्मक, प्रचारात्मक और परिचयात्मक लेखन समीक्षा को विज्ञापन का रूप दे देता है। समीक्षा व्यक्तिगत राग-द्वेष से मुक्त होनी चाहिए और उसमें निहित मूल्यांकन भी संतुलित होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर आप इस इकाई में दी गयी समीक्षाओं के अंशों को फिर से पढ़ सकते हैं।

14.5.2 पूर्वग्रहमुक्तता

पुस्तक समीक्षा की इस विशेषता का उल्लेख "एक अच्छे समीक्षक के गुण" के अन्तर्गत भी किया जा चुका है। पहले उसका उल्लेख समीक्षक के सन्दर्भ में किया गया, अब समीक्षा के सन्दर्भ में किया जा रहा है, हालाँकि दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। आप जानते हैं कि पुस्तक समीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता तभी आ सकती है, जब समीक्षा पूर्वग्रहमुक्त हो। जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं पूर्वग्रह समीक्षक के व्यक्तिगत और विषयिगत दोनों ही दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है। पाठक को यह नहीं महसूस होना चाहिए कि समीक्षा समीक्षक के पूर्वग्रहों से ग्रस्त है। समीक्षक को अपनी बात कहने का हक समीक्षा में है, पर उसे ऐसा तर्कसंगत और वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर करना चाहिए।

14.5.3 प्रासंगिकता

समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। एक सजग पाठक लगातार नयी पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करता रहना चाहता है। अतः नयी पुस्तकों की समीक्षा यथाशीघ्र होनी चाहिए। पुस्तकों की समीक्षा में विलंब होने से समीक्षा के अप्रासंगिक हो जाने का खतरा बना रहता है। देर से प्रकाशित समीक्षाओं में पाठक की रुचि नहीं रह जाती है, क्योंकि वह दूसरे स्रोतों से पुस्तक से परिचित हो जाता है। कभी-कभी कोई पुस्तक भी किसी काल खंड में ही प्रासंगिक रहती है। आपातकाल के समाप्त होते ही श्री शंकरदयाल सिंह ने पुस्तक '**इमरजेंसी : क्या सच क्या झूठ**' लिखी थी। उस समय वह पुस्तक प्रासंगिक थी, आज उसकी प्रासंगिकता शायद उतनी नहीं है। इस पुस्तक पर उस समय लिखी समीक्षा भी प्रासंगिक थी और अब अगर उसी पुस्तक पर समीक्षा लिखी जाए तो वह उतनी प्रासंगिक नहीं होगी। कभी-कभी कोई पुस्तक काफी दिनों बाद भी खबरों में आ जाती है, मसलन पुस्तक विशेष पर कोई पुरस्कार प्राप्त हो या उस पर कोई विवाद उठ खड़ा हो। इस स्थिति में प्रकाशन के काफी बाद में की गई समीक्षा भी प्रासंगिक हो जाती है। वस्तुतः समीक्षा के प्रासंगिक होने का सूत्र पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है।

14.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान

समीक्षा का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के मूल कथ्य से परिचित कराना होता है। इसे केंद्रीय बिंदु, मुख्य विचार आदि भी कहते हैं। जैसा कि आपको पहले भी बताया जा चुका है कि पुस्तक का सिर्फ सारांश प्रस्तुत करना समीक्षा का उद्देश्य नहीं होता। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक में वर्णित कथा सुनाना भी समीक्षा नहीं है। अच्छी समीक्षा में पुस्तक के केंद्रीय विषय को सहज रूप में उजागर कर दिया जाता है। **परिशिष्ट** की समीक्षा पढ़ते हुए आपने महसूस किया होगा कि समीक्षक ने उपन्यास में वर्णित समस्या की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। उसने उपन्यास की कथा उठाकर समीक्षा में नहीं रख दी है। यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि कोई भी पाठक सिर्फ पुस्तक का सार जानने के लिए समीक्षा नहीं पढ़ता। पाठक समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु के सम्बन्ध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। इसलिए अच्छी समीक्षा केंद्रीय बिंदु या केंद्रीय कथ्य को उभारने का कार्य करती है।

14.5.5 सोद्देश्यता

पुस्तक समीक्षा पुस्तक और पाठक के बीच पुल का काम करती है। पुस्तक समीक्षा पाठक को पुस्तक से जोड़ती है। पुस्तक समीक्षा के माध्यम से वह पुस्तक से पहला परिचय प्राप्त करता है। वह पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित होता है उसके महत्व और प्रासंगिकता को जानकर यह तय करता है कि उसे यह पुस्तक पढ़नी चाहिए या नहीं। इसलिए यह जरूरी है कि समीक्षा सोद्देश्यपूर्ण हो। समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को ध्यान रखना चाहिए

कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए कि पाठक के सामने सारी तस्वीर स्पष्ट हो जाए। पाठक के मन में यह जिज्ञासा होती है कि पुस्तक का केंद्रीय कथ्य क्या है, इसकी भाषा और शैली कैसी है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है आदि। समीक्षा पाठक की इन जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए। अन्यथा समीक्षा अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकेगी। पाठक समीक्षा से निराश होगा और उसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

14.5.6 निजता

प्रत्येक समीक्षक का दृष्टिकोण और उसकी लेखन शैली अलग-अलग होती है; इसकी झलक समीक्षा में मिलती है। समीक्षक की विश्लेषण क्षमता के कारण भी समीक्षाओं का स्वरूप अलग-अलग होता है। लेखन की यह निजता समीक्षा का खास गुण है। प्रत्येक नये समीक्षक को अपने में यह गुण विकसित करना चाहिए। लेकिन निजता के नाम पर दुरूहता, अत्यधिक विद्वता या गुरुडम पाठक पसंद नहीं करता। समीक्षा में स्पष्टता और सहजता ही आमतौर पर पसंद की जाती है। पुस्तक समीक्षा आलोचना का प्रथम चरण है उसमें बहुत गुरु गंभीर होने या अपने मत को दृढ़तापूर्वक और विस्तार से प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए आलोचना या निबंध में ज्यादा अवकाश रहता है।

14.5.7 भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ

समीक्षा की भाषा सहज, सरल और सम्प्रेष्य होनी चाहिए। समीक्षा का उद्देश्य होता है, पाठकों को पुस्तक की जानकारी देना। इसलिए समीक्षा में भाषा का दुरूहपन क्षम्य नहीं है। कठिन और दुरूह भाषा में पाठक उलझकर रह जाता है और पुस्तक की सही जानकारी हासिल करने में उसे कठिनाई महसूस होती है। समीक्षा की भाषा के साथ-साथ उसकी शैली भी सुपाठ्य और आकृष्ट करने वाली होनी चाहिए। समीक्षा का लेखन और विश्लेषण इस ढंग का होना चाहिए कि पाठक शुरू से लेकर अंत तक समीक्षा पढ़ने को बाध्य हो जाए और पुस्तक की पूरी तस्वीर उसके सामने स्पष्ट हो जाए। लेखन शैली की यह परिपक्वता समीक्षक के लिए विस्तृत ज्ञान और प्रस्तुति की कुशल क्षमता पर निर्भर होती है। समीक्षक तर्कसंगत ढंग से, चरण दर चरण पुस्तक का विश्लेषण कर अपनी शैली को आकर्षक और सम्प्रेष्य बना सकता है। समीक्षा जितनी अधिक सहज और सम्प्रेष्य होगी, उसकी महत्ता उतनी ज्यादा होगी। भाषा और शैली की दुरूहता में जकड़ी समीक्षा कभी भी श्रेष्ठ समीक्षा की कोटि में नहीं आ सकती।

समीक्षा की भाषा-शैली का निम्नलिखित उदाहरण देखिए:
सत्येन के इन दोनों संग्रहों में दो तरह की कहानियाँ हैं—लंबी और छोटी। मुझे चार लंबी और चार छोटी कहानियाँ अच्छी लगी। लेकिन मैं चार लंबी और दो छोटी कहानियों का जिक्र करना चाहूँगा, इसलिए कि मैंने इन्हें एकाधिक बार पढ़ा है और मैं समझता हूं कि जो कहानी पाठक को याद रहती है या हांट करती है अथवा पुनः पढ़ने के लिए उकसाती है और दोबारा पढ़ने पर नया रस देती है, वही मूल्यवान है। पचास साठ वर्षों से निरंतर कहानियाँ पढ़ते और उनमें रस पाते हुए बेगिनती कहानियों के नाम या कथानक मेरे दिमाग में सुरक्षित हैं। लेकिन ऐसी कहानियां बहुत ही कम हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने की इच्छा हुई हो। सत्येन के यहां चंद ऐसी कहानियां हैं यह बात उसके कथाकार के सामर्थ्य की द्योतक है।
(सत्येन कुमार के दो कहानी संग्रहों पर लिखी उपेंद्रनाथ अश्क की समीक्षा का अंश, **हंस—जनवरी, 1989 से उद्धृत**)

बोध प्रश्न

10) एक अच्छी समीक्षा को वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त क्यों होना चाहिए? (सही उत्तर के सामने √ का चिह्न लगाएँ।

क) वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रहमुक्त हुए बिना भी अच्छी समीक्षा लिखी जा सकती है। ( )

ख) पुस्तक की संतुलित विवेचना हो, इसलिए समीक्षा का वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रह रहित होना जरूरी है। ( )

ग) वस्तुनिष्ठ और पूर्वग्रह रहित समीक्षा कमजोर समीक्षा मानी जाती है। ( )
घ) उपर्युक्त कोई उत्तर सही नहीं है। ( )

11) समीक्षा की प्रासंगिकता से आप क्या समझते हैं? (दो पंक्तियों में उत्तर दें)

....

....

12) केंद्रीय बिंदु की पहचान न कर पाने से समीक्षा में क्या खतरा रहता है? (सही उत्तर के सामने (√) का और गलत उत्तर के सामने (×) का चिह्न लगाएँ)।

क) समीक्षा पुस्तक का सारांश बन जाती है। ( )
ख) पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन हो जाता है। ( )
ग) समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता है। ( )
घ) केंद्रीय बिंदु को पहचाने या न पहचानने से समीक्षा में कोई फर्क नहीं पड़ता है। ( )

13) समीक्षा की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)

....

....

....

....

....

अभ्यास

3) किसी पठित पुस्तक पर प्रकाशित समीक्षा को पढ़कर इकाई में बताई विशेषता के आधार पर उसका मूल्यांकन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4) उपर्युक्त पुस्तक की समीक्षा स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

14.6 सारांश

- इस इकाई में आपने समीक्षा के विभिन्न पक्षों की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त की। अब आप समीक्षा का अर्थ, समीक्षा और आलोचना में अंतर, समीक्षा की विशेषताएँ और एक अच्छे समीक्षक के गुण से अवगत हो गये हैं।
- पुस्तक समीक्षा में पुस्तक का परिचय और मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना स्वभाव से अभिन्न हैं, पर परिभाषा की दृष्टि से उनमें अंतर है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना का मूल अंतर यह है कि समीक्षा में जहाँ पुस्तक केंद्र में होती है, वहाँ आलोचना में पुस्तक संदर्भ के रूप में शामिल की जाती है।
- एक अच्छा समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में ही हाथ डालता है। उसका सामान्य ज्ञान विस्तृत होता है और वह दृष्टि सम्पन्न होता है। उसका लेखन संतुलित होता है, क्योंकि वह पूर्वग्रहग्रस्त नहीं होता और उसकी दृष्टि वस्तुनिष्ठ होती है।
- अच्छी समीक्षा के प्रमुख गुण हैं—वस्तुनिष्ठता, पूर्वग्रह रहित होना, प्रासंगिकता, केंद्रीय बिंदु को पहचानना और सरल भाषा तथा तार्किक शैली का प्रयोग। एक अच्छी समीक्षा को पुस्तक का विज्ञापन होने से बचना चाहिए।

14.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है। (देखें 14.2)

2) क) × ख) √ ग) × घ) √

3) पुस्तक समीक्षा पाठक समुदाय से पुस्तक का परिचय कराती है। साथ ही यह पुस्तक का संक्षिप्त परंतु समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करती है। (देखें 14.2.2)

4) क) पुस्तक का सामान्य परिचय
   ख) लेखक का संक्षिप्त परिचय
   ग) पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत

5) द्रष्टव्य, उपभाग 14.3.2 का प्रथम पैरा।

6) मूल्यांकन संतुलित हो, पूर्वग्रहमुक्त हो, तर्कसंगत हो आदि। (देखें 14.3.3)

7) समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के आधार पर पुस्तक का सही मूल्यांकन कर सकता है। (देखें 14.4.1)

8) समीक्षक के गुण हैं–विशेषज्ञता, विस्तृत सामान्य ज्ञान, पूर्वग्रहमुक्त, दृष्टि सम्पन्न, वस्तुनिष्ठ आदि। (देखें 14.4.1)

9) क) × ख) √ ग) × घ) √

10) ख)

11) जो समीक्षा सही समय पर प्रकाशित होती है, उसी समीक्षा को प्रासंगिक माना जाता है। पुस्तक पुरानी पड़ने पर या उसका महत्व समाप्त होने पर की गयी समीक्षा अप्रासंगिक हो जाती है क्योंकि पाठक की उसमें रुचि नहीं रहती है। (देखें 14.5.3)

12) क) √ ख) × ग) √ घ) ×

13) भाषा सरल, सहज और सम्प्रेष्य। भाषा दुरूह नहीं। तर्कसंगत और विश्लेषणात्मक शैली। (देखें 14.5.7)

अभ्यास

अभ्यासों के उत्तर इकाई पढ़कर स्वयं लिखें और परामर्शक को दिखाएं।

इकाई 15 पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य
15.1 प्रस्तावना
15.2 पुस्तक समीक्षा के प्रकार
  15.2.1 परिचयात्मक समीक्षा
  15.2.2 विश्लेषणात्मक समीक्षा
  15.2.3 मूल्यांकनपरक समीक्षा
15.3 लेखन की तैयारी
  15.3.1 पुस्तक का अध्ययन
  15.3.2 तथ्यों की जाँच
  15.3.3 अन्य पुस्तकों का अध्ययन
  15.3.4 पुस्तक की प्रासंगिकता
15.4 पुस्तक समीक्षा का लेखन
  15.4.1 पुस्तक एवं लेखक का परिचय
  15.4.2 केंद्रीय भाव को उजागर करना
  15.4.3 विषय वस्तु का मूल्यांकन
  15.4.4 भाषा-शैली का मूल्यांकन
  15.4.5 प्रकाशन स्तर एवं मूल्य
15.5 पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति
  15.5.1 आरंभ
  15.5.2 मध्य भाग या मुख्य कलेवर
  15.5.3 अंतिम भाग
  15.5.4 भाषा-शैली
15.6 सारांश
15.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई "पुस्तक समीक्षा : लेखन एवं प्रस्तुति" इकाई 14 (समीक्षा की विशेषताएँ एवं समीक्षक) की अगली कड़ी है और दोनों इकाइयाँ एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पुस्तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- समीक्षा लेखन से पूर्व की जाने वाली तैयारियों के बारे में बता सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा के लेखन में प्रवृत्त हो सकेंगे; और
- पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति का ढंग बता सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई (इकाई 14) में आपने समीक्षा और समीक्षक की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की। अब समीक्षा का अर्थ आपके सामने स्पष्ट है और आप पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों (पुस्तक का परिचय, विषय वस्तु, मूल्यांकन, प्रकाशन आदि) की मूलभूत जानकारी हासिल कर चुके हैं। एक अच्छे समीक्षक और अच्छी समीक्षा का मानदंड भी आपके सामने स्पष्ट है।

अब इस इकाई में हम लेखन की ओर बढ़ेंगे। पर, लेखन शुरू करने से पहले पुस्तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों की जानकारी आपको दी जाएगी ताकि आप यह तय कर सकें कि किस प्रकार की समीक्षा लिखनी है। इसके बाद हम इस इकाई में यह बताएंगे कि समीक्षा लेखन से पहले किस प्रकार की तैयारी करनी पड़ती है। समीक्षा लिखने से पहले समीक्षक को समीक्ष्य पुस्तक गंभीरता से पढ़नी होती है, तथ्यों की जाँच करनी पड़ती है, पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना होता है आदि-आदि। इन सब बातों का उल्लेख इस इकाई के भाग 15.3 में हुआ है। इसके बाद समीक्षक समीक्षा लेखन की दिशा में प्रवृत्त होता है। अंत में हमने यह भी बताया है कि पुस्तक समीक्षा को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है।

इस इकाई में हम आपको समीक्षा लिखना सिखा रहे हैं। इसलिए हमने इस इकाई में ज्यादा से ज्यादा उदाहरण दिए हैं और आपके लिए जगह-जगह अभ्यास प्रश्न दिए गये हैं। आप अभ्यास कार्य मेहनत और लगन से करें। इससे आपके लेखन में सुधार आएगा। आप कोई पुस्तक पढ़ने बैठें तो यह कोशिश करें कि आपके भीतर बैठा हुआ समीक्षक सक्रिय रहे। आप जितना अधिक लिखने का अभ्यास करेंगे आपके समीक्षा-लेखन में उतना ही सुधार होगा। आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली पुस्तक समीक्षाओं को ज्यादा से ज्यादा पढ़ें, इससे आपकी दृष्टि व्यापक होगी और आप समीक्षा लेखन में अधिक समर्थ हो सकेंगे।

15.2 पुस्तक समीक्षा के प्रकार

इकाई 14 मेंआप पढ़ चुके हैं कि पुस्तक समीक्षा में पुस्तक का सामान्य परिचय, विषय वस्तु, उसकी भाषा-शैली, उसके महत्व और प्रकाशन स्तर के बारे में बताया जाता है। यह भी आप जान चुके हैं कि पुस्तक समीक्षा का अर्थ पुस्तक का परिचय या उसकी विषय वस्तु का सार मात्र नहीं है बल्कि समीक्षक की आलोचनात्मक दृष्टि का भी महत्व होता है और वह पूरी पुस्तक पर अपना मूल्यांकन भी प्रस्तुत करता है। समीक्षा के उपर्युक्त सभी पक्ष समीक्षा में संतुलित रूप में मौजूद हों यह आवश्यक नहीं है। किसी समीक्षा में एक पक्ष पर अधिक जोर हो सकता है, तो दूसरे में दूसरे पर। इनके आधार पर हम पुस्तक समीक्षा को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। 1) परिचयात्मक समीक्षा, 2) विश्लेषणात्मक **समीक्षा, 3) मूल्यांकनपरक समीक्षा। परिचयात्मक समीक्षा, जहाँ केवल पुस्तक के सामान्य परिचय तक सीमित होनी है, वहीं विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में वर्णित विषय का विश्लेषण भी होता है। मूल्यांकनपरक समीक्षा में आलोचनात्मक-तुलनात्मक मूल्यांकन** पर विशेष बल दिया जाता है और साथ ही साथ उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तक या पुस्तकों से तुलना भी की जाती है। आइए, इन तीनों प्रकार की समीक्षा पद्धति पर विचार करें।

15.2.1 परिचयात्मक समीक्षा

परिचयात्मक समीक्षा पद्धति समीक्षा लिखने की सरल और लोकप्रिय पद्धति है। इस प्रकार की समीक्षा में समीक्षक पुस्तक की विषय वस्तु और उसके महत्व से पाठक को परिचित कराता है तथा पुस्तक की आलोचना पर वह कम जोर देता है। इसी दृष्टि से इस प्रकार की समीक्षा का महत्व भी है।

समीक्षा का स्वरूप बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस प्रकार के पाठक वर्ग के लिए लिख रहे हैं। परिचयात्मक समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तकों की "सूचना" प्राप्त करने में विशेष दिलचस्पी रखता है ताकि वह अपनी मनपसंद पुस्तक का चुनाव कर सके। व्यवसायिक पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश पुस्तक-समीक्षाएँ इसी प्रकार के पाठकों को संबोधित होती हैं।

अधिक से अधिक पाठकों तक पुस्तक को पहुँचाना इस प्रकार की पुस्तक समीक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है। वस्तुतः पुस्तक समीक्षा की यह अनिवार्य शर्त है कि वह पाठक को पुस्तक से परिचित कराए। "पुस्तक-परिचय" पुस्तक समीक्षा का अनिवार्य अंग है, जिसे परिचयात्मक समीक्षा में विशेष प्रमुखता दी जाती है।

परिचयात्मक समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु से पाठक को अवगत कराया जाता है। इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, पुस्तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ हम **भाषा** में प्रकाशित डॉ. भक्तराम शर्मा की पुस्तक **नेहरू अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य** पर श्री अशोक जैन की समीक्षा का एक अंश उदाहरणस्वरूप पेश कर रहे हैं:

स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने भारत में ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जितनी लोकप्रियता अर्जित की, वह दुर्लभ है। निःसंदेह वे बीसवीं शताब्दी के महानतम व्यक्तियों में से थे। विश्व के चोटी के नेताओं ने उन्हें संपूर्ण मानव जाति का नेता स्वीकार किया है। विश्व नागरिक के रूप में उनकी ख्याति लिंकन, चर्चिल तथा माओ के समान हुई।

विलक्षण बुद्धि के धनी जवाहरलाल नेहरू के चमत्कारी व्यक्तित्व ने समूची मानव जाति पर अपने आदर्शों, विचारों एवं कार्यों की ऐसी अमिट छाप छोड़ी है कि भारतीय एवं विदेशी विद्वानों, नेताओं, चिंतकों ने उनके प्रति अपार श्रद्धामय विचार व्यक्त किए हैं। डॉ. भक्त राम शर्मा की पुस्तक "नेहरू: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य" इसी श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रस्तुत पुस्तक में नेहरू को विश्व मानव, विश्व शांति के अग्रदूत, भारतीय समाजवाद के जनक, लोकतांत्रिक परंपराओं के निर्माता, महान स्वतंत्रता सेनानी, विश्वव्यापी शाश्वत साहित्य के रचयिता, भारत-सोवियत मित्रता के प्रधान प्रवर्तक के रूप में पहचाना और उनकी उपलब्धियों को रेखांकित किया गया है। पुस्तक में अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नेहरू की सफल भूमिका का मूल्यांकन किया गया है और अंत में उनके व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

(**भाषा**, वर्ष 29 अंक 1)

इसी प्रकार की परिचयात्मक समीक्षा के कुछ और उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं:

चाकू: *प्रस्तुत एकांकी संग्रह में बारह रचनाएँ संग्रहीत हैं। ये सभी एकांकी कमोबेश फैंटेसी हैं। वास्तविकता की भूमि पर ये रचनाएँ अवास्तव हैं, क्योंकि इनके चरित्र और प्रस्तुति का अंदाज बड़ा ही नाटकीय है, कहीं-कहीं तो विशुद्ध फिल्मी ढंग अपनाया गया है। इतना होते हुए भी ये एकांकी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनकी रचना में सधा हुआ हाथ है और कलागत ऊँचाई के लिए ये रचनाएँ किसी की मोहताज नहीं है।*
लेखक: बलवंत गार्गी, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, मूल्य: पैंसठ रुपये।

(**कादम्बिनी**, जुलाई, 1990 से उद्धृत)

उपर्युक्त उदाहरण परिचयात्मक समीक्षा के स्वरूप को उद्घाटित करते हैं। इन समीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य है—पाठक को पुस्तक की संक्षिप्त जानकारी देना। इन सभी समीक्षाओं में "पुस्तक-परिचय" को महत्व दिया गया है, विश्लेषण और मूल्यांकन को नहीं। इन समीक्षाओं को पढ़ते वक्त आपने महसूस किया होगा कि ये समीक्षाएँ पाठक को पुस्तक के बारे में जानकारी देकर उन्हें पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

परिचयात्मक समीक्षा भी दो प्रकार की होती है। इसे विस्तृत परिचयात्मक समीक्षा और संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा के खानों में विभक्त किया जा सकता है। "कादम्बिनी" से उद्धृत समीक्षा संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा का उदाहरण है। इस प्रकार की समीक्षाओं में पुस्तक के कलेवर और विषय वस्तु का संकेत मात्र किया जाता है। इनमें विषय वस्तु का विस्तार से उल्लेख नहीं होता है। भाषा से उद्धृत समीक्षा विस्तृत परिचयात्मक समीक्षा का उदाहरण है। इस तरह की समीक्षा केवल पुस्तक के बारे में संकेत करके ही नहीं रह जाती है, बल्कि पुस्तक की विषय वस्तु की जानकारी विस्तार के साथ प्रस्तुत करती हैं। उद्धृत समीक्षा पुस्तक समीक्षा का आरंभ मात्र है। इसके बाद समीक्षक ने विस्तार के साथ पुस्तक के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है। आइए, **नेहरू: अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य** की समीक्षा के आगे के अंश पर नज़र डालें।

पुस्तक में लेखक ने नेहरू जी के आदर्शों एवं विचारों को उनके ही भाषण के अंशों के माध्यम से रेखांकित किया है जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक प्रस्तुत करते हैं।

उन्होंने "समाजवाद" पर अपने सुचिंतित विचार इस प्रकार व्यक्त किए थे–"मैं उस प्रकार के कट्टर राज्य-समाजवाद का समर्थन नहीं करता, जिसमें सरकार सर्व-शक्तिमान होती है और प्रायः सब कुछ उसकी इच्छा पर निर्भर करता है। मैं आर्थिक शक्ति का विकेंद्रीकरण चाहता हूं–निःसंदेह, हम लोहे, इस्पात और इसी प्रकार के बड़े उद्योगों का विकेंद्रीकरण नहीं कर सकते लेकिन अन्य छोटे-छोटे कारखाने रखे जा सकते हैं। जहाँ तक संभव हो, उन्हें सहकारिता के आधार पर रखा जाए और उन पर सरकार का नियंत्रण रहे। इस विषय में मैं रूढ़िवादी बिलकुल नहीं हूँ। हमें व्यावहारिक अनुभव से सीखना और अपने तरीके से "आगे बढ़ना" है।" (पृ. 52-53)

ऊपर के उदाहरण को आप ध्यान से पढ़ें। आप देख रहे हैं कि किस प्रकार पुस्तक में वर्णित नेहरू के विचारों को समीक्षक विस्तार के साथ पाठक के सामने रख रहा है। इसके लिए वह पुस्तक में संकलित नेहरू के विचारों को भी अपनी परिचयात्मक समीक्षा में उद्धृत कर रहा है। नेहरू के व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं पर भी पुस्तक पर विचार किया गया है, इसकी सूचना समीक्षक इस प्रकार देता है :

सन् 1951 ई. में राष्ट्र संघ में बोलते हुए उन्होंने कहा था–"मैं केवल प्रधानमंत्री नहीं हूँ, उससे कुछ ज्यादा हूँ। मैं आदमी हूँ, इन्सान हूँ। अक्सर मैं थोड़ी-सी रोशनी पाने के लिए मन ही मन संघर्ष किया करता हूँ। मेरी बेचैनी का सबब यह है कि मैं समझना चाहता हूँ कि इन्सान को, दरअसल होना कैसा चाहिए। मैं उस सत्य का रास्ता पाना चाहता हूँ।" (पृष्ठ 27)

पुस्तक में वर्णित अन्य पक्षों को विस्तार से पाठक के सामने रखता हुआ, समीक्षक अपना मत भी सामने रखता है :

"एकपक्षीय होते हुए भी यह पुस्तक नेहरू के बहुआयामी व्यक्तित्व की अंतर्राष्ट्रीय कार्य-शैली, सोच पर जो प्रकाश डालती है और विभिन्न संदर्भों को जितनी गहराई से छूती है, वह न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि पुस्तक को पठनीय भी बनाती है।"

पुस्तक के कलेवर, विषय वस्तु और स्वरूप की जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ पुस्तक समीक्षा में पुस्तक की प्रकाशन संबंधी सूचना भी अवश्य देनी चाहिए। इससे पाठक को पुस्तक प्राप्त करने में आसानी होगी। इस पक्ष पर हम आगे अलग से विचार करेंगे।

इस प्रकार परिचयात्मक समीक्षा में निम्नलिखित बातों का समावेश होता है :

1) पुस्तक का परिचय, यह संक्षेप में भी हो सकता है और विस्तार से भी। यह परिचयात्मक समीक्षा का केंद्रीय बिंदु है।

2) पुस्तक के महत्व का प्रतिपादन (इसमें पुस्तक की प्रासंगिकता का भी उल्लेख होना चाहिए)।

3) पुस्तक का संक्षिप्त मूल्यांकन (इसके अंतर्गत विषय, भाषा, शैली एवं प्रकाशन स्तर का मूल्यांकन संक्षेप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए)।

4) पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएँ।

15.2.2 विश्लेषणात्मक समीक्षा

विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में वर्णित विषय, प्रस्तुति और भाषा-शैली का विश्लेषण किया जाता है। परिचयात्मक समीक्षा में जहाँ समीक्षक पुस्तक को पाठक के सामने रख भर देता है, वहीं विश्लेषणात्मक समीक्षा में वह पुस्तक के विभिन्न पहलुओं की छानबीन करता है। परिचयात्मक समीक्षा यदि पुस्तक का फोटो चित्र है, तो विश्लेषणात्मक समीक्षा उसका एक्सरे चित्र। वह पुस्तक के विषय, प्रस्तुति और भाषा की छानबीन एक सधे हुए वैज्ञानिक की तरह करता है और अपने इस विश्लेषण को पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देता है।

इस प्रकार की समीक्षा का उद्देश्य पाठकों को पुस्तक की अधिक विस्तृत जानकारी देना है तथा उसकी मूल्यवत्ता से भी पाठकों को परिचित कराना होता है। इस समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तक-परिचय से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह पुस्तक में लेखक के दृष्टिकोण, विषय

पर लेखक की पकड़, भाषा और प्रस्तुति के ढंग पर विस्तार से जानना चाहता है। इस प्रकार की समीक्षाएँ उन पाठकों के लिए होती हैं जो पुस्तक के एकेडमिक स्तर से भी परिचित होना चाहते हैं तथा समीक्षक के विचारों को भी जानना चाहते हैं। इस तरह की समीक्षा पाठकों द्वारा पुस्तक के पढ़े जाने के बाद भी मूल्यवान होती हैं, बल्कि कई बार ये समीक्षाएँ पठित पुस्तक को नयी दृष्टि से जानने-समझने का अवसर भी प्रदान करती हैं।

विश्लेषणात्मक समीक्षा में "परिचय" का अंश बिलकुल नहीं होता, ऐसी बात नहीं है। पर इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक का संक्षिप्त सा परिचय देता हुआ समीक्षक विश्लेषण की ओर अग्रसर हो जाता है। इस तरह की विश्लेषणात्मक समीक्षा का एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है। अब्दुल विस्मिल्लाह के उपन्यास **झीनी-झीनी बीनी चदरिया** पर परमानंद श्रीवास्तव द्वारा लिखित समीक्षा का एक अंश विश्लेषणात्मक समीक्षा को समझने में सहायक होगा:

परजीवी और मेहनतकश का संघर्ष **झीनी-झीनी बीनी चदरिया** की मुख्य कथा-भूमि हैं। *इस संघर्ष में जिंदगी की दूसरी सच्चाइयाँ गुम नहीं हो गयी हैं। यहाँ वे प्रेम प्रसंग भी हैं जो जिंदगी से लगाव और खुली जिंदगी की इच्छा या विकलता के हिस्से में आते हैं। मतीन के साथ नजबुनिया की कहानी भी अंत तक चलती है। लतीफ और कमरून, शरफुद्दीन और रेहनवाँ के संबंधों में जिंदगी से कभी महज तात्कालिक और कभी गहरा लगाव नज़र आता है। गिरस्तों के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए शुरू से ही मतीन "सोसायटी" या संगठन को हथियार बनाना चाहता है पर अपने ही वर्ग से आये हनीफ़ जैसों के छल के कारण और गिरस्तों के साथ उनके हित-समीकरण के चलते "सोसायटी" कल्पना बनकर ही रह जाती है। मतीन और रऊफ चाचा जैसे लोग टूटते जाते हैं। फिर भी वे संघर्ष का रास्ता छोड़ते नहीं और जिंदगी के यथार्थ से उलझते रहते हैं, इसलिए भविष्य के लिए एक उम्मीद बनी रहती है। प्रकृति और मनुष्य के गहरे अंतर्संबंध के व्यंजक चित्र से उपन्यास शुरू ही नहीं होता, खत्म भी होता है।"*

(**आलोचना**-84, जनवरी-मार्च 1988, पृ. 88)

विश्लेषणात्मक समीक्षा में समीक्षक विषय वस्तु का विश्लेषण करते हुए उसकी विशेषताओं और सीमाओं को उजागर करता जाता है। अगर पुस्तक ज्ञान-विज्ञान के ऐसे क्षेत्र से संबंधित है जहाँ तथ्यों और आँकड़ों का महत्व होता है, वहाँ समीक्षक अपने स्रोतों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग पुस्तक के विश्लेषण में करता है। पुस्तक का विश्लेषण करने के लिए उस क्षेत्र में स्वयं समीक्षक का पर्याप्त दखल होना जरूरी है। लेकिन यहाँ भी यह आवश्यक है कि वह अपने पूर्वग्रह और पसंद-नापसंद से मुक्त हो। साथ ही यह भी जरूरी है कि उसके पास गहरी अंतर्दृष्टि भी होनी चाहिए ताकि पुस्तक में कही गयी बातों के मर्म को वह समझ सके। विश्लेषणात्मक समीक्षा में समीक्षक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि लेखक ने पुस्तक के कथ्य को किस रूप में प्रस्तुत किया है। क्या पाठकों तक लेखक का मंतव्य पहुँच पाएगा? भाषा और शैली के स्तर पर किसी तरह की कठिनाई तो नहीं होगी? इनको ध्यान में रखकर अगर वह पुस्तक के विश्लेषण की ओर प्रवृत्त होगा तो वह विश्लेषण के साथ-साथ पुस्तक का सम्यक् मूल्यांकन भी प्रस्तुत कर सकेगा।

15.2.3 मूल्यांकनपरक समीक्षा

मूल्यांकनपरक समीक्षा में समीक्षक एक कदम आगे बढ़ता है और पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस मूल्यांकन के क्रम में वह उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तकों से तुलना भी करता है। इस प्रकार की समीक्षा में भी पुस्तक-परिचय का अंश होता है, पर इसका महत्व यहाँ गौण होता है। इसमें पुस्तक का विश्लेषण भी होता है, क्योंकि विश्लेषण के अभाव में किसी कृति का मूल्यांकन संभव नहीं है। पर इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक का मूल्यांकन हावी रहता है। इसके लिए समीक्षक उस पुस्तक में प्रासंगिकता, रचनाधर्मिता और मूल्यवत्ता की खोज करता है। पुस्तक में लेखक का उद्देश्य क्या है? क्या अपने उद्देश्य में वह सफल हुआ है? वस्तुतः इस प्रकार की समीक्षा में समीक्षक की दृष्टि व्यापक हो जाती है और इसी व्यापकता के कारण समीक्षा आलोचना क्षेत्र की सीमा को छूने लगती है। इस प्रकार की समीक्षा में आलोचना धर्म प्रमुख हो जाता है। पर पुस्तक समीक्षा लिखते समय समीक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि

उसकी समीक्षा पुस्तक केंद्रित रहे। मूल्यांकनपरक समीक्षा के कुछ उदाहरण हम आपके सामने रख रहे हैं, जिससे ऊपर कही गयी बातें और स्पष्ट हो जाएँगी। निदा फ़जली की कविता पुस्तक **मोरनाच** पर समीक्षा लिखते हुए विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं:

निदा फ़ाज़ली धीमी आवाज़ में बोलते हैं। वे शोर नहीं मचाते। कवि रूप में यह उनके आत्म-विश्वास का द्योतक है। इस तरह धीमे बोलने वाले एक ही समकालीन उर्दू कवि को जानता हूं—अख़्तर-उल-ईमान को। किसी और को नहीं। न हिन्दी में न उर्दू में। अख़्तर-उल-ईमान की ही तरह निदा फ़ाज़ली भी बच-बचाकर शायरी करते हैं। बच-बचाकर यानी जो पहले कह दिया गया है या जिसे और शायर कह रहे हैं उसे न कहकर, उससे बचकर कुछ अपना कहने की कोशिश। धीमी बात का असर ज़्यादा होता है।

(**समकालीन भारतीय साहित्य**, वर्ष 10 अंक 39)

उपर्युक्त उद्धृत पंक्तियों में निदा फ़ाज़ली की काव्य शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। आगे इसी काव्य संग्रह की भाषा का मूल्यांकन करते हुए त्रिपाठी जी लिखते हैं:

उनकी भाषा को पढ़कर फ़िराक़ का कथन याद आता है कि हिन्दी वाले नहीं समझते कि प्रेमचंद की भाषा कितनी डि हिन्दी आइज्ड (अहिन्दी कृत) है और उर्दू वाले नहीं समझते कि उनकी भाषा कितनी डि उर्दू आइज्ड (अउर्दूकृत) है। निदा फ़ाजली वस्तुतः हिन्दी और उर्दू की कृत्रिम एवं संकीर्णतावादी सीमाएँ तोड़ते हैं। भाषा ही नहीं वे काव्यरूपों, शब्द-बन्धों और छन्दों की भी सीमाएँ तोड़ते हैं। उनके गीतों की लय हिन्दी कवियों की लय के समान है। ग़ज़लों में बेराहरवी नहीं लेकिन उनमें फ़ारसी ध्वनि-प्रवाह की अनुकूलता में प्रवाहित घुलावट नहीं इसी से उनकी पंक्तियाँ ग़ालिब, शोफ़्ता, इक़बाल की अपेक्षा वली और अमीर खुसरों की पंक्तियों से मिलती हैं जिनमें प्रवाहरुद्धता है। उनकी खड़ी बोली का खड़ापन बरकरार है। यह खड़ापन या खरखराहट रूढ़ि-विरोध का लय-संकेत है।

(**समकालीन भारतीय साहित्य**, वर्ष 10 अंक 39)

इसी प्रकार शमशेर के काव्य संग्रह **काल, तुझसे होड़ है मेरी** पर व्यापक दृष्टि डालते हुए विष्णु चंद्र शर्मा लिखते हैं:

निराला के बाद जो भी वास्तविक प्रेमी कवि रहे हैं, उनकी कविता में नारी का सुडौल बदन एक आवशार (जल-प्रपात) रहा है। शमशेर "प्रेयसी" कविता में उसे कोमल कांसे में ढला/गोलाइयों का आईना" कहते हैं। इस प्रेम-काव्य में अज्ञेय, नरेन्द्र शर्मा, शमशेर, फ़ैज और पाब्लो नेरूदा एक पंक्ति के आकर्षक और मोहक कवि हैं। शमशेर ने इसी प्रेम की स्वाभाविक चेतना को "व्यक्तित्व का अदृश्य सागर" कहा है। शमशेर इसी चेतना को कविता भी कहते हैं। कविता शमशेर के लिए जीवन का सुख है। व्यक्तित्व की समस्त कल्पना के पीछे का सत्य है। सही मानों में शमशेर इसी सुरुचिपूर्ण सरल, सहवास के सौंदर्य के बड़े आत्मीय कवि हैं।

(**समकालीन भारतीय साहित्य**, वर्ष 10 अंक 40)

मूल्यांकनपरक पुस्तक समीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि समीक्षक पुस्तक पर न्यायाधीश की तरह निर्णय दें। इसके विपरीत वह पुस्तक का तर्कपूर्ण विवेचन करता हुआ उसके महत्व और योगदान के अनुसार अपना मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। इस तरह की समीक्षा लिखने वाले समीक्षक को अपने मूल्यांकन में निष्पक्ष, वस्तुपरक और सदाशय होना चाहिए। उसे यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि पुस्तक पर लिखी समीक्षा को पढ़ते हुए पाठक सिर्फ पुस्तक के बारे में ही निर्णय नहीं लेता, पुस्तक समीक्षा के स्तर के अनुसार वह स्वयं समीक्षक के बारे में भी एक धारणा बनाता है। उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अंतिम निर्णायक तो पाठक ही है। वह आपके निर्णय से नहीं बल्कि आपकी विश्लेषण क्षमता और लेखकीय ईमानदारी से प्रभावित होगा। वह आपसे असहमत होते हुए भी आपकी समीक्षा को पसंद कर सकता है अगर आपने समीक्षा कर्म को गंभीरता से लिया हो और आपकी प्रतिभा, मेहनत और लगन समीक्षा में व्यक्त हो रही हो।

बोध प्रश्न

1) परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में क्या अंतर है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।)

....

....

....

....

....

2) सही कथन के आगे √ का और गलत कथन के आगे × का निशान लगाएं।

क) परिचयात्मक समीक्षा में विश्लेषण की प्रधानता होती है। ( )

ख) विश्लेषणात्मक समीक्षा में मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जाता है। ( )

ग) परिचयात्मक समीक्षा का कोई महत्व नहीं है। ( )

घ) मूल्यांकनपरक समीक्षा में आलोचनात्मक मूल्यांकन हावी होता है। ( )

अभ्यास

1) आप प्रेमचंद का उपन्यास **निर्मला** पढ़ें और इसकी परिचयात्मक समीक्षा लगभग दस पंक्तियों में लिखें। अगर आपको यह पुस्तक न मिले तो किसी उपलब्ध पुस्तक की समीक्षा लिख सकते हैं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

15.3 लेखन की तैयारी

अब तक आपने समीक्षा के सैद्धांतिक पक्ष का अध्ययन किया। इकाई 14 में पुस्तक समीक्षा के अभिप्राय, उसके विभिन्न पक्ष, अच्छे समीक्षक के गुण, पुस्तक समीक्षा की विशेषता संबंधी जानकारी प्राप्त की। प्रस्तुत इकाई में हमने अभी तक समीक्षा के विभिन्न प्रकारों की चर्चा की है। अब हम समीक्षा के व्यावहारिक पक्ष पर विचार करने जा रहे हैं। इस क्रम में हम पहले इस बात पर विचार करेंगे कि पुस्तक समीक्षा लिखने के पहले लेखक को क्या-क्या तैयारी करनी पड़ती है? पुस्तक समीक्षा लिखने के लिए सबसे पहले समीक्षक को गंभीरतापूर्वक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए, फिर उसे पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जांच करनी चाहिए। जिस पुस्तक की समीक्षा वह लिख रहा होता है, उससे संबंधित अन्य पुस्तकों का भी अध्ययन करने से वह तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कर सकता है। अन्त में उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आज के संदर्भ में पुस्तक कितनी प्रासंगिक है। आइए, इन मुद्दों पर अलग-अलग विचार करें।

15.3.1 पुस्तक का अध्ययन

किसी पुस्तक की समीक्षा लिखने के पहले समीक्षक को पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन करना पड़ता है। यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि बिना पुस्तक को पढ़े समीक्षा लिखना

संभव ही नहीं है। कभी-कभी समीक्षक पुस्तक को उलट-पुलट कर देख लेते हैं और फ्लैप, भूमिका और निष्कर्ष में दी गयी सूचनाओं के आधार पर ही समीक्षा तैयार कर लेते हैं। यह समीक्षा लेखन का गलत और अवैज्ञानिक तरीका है। इसमें पुस्तक का सही मूल्यांकन तो दूर, पुस्तक का सही परिचय भी पाठक को नहीं मिल पाता। इससे पाठक गुमराह भी हो सकता है।

इस सन्दर्भ में दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि एक समीक्षक और एक साधारण पाठक के पुस्तक अध्ययन में अंतर होता है। एक पाठक किसी पुस्तक को लगातार पढ़ता चला जाता है। वह पुस्तक के विभिन्न पक्षों की जाँच-पड़ताल करने का प्रयत्न नहीं करता। वह कई स्थलों पर सरसरी निगाह डालता हुआ भी आगे बढ़ सकता है। पर समीक्षक को पुस्तक पढ़ते समय कई बाते ध्यान में रखनी होती है। पुस्तक को आरंभ करते समय उसके सामने एक उद्देश्य होता है। समीक्षक को हमेशा यह ध्यान रखना होता है कि उसे पाठक को पुस्तक के स्वरूप की सही जानकारी देनी है, उसका विश्लेषण और मूल्यांकन करना है। इस उद्देश्य को सामने रखते ही समीक्षक एक **सावधान पाठक** बन जाता है। वह पुस्तक की एक-एक पंक्ति को ध्यान से पढ़ता है और उसके मन में जो प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें वह नोट करता चलता है।

अध्ययन के दौरान अलग कागज पर नोट लेना अपेक्षित होता है। इससे समीक्षा व्यवस्थित और सुगठित होती है। नोट न लेने की स्थिति में यह खतरा बराबर बना रहता है कि समीक्षा लिखते समय समीक्षक कुछ प्रमुख मुद्दों की चर्चा करना भूल जाए। पुस्तक पढ़ते समय बीच-बीच में जो सहज प्रतिक्रिया मन में उठती है, उसका उल्लेख नोट कर लेने से सुविधाजनक हो जाता है। इसके अतिरिक्त इससे समीक्षक के श्रम की भी बचत होती है। पुस्तक समाप्त करने के बाद वह अपने नोट की सहायता से समीक्षा को सिलसिलेवार ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

15.3.2 तथ्यों की जाँच

पुस्तक पढ़ने और उससे नोट्स लेने के तुरन्त बाद समीक्षक समीक्षा लिखने नहीं बैठ जाता, बल्कि वह पुस्तक में आये तथ्यों की जाँच करता है। कुछ तथ्यों की जाँच तो समीक्षक अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर ही कर लेता है, पर जहाँ वह बहुत विश्वस्त नहीं होता, वहाँ वह विभिन्न स्रोतों की सहायता लेता है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। मान लीजिए आपको भारत के किसी आदिवासी समुदाय पर लिखी पुस्तक की समीक्षा लिखनी है और आपको इस आदिवासी समुदाय के बारे में अधिक जानकारी नहीं है तो आप अपनी समीक्षा में पुस्तक पर न्याय नहीं कर सकेंगे। बेहतर होगा, यदि आप समीक्षा लिखने से पूर्व आदिवासी समुदाय के बारे में प्रामाणिक स्रोतों से तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त कर लें। इसके लिए आपको लायब्रेरी और सरकारी प्रकाशनों का सहारा लेना चाहिए। संभव हो तो उन लोगों से संपर्क करें जो उस आदिवासी समुदाय के बारे में प्रामाणिक जानकारी दे सकें। रचनात्मक साहित्य पर लिखते हुए बाह्य तथ्यों का ज्यादा महत्व नहीं होता। लेकिन कई बार लेखक ऐसी तथ्यात्मक भूलें कर जाता है जो रचना के आस्वादन में बाधा उत्पन्न करती हैं, तो समीक्षा लिखते हुए उनका उल्लेख किया जा सकता है। परंतु साहित्य में महत्व लेखक की सर्जनात्मक क्षमता, कल्पनाशीलता, कलात्मक उत्कर्षता और सोद्देश्यता का होता है। बाह्य तथ्य तो कच्चे माल की तरह इस्तेमाल होते हैं। उनके आधार पर जाँचने से हम साहित्यिक कृति का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते।

लेकिन साहित्य और कला से इतर पुस्तकों में तथ्यों की जाँच समीक्षा की प्रमाणिकता के लिए आवश्यक है। अगर समीक्षक को ऐसा लगता है कि पुस्तक में गलत तथ्य रखा गया है या तथ्य को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश की गयी है, तो उसे पुष्ट प्रमाणों के आधार पर ही अपना विश्लेषण पाठक के सामने रखना चाहिए। केवल अनुमान के बल पर किसी तथ्य का विश्लेषण समीक्षा को अप्रामाणिक और संदिग्ध बना सकता है।

15.3.3 अन्य पुस्तकों का अध्ययन

किसी पुस्तक पर समीक्षा लिखने के क्रम में विवेच्य पुस्तक के विषय से संबंधित दूसरी पुस्तकें भी पढ़नी पड़ सकती हैं। इससे पुस्तक विशेष के सम्यक् मूल्यांकन में सुविधा होती

है। इसके अतिरिक्त पाठक को विषय-विशेष पर लिखी अन्य पुस्तकों की भी जानकारी हो जाती है। इससे पाठक को यह भी ज्ञात हो जाता है कि विषय-विशेष पर कौन-कौन सी पुस्तकें लिखी गयी हैं और विवेच्य पुस्तक का महत्व क्या है? क्या लेखक ने पहले कही गयी बातों को ही दुहराया है या नयी जानकारी और नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है? पहले से चले आ रहे विचारों को ही लेखक ने अपनी पुस्तक में आगे बढ़ाया है या पुराने मतों का खंडन करता हुआ नये मत की स्थापना की है? आदि-आदि। इस प्रकार के विवेचन से समीक्षा का फलक व्यापक होता है और समीक्षक खुली हुई दृष्टि से पुस्तक पर विचार कर पाता है। मसलन, हिंदी कविता, कहानी, नाटक, निराला, प्रेमचंद आदि पर अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। अगर आपको इस प्रकार के किसी विषय पर लिखी गयी पुस्तक की समीक्षा लिखनी हो, तो आप इन विषयों पर अब तक लिखी महत्वपूर्ण पुस्तकों को अवश्य पढ़ें। मसलन, यदि निराला पर लिखी किसी पुस्तक की समीक्षा लिखनी हो, तो डा. रामविलास शर्मा की निराला पर लिखी पुस्तक **निराला की साहित्य साधना** अवश्य पढ़ी जानी चाहिए। इससे निराला पर लिखी गयी पुस्तक का महत्व रेखांकित करने में सुविधा रहेगी। यह प्रक्रिया कमोबेश सभी विषयों और विधाओं की पुस्तकों की समीक्षा करने के क्रम में अपनायी जानी चाहिए।

15.3.4 पुस्तक की प्रासंगिकता

पुस्तक समीक्षा की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए इकाई 14 में बताया गया है कि समीक्षा के प्रासंगिक होने का सूत्र पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ा हुआ है। समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। इसलिए किसी पुस्तक की समीक्षा लिखने से पहले समीक्षक को यह तय कर लेना चाहिए कि पुस्तक आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक है।

प्रासंगिकता का सवाल पुस्तक के प्रकाशन से भी जुड़ा होता है। पाठक नव प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी जल्द से जल्द प्राप्त करना चाहता है। अतः प्रकाशन के बाद यथाशीघ्र पुस्तक की समीक्षा प्रकाशित हो जानी चाहिए।

कभी-कभी कोई पुस्तक अपने प्रकाशन काल के काफी बाद फिर चर्चा के केंद्र में आ जाती है। मसलन हाल में उर्दू कथा लेखिका कुर्रतुल-एन-हैदर को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनकी पुस्तक **आग का दरिया** का प्रकाशन काफी पहले हो चुका है। पर आज वह पुस्तक इस पुरस्कार के कारण फिर से चर्चित हो उठी है। अतः अगर आज कोई व्यक्ति इस पर समीक्षा लिखता है, तो उसकी समीक्षा भी प्रासंगिक होगी।

वस्तुतः प्रासंगिकता का सवाल बहुत कुछ जन रुचि के साथ भी जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार अगर किसी पुस्तक पर कोई विवाद खड़ा हो जाता है, तो वह अपने प्रकाशन के काफी दिनों बाद भी प्रासंगिक हो जाती है। इस तरह प्रासंगिकता का संबंध पाठक की जिज्ञासा और अभिरुचि से भी है। और इस जिज्ञासा को शांत करना पुस्तक समीक्षा का मुख्य दायित्व है।

बोध प्रश्न

3) सही और गलत कथन के आगे क्रमशः √ और × का निशान लगाएँ।
   - क) बिना पुस्तक ध्यान से पढ़े भी अच्छी समीक्षा लिखी जा सकती है। ( )
   - ख) पुस्तक पढ़ते समय समीक्षक के सामने यह उद्देश्य होता है कि उसे पाठक को पुस्तक की सही जानकारी देनी है। ( )
   - ग) पुस्तक पढ़ते समय अलग से नोट लेते रहना चाहिए। ( )
   - घ) समीक्षा लेखन में पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जाँच जरूरी नहीं है। ( )

4) तथ्यों की जाँच की आवश्यकता क्यों होती है? (दो पंक्तियों में उत्तर दें)

   ....

   ....

5) नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथन पर √ का चिह्न लगाएँ।
   समीक्षा लिखने से पहले :

क) पुस्तक में वर्णित तथ्यों की जाँच कर लेनी चाहिए। ( )
ख) पुस्तक का गंभीर अध्ययन आवश्यक नहीं है। ( )
ग) समीक्ष्य पुस्तक से सम्बद्ध अन्य पुस्तकों को पढ़ने से उलझन होती है। ( )
घ) पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना जरूरी नहीं है। ( )

6) समीक्षा लिखने से पहले पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना क्यों जरूरी है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)

....

....

....

....

....

15.4 पुस्तक समीक्षा का लेखन

लेखन के लिए पूरी तैयारी करने और इससे सम्बद्ध जानकारियाँ प्राप्त करने के बाद समीक्षक समीक्षा लिखने की ओर अग्रसर होता है। अपने लेखन के क्रम में वह पुस्तक और लेखक का परिचय देता है, केंद्रीय विषय को उजागर करता है, विषय वस्तु और भाषा-शैली का विश्लेषण और मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। वह प्रकाशन संबंधी सूचना भी पाठकों को देता है। पुस्तक समीक्षा लिखने का कोई बना-बनाया सूत्र नहीं है। उपर्युक्त पक्ष समीक्षा में किस क्रम से और कितने महत्व के साथ आने चाहिए वह कई बातों पर निर्भर करता है। आपकी समीक्षा का पाठक कौन है। पत्रिका में समीक्षा के लिए कितना स्थान निर्धारित है। पुस्तक का महत्व कितना है और आप किस प्रकार की समीक्षा लिखने जा रहे हैं अर्थात् परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक या मूल्यांकनपरक। इसके साथ ही आपके लेखन की निजी विशिष्टता और आपकी अभिरूचि भी समीक्षा के स्वरूप को निर्धारित करेगी। हमें यहाँ समीक्षा लेखन के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए उपर्युक्त बातों को भी दृष्टि में रखना होगा। आइए, समीक्षा लेखन के प्रमुख पक्षों पर एक-एक करके विचार करें।

15.4.1 पुस्तक एवं लेखक का परिचय

इकाई 14 में हम आपको बता चुके हैं कि पुस्तक और लेखक का परिचय पाठकों तक पहुँचाना समीक्षक और समीक्षा का पहला उद्देश्य है। समीक्षा लेखन के आरम्भ में समीक्षक पुस्तक और पुस्तक के लेखक का संक्षिप्त परिचय देता है। समीक्षक यह भी बताता है कि पुस्तक का संबंध किस विषय और विधा से है, अर्थात् पुस्तक समाजशास्त्र पर है या इतिहास पर या साहित्य पर। इसी प्रकार पुस्तक निबंधात्मक है या आत्मकथात्मक या प्रश्नोत्तर रूप में या कहानी, उपन्यास, कविता आदि में। इसके साथ ही समीक्षक यह भी बताता है कि पुस्तक किस तरह के पाठकों के लिए लिखी गई है। अर्थात् बालकों, किशोरों, विद्यार्थियों, सामान्य पाठकों, विद्वानों आदि में से किनके लिए लिखी गई है।

लेखक के बारे में बताते हुए यह विचार करना चाहिए कि पुस्तक समीक्षा के पाठक उस लेखक से पहले से परिचित हैं या नहीं। अगर पाठक अधिक परिचित नहीं है तो समीक्षक को चाहिए कि वह थोड़ा विस्तार से लेखक के बारे में लिखे। जैसे नये लेखक या दूसरी भाषाओं के लेखक के बारे में बताते हुए उसकी पूर्व रचनाओं का भी परिचय देना चाहिए। इससे लाभ यह होता है कि पाठक को लेखक के लेखन क्षेत्र की जानकारी हो जाती है और आवश्यकता पड़ने पर अन्य पुस्तकों को पढ़ने की ओर भी प्रेरित हो सकता है। लेखक परिचय के उपर्युक्त सभी पक्षों को समेटने वाली समीक्षा का उदाहरण हम नीचे दे रहे हैं।

परकाय प्रवेश तथा अन्य कहानियाँ शीर्षक पुस्तक की समीक्षा करते हुए समीक्षक हरिशंकर सक्सेना ने विस्तार के साथ कहानिकार का परिचय दिया है :

कर्नाटक के सुप्रसिद्ध लेखक मास्ति वेंकटेश अय्यंगार तमिल भाषी होते हुए भी आजीवन कन्नड़ भाषा की ही सेवा करते रहे और कन्नड़ कहानी के जनक कहलाये। उनकी पहली कहानी "रंगप्पा की शादी" सन् 1910 में प्रकाशित हुई थी।

कहानीकार के रूप में मास्ति जी की अन्तर्दृष्टि मूलतः नैतिक है। वह परम्परागत नैतिक मूल्यों के प्रति सचेत और संस्कृति के पोषक हैं। सांस्कृतिक जड़ों की गहराई में उनकी पूर्ण निष्ठा है।

लेखक का संक्षिप्त परिचय देने के बाद समीक्षक ने पुस्तक का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है।

समीक्ष्य संग्रह में मास्ति जी की सन् 1910 से 1984 तक की चुनी हुई कहानियों को संकलित किया गया है। ये कहानियाँ यथार्थ बोध और संवेदना के स्तर पर समृद्ध हैं और अनुभूति की प्रामाणिकता पर बल देती हैं।

(**समीक्षा**, वर्ष 20 अंक 4)

लेखक का परिचय देने के बाद समीक्ष्य पुस्तक के बारे में बताना चाहिए। पुस्तक का विषय, कुल अध्याय, अध्यायों के शीर्षक, अध्यायों में वर्णित विषय और उनके प्रमुख पक्षों का संक्षिप्त उल्लेख किया जा सकता है। पुस्तक समीक्षा के इस पक्ष को कितना विस्तार देना है या उसे कितने संक्षिप्त रूप में लिखना है यह समीक्षा के कुल कलेवर और पत्रिका में निर्धारित स्थान से तय होगा। लंबी पुस्तक समीक्षा में यह विस्तार से दिया जा सकता है। लंबी परिचयात्मक समीक्षा में समीक्षा का मुख्य कलेवर इसी पक्ष से निर्धारित होगा जबकि संक्षिप्त परिचयात्मक समीक्षा में इसे संक्षेप में ही प्रस्तुत करना चाहिए। विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में इस पक्ष को आवश्यकतानुसार विस्तार दें। अगर इस विषय पर अन्य पुस्तकें भी लिखी गई हैं तो उनका भी विवरण दिया जा सकता है। यहाँ हम हंस (मार्च 1990) में प्रकाशित श्रवण कुमार गोस्वामी की जेल संस्मरण पर आधारित पुस्तक **लौह कपाट के पीछे** की संजीव की समीक्षा का आरंभिक अंश दे रहे हैं। इसे पढ़कर आप पुस्तक का परिचय कैसे दिया जाए और उसमें किन-किन बातों का उल्लेख किया जाए, यह समझ सकते हैं।

भारतीय जेलों पर अब तक काफी कुछ प्रकाशित हो चुका है—महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद जैसे दिग्गज नेताओं से लेकर जाने-माने साहित्यकारों और राजनीतिक बंदियों तक की। इनमें रामवृक्ष बेनीपुरी की "जंजीरें और दीवारें", माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "कैदी और कोकिला", मेरी टायलर की अंग्रेजी पुस्तक "भारतीय जेलों में पाँच साल" और चारू चक्रवर्ती (जरासंध) जो स्वयं जेलर भी रह चुके थे, की बंगला पुस्तक "लौह कपाट" खासी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। इधर इसी क्रम में श्रवण कुमार गोस्वामी की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है "लौह कपाट के पीछे" जो एक विशेष जेल हजारीबाग केंद्रीय कारा को केंद्र में रखते हुए संस्मरणों, परिचयात्मक विवरणों और तीखी आलोचनात्मक टिप्पणियों का एक मिला-जुला आकलन है।

लोह कपाट के पीछे में हजारीबाग जेल के अपने सत्ताईस दिन के प्रवास के दौरान लेखक ने जो कुछ देखा, सुना, भोगा और महसूसा, उसे दर्ज करने की कोशिश है। 152 पृष्ठों की 21 परिच्छेदों में विभक्त यह पुस्तक उक्त जेल का परिचय उसके अलग-अलग विभाग, कैदियों का वर्गीकरण, विभागों के संबद्ध अधिकारियों और कर्मचारियों का इन अलग-अलग वर्गों के बंदियों के प्रति आचरण और कुछ विशिष्ट प्रकरण, कुछ विशिष्ट पुस्ताकांशों सूचनाओं के विश्लेषणात्मक अंदाज में समोती है।

15.4.2 केन्द्रीय भाव को उजागर करना

लेखक और पुस्तक का संक्षिप्त परिचय देने के बाद समीक्षक विषय के केंद्रीय भाव को उजागर करने का प्रयत्न करता है। प्रत्येक पुस्तक किसी न किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर लिखी जाती है। उसको पहचान कर उसी के संदर्भ में पुस्तक के केन्द्रीय विषय को उजागर करना होता है। ऊपर हमने जिस पुस्तक का उल्लेख किया है उसकी समीक्षा में समीक्षक ने पुस्तक लिखने के पीछे छिपे लेखकीय उद्देश्य को पहचान कर निम्नलिखित शब्दों में पुस्तक के केंद्रीय भाव या विषय को उजागर किया है :

"लेखक की नजर में जेल एक शोषण गृह है—भोजन, आवास, शौच, चिकित्सा—सभी स्तरों पर, लेकिन मात्र भले और भोले लोगों के लिए, गुंडों और राजनीतिक बंदियों का दर्जा पाने वालों के लिए यह ऐशगाह है। जेलें अपराध की नर्सरीज हैं, जो मनुष्य में अपराधवृत्ति का उच्छेद नहीं करती बल्कि अपराधिकी का उद्रेक और संवृद्धि करती हैं।"

(**हंस**, मार्च 1990)

उपर्युक्त पंक्तियों में पुस्तक लिखने के लेखकीय उद्देश्य के संदर्भ में उसके विषय के महत्व को भी उजागर किया गया है। इसके बाद विषय वस्तु का विवेचन प्रस्तुत किया जा सकता है। यह विवेचन संक्षिप्त और विस्तृत दोनों रूपों में हो सकता है। यह पक्ष पुस्तक के केंद्रीय भाव को उजागर करने से पूर्व भी आ सकता है, बाद में भी। कभी-कभी समीक्षक विषय के विश्लेषण के बीच भी पुस्तक के केन्द्रीय भाव को उजागर कर देता है। यह समीक्षक पर निर्भर करता है कि वह कौन-सी विधि अपनाये।

विषय के विवेचन में यह ध्यान रखना चाहिए कि आपका विवेचन विषय को समझने में सहायक हो न कि बाधक। वह विषय वस्तु की शक्ति और सीमा को तो उजागर करे ही, साथ ही उसको समझने में भी सहायक हो। लेकिन यह कार्य करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि स्वयं पाठक पुस्तक की विषय वस्तु से परिचित नहीं है। इसलिए आपका विवेचन इस रूप में प्रस्तुत होना चाहिए कि पाठक को विषय की जानकारी भी मिलती रहे। हिंदी कवि भारत भूषण अग्रवाल के काव्य रूपक **अग्निलीक** की प्रेमशंकर द्वारा लिखित समीक्षा के निम्नलिखित अंश में कथा का विवेचन भी है और उसका संकेत भी।

तीसरे और अंतिम दृश्य में वाल्मीकि से बातचीत करती हुई सीता के लंबे वक्तव्य हैं जहाँ उनके व्यक्तित्व के नये तेवर खुलते हैं। यहाँ भारत भूषण सीता को तर्क के स्तर पर रचते हैं और वे वाल्मीकि को भी नहीं बख्शतीं, कहती हैं : इस यंत्रणा को आप नहीं समझेंगे, आप भी तो पुरुष हैं—रामराज्य के चारण। सीता में आक्रोश है और वह स्वयं को भ्रमभंग की स्थिति में पाती हैं, उन्होंने वास्तविकता को जान लिया है। राम की महत्वाकांक्षा और रामराज्य का खोखलापन—इन मुद्दों पर सीता तीखे प्रहार करती हैं। राम के लक्ष्य हैं : राज्य, राजनीति, संग्राम और विजय। जिस समाज में जैसे तैसे सफलता को ही अंतिम लक्ष्य माना जाता है वहाँ मानवीय मूल्य सिर्फ बहस-मुबाहिमे का मुद्दा बनकर रह जाते हैं, उन्हें जिया नहीं जाता।

(**आलोचना**—44, जनवरी-मार्च 1978)

15.4.3 विषय वस्तु का मूल्यांकन

पुस्तक एवं लेखक का परिचय देने और विषय के केंद्रीय भाव को उजागर करने के बाद समीक्षक विषय वस्तु का मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन का आधार पुस्तक के उद्देश्य से निर्धारित होगा। अगर लेखक अपने उद्देश्य में सफल रहा है तो हम पुस्तक का मूल्यांकन सकारात्मक रूप से करेंगे। उद्देश्य में सफलता की परीक्षा विषय वस्तु की प्रस्तुति, उसकी प्रासंगिकता से करनी चाहिए। यह संभव है कि किसी पुस्तक में सभी पक्ष स्तरीय न हों इसलिए मूल्यांकन भी दो स्तरों पर करना चाहिए। अलग-अलग पक्षों पर अलग-अलग मूल्यांकन प्रस्तुत करने के साथ-साथ पूरी पुस्तक का समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करना चाहिए।

विषय वस्तु की प्रस्तुति के मूल्यांकन का आधार विषय का महत्व, उसका वस्तु पक्ष, व्याख्या और विवेचन की शैली, प्रस्तुति का ढंग आदि होंगे। यह भी देखना होगा कि विषय वस्तु पाठक वर्ग को संप्रेष्य भी है या नहीं? क्या वह उनके लिए उपयोगी है? मूल्यांकन में लेखक की दृष्टि और उसकी लेखकीय क्षमता, उसकी प्रतिभा और श्रम का भी मूल्यांकन करना चाहिए। यह भी बताना चाहिए कि अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए लेखक कितना वस्तुपरक, निष्पक्ष और पूर्वग्रहमुक्त रहा है। लेकिन ऐसा करते हुए स्वयं समीक्षक को भी निष्पक्ष और पूर्वग्रहमुक्त होना चाहिए। यहाँ हम मराठी लेखक विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े की पुस्तक **भारतीय विवाह संस्था का इतिहास** के हिंदी अनुवाद की समीक्षा का एक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमें पुस्तक की विषय वस्तु का मूल्यांकन करते हुए उनकी प्रतिभा और श्रम का भी उल्लेख किया गया है :

राजवाड़े की दृष्टि बेहद यथार्थपरक, बेहद बेबाक है। यम-यमी प्रसंग हो या अश्वमेध यज्ञ के अंत में होने वाला कृष्ण यजुर्वेदी और शुक्ल यजुर्वेदी विलाप और विलास—वे प्राचीन बौद्धिक संस्कृति के अर्थ खोलते हुए उनके मांसल, ऐहिक दैहिक संदर्भ बेझिझक देखते हैं। नैतिक मूल्यों के क्रमशः विकास की उनकी धारणा अपने प्रत्यक्ष अनुभवों पर भी आधारित हैं—कन्नड़ प्रदेश के घट कंचुकी और पेशवाओं के इतिहास, ज्ञात मनोविनोदों, आम बोलचाल की अर्थच्छवियों के इतिहास और रीति-रिवाजों में प्राप्त अवशेषों में वे उनकी छाया खोजते हैं। छिटपुट रूप में, क्षेत्रीय और सीमित नृशास्त्रीय या पुरातात्विक अध्ययनों में से यहाँ उल्लिखित बहुत से तथ्य बिखरे मिल जायेंगे। पर कोई संबद्ध इतिहास (इन अंतर्दृष्टियों, तथ्यों और व्याख्याओं को समेटने वाला) शायद अभी भी नहीं लिखा गया है।

(गिरधर राठी द्वारा लिखित समीक्षा, **जनसत्ता**, 22 फरवरी 1987)

निम्नलिखित उदाहरण में लेखक की प्रस्तुति का मूल्यांकन किया गया है। डॉ. रामविलास शर्मा की इतिहास पुस्तक **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** की बनवारी द्वारा लिखी समीक्षा का यह अंश इस दृष्टि से उल्लेखनीय है :

यह किताब उनके इतिहास संबंधी सोच को एक जगह रखती है। पूरी किताब एक साथ परिकल्पित नहीं की गई है और एक सिरे में बैठकर नहीं लिखी गई। वह उनके समय-समय पर लिखे गए लेखों का संकलन है। इसलिए उनके लेखों को पढ़ते हुए प्रवाह बार-बार बाधित होता है और कहीं-कहीं मार्क्सवादी उद्धरण, तर्क और उदाहरण तो बहुत दिखाई देते हैं मगर निष्कर्ष या तो मिलता नहीं या बहुत ही कमजोर रूप में निकलकर आता है। फिर भी किताब के विषय में तारतम्यता है और पूरी किताब पढ़ कर इसके नौ अध्यायों में फैली हुई विषय वस्तु की एकसूत्रता समझ में आ सकती है।

(**जनसत्ता**, 23 फरवरी 1988)

पुस्तक के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करने के बाद पूरी पुस्तक का समग्र मूल्यांकन भी प्रस्तुत करना चाहिए। अर्थात् समीक्षक को यह बताना चाहिए कि पुस्तक पठनीय है या नहीं उसकी दृष्टि में पुस्तक स्तरीय, श्रेष्ठ या साधारण है। लेकिन ऐसा निर्णय देने के लिए समीक्षा में पर्याप्त तर्क मौजूद होने चाहिए। निम्नलिखित अंश राजेन्द्र यादव के निबंधों की पुस्तक **प्रेमचंद की विरासत** का ऐसा ही मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद यह पुस्तक समकालीन इतिहास और साहित्य के तात्कालिक प्रश्नों के बारे में सोचने को विवश करती है। समाज के व्यापक संदर्भ में लेखकीय कर्म की प्रासंगिकता, राजनीति और बुद्धिजीवी के परस्पर संबंधों की व्याख्या, साहित्यिक आंदोलनों की भूमिका, लेखन और प्रकाशन, साहित्य में व्यक्ति पूजा, संपादकीय गद्दियों पर आसीन लेखकों का आचरण, लेखक और सिनेमा आदि प्रश्नों के बारे में लेखक ने नुकीले प्रश्न उभारे हैं और अपनी सुविधानुसार उत्तर भी दिये हैं।

(भीमसेन त्यागी द्वारा लिखित समीक्षा, **आलोचना**-45, अप्रैल-जून 1978)

15.4.4 भाषा-शैली का मूल्यांकन

विषय वस्तु के मूल्यांकन के बाद भाषा-शैली का विश्लेषण और मूल्यांकन भी अपेक्षित है। साहित्येत्तर विषयों पर लिखी पुस्तकों में भाषा-शैली का प्रश्न विषय की प्रस्तुति और संप्रेषणीयता से ही जुड़ा होता है जबकि साहित्यिक पुस्तकों में भाषा-शैली को रचनात्मक और कलात्मक उत्कर्षता के आधार पर भी विवेचित और मूल्यांकित किया जाना चाहिए। प्रख्यात न्यायविद वी.एम. तारकुंडे की अंग्रेजी पुस्तक के हिंदी अनुवाद नवमानववाद : स्वातान्त्र्य और लोकतंत्र का दर्शन की भाषा पर टिप्पणी करते हुए निम्नलिखित समीक्षा में जो कहा गया है उतना कहना किसी साहित्यिक पुस्तक के लिए पर्याप्त नहीं है परंतु यहां सिर्फ संप्रेषणीयता ही प्रमुख प्रश्न है इसलिए निम्नलिखित टिप्पणी को पर्याप्त कहा जा सकता है :

वी.एम. तारकुंडे ने अपनी मूल किताब काफी सरल अंग्रेजी में लिखी थी। पर उसका अनुवाद काफी गूढ़ हिंदी में हुआ है। मूल किताब को पढ़ने के लिए शब्दकोश की जरूरत शायद ही पड़ेगी। लेकिन हिंदी अनुवाद को ठीक से पढ़ने के लिए इसकी जरूरत पड़ सकती है। उदाहरण के लिए "मानववाद यह प्रतिपादित करता है कि मानव का स्वातन्त्र्य के लिए

संघर्ष, जीव द्वारा अस्तित्व के लिए संघर्ष का मानवी स्तर पर सातत्य है तथा मानवी प्रगति की मूल कांक्षा उसकी स्वातन्त्र्य की खोज तथा सत्य का संधान करने की प्रवृत्ति में उत्प्रेरित है।" पूरी किताब में ऐसे ही लंबे और बोझिल वाक्यों की भरमार है।

(**जनसत्ता**, 4 अक्टूबर 1987)

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों में भाषा सहज, सरल और संप्रेष्य होनी चाहिए। वाक्य भी छोटे और सीधे-सादे होने चाहिए ताकि पढ़ने वालों को पुस्तक का कथ्य समझ में आ सके। लेकिन साहित्यिक पुस्तकों की भाषा-शैली का विवेचन करते हुए उसकी साहित्यिक उत्कर्षता का ध्यान रखना होगा। संप्रेषणीयता का प्रश्न वहां भी महत्वपूर्ण होता है लेकिन किसी कहानी, कविता या नाटक में भाषा उसके कथ्य के साथ-साथ रचनाकार की शैलीगत विशिष्टता और भाषागत सौंदर्य से भी तय होती है। भाषा-शैली का विवेचन करते हुए उस साहित्यिक विधा की परंपरा के तब तक के विकास को भी ध्यान में रखना होता है। यहाँ उदाहरण के रूप में हरिवंशराय बच्चन की काव्य पुस्तक **मेरी श्रेष्ठ कविताएँ** की त्रिलोचन द्वारा लिखी समीक्षा के निम्नलिखित अंश को देखना उपयोगी होगा :

बच्चन की भाषा सरल कही जाती है। अनजाने और अपरिचित शब्दों का व्यवहार उनकी रचनाओं में नहीं मिलता। लेकिन भाषा में ऊबड़खाबड़पन दुर्लभ नहीं है। यह दोष उनकी अच्छी कविताओं की अच्छाई को भी ढँक लेता है। इसमें बच्चन का ही दोष नहीं है। उनके अग्रज कवियों की भाषा में यह ऊबड़खाबड़पन जगह-जगह मिलता है। बच्चन ने शायद इसे हिंदी कविता की पहचान मान लिया हो ऐसी स्थिति में भाषा का वह रूप बना ही रह जाएगा जो अच्छी कविता के बनने में बाधक है।

(**साक्षात्कार** 79-80, जून-जुलाई 1986 से उद्धृत)

15.4.5 प्रकाशन स्तर एवं मूल्य

किसी पुस्तक की समीक्षा लिखते समय उसके प्रकाशन से संबंधित सारे ब्यौरे पाठक तक पहुँचने चाहिए। मसलन, पुस्तक का मूल्य क्या है, यह कब और किस प्रकाशन से प्रकाशित हुई है, कौन सा संस्करण है आदि-आदि। ये जानकारियाँ फुटनोट में दी जा सकती हैं, या समीक्षा शुरू करते वक्त आरम्भ में इनका उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त समीक्षा के अन्त में प्रूफ और मुद्रण संबंधी त्रुटियों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए। अगर जरूरी हो तो यह भी बताना चाहिए कि पुस्तक का प्रकाशन कैसा है। कागज का स्तर क्या है। कवर पर दिये गये चित्र पर भी टिप्पणी की जा सकती है। पुस्तक का मूल्य कई बार बहुत अधिक होता है और आम पाठक के लिए पुस्तक महत्वपूर्ण होते हुए भी खरीदना कठिन होता है। अगर आवश्यक समझें तो इसका उल्लेख करें। विज्ञान, इंजीनियरी, कला आदि से संबंधित पुस्तकों में दिये गये चित्रों, आरेखों आदि पर भी अपनी राय व्यक्त करनी चाहिए। पुस्तक की उपलब्धता के बारे में जानकारी हो तो वह भी बतायी जा सकती है।

15.5 पुस्तक समीक्षा की प्रस्तुति

अब तक पुस्तक समीक्षा के बारे में जितनी चर्चा हो चुकी है उससे आप यह तो समझ ही गये होंगे कि समीक्षा के महत्वपूर्ण पक्ष कौन-कौन से हैं। लेकिन समीक्षा लिखते हुए आपको यह भी विचार करना पड़ेगा कि आप इन पक्षों को अपनी समीक्षा में किस तरह प्रस्तुत करें। परिचयात्मक समीक्षा में प्रस्तुति की ज्यादा उलझन नहीं होती। वहाँ आप आरंभ में लेखक का परिचय, फिर पुस्तक का परिचय, उसके बाद विषय वस्तु का संक्षिप्त विवरण, कथ्य एवं प्रस्तुति का मूल्यांकन एवं अंत में प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी करते हुए पुस्तक के महत्व के साथ समीक्षा समाप्त कर सकते हैं। संक्षिप्त और लंबी परिचयात्मक समीक्षा के अनुरूप आप इन पक्षों को घटा-बढ़ा सकते हैं। परंतु जब आप समीक्षा में पुस्तक के बारे में "परिचय" से कुछ अधिक कहना चाहते हैं तो आपको गंभीरता से विचार करना चाहिए कि

आप समीक्षा का आरंभ और अंत कैसे करें। आइए, इन पहलुओं पर थोड़ा विस्तार से विचार करें।

15.5.1 आरंभ

समीक्षा का आरंभ कैसे किया जाए इसका कोई बना-बनाया फार्मूला नहीं है। आमतौर पर आरंभ में लेखक और पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। परंतु ऐसा करना अनिवार्य नहीं है। आप पुस्तक के केंद्रीय भाव को उजागर करते हुए भी समीक्षा की शुरुआत कर सकते हैं। आप पुस्तक के महत्व को स्थापित करते हुए भी समीक्षा की शुरुआत कर सकते हैं। आप पुस्तक में से कोई अंश उद्धृत करके भी समीक्षा आरंभ कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समीक्षा की चाहे जिस ढंग से शुरुआत करें आपका "आरंभ" प्रभावशाली लगना चाहिए। हम यहाँ कुछ समीक्षाओं के आरंभिक अंश प्रस्तुत कर रहे हैं उनकी भिन्नताओं से आप समीक्षा की शुरुआत के भिन्न-भिन्न ढंग और उनकी विशेषताएँ पहचान सकते हैं।

केंद्रीय भाव को उजागर करते हुए :

***उस चिड़िया का नाम** छूटी हुई जगहों और छूटे हुए लोगों तक जाकर वापस लौट आने की एक विशिष्ट कहानी है। जाहिर है, इसे विशिष्ट बनाने वाली बात इसकी वस्तु नहीं क्योंकि अतीत के साथ आदमी का रिश्ता या कि उसका स्मृति जगत रचना का विषय बार-बार और कई प्रकार से बना है, बनता रहेगा। एक तरह से आदमी का समूचा अनुभव कोश ही उसका स्मृतिकोश है। आजकल जब "अपनी जड़ों की तलाश" आदमी के रचनात्मक सरोकारों में चिंता का प्रमुख विषय है तब तो खास तौर से कहा जा सकता है कि अतीतावलोकन वस्तु की हैसियत से विशिष्ट है या नहीं है। फिर भी निस्संदेह यह रचना विशिष्ट है।*

(पंकज विष्ट के उपन्यास "उस चिड़िया का नाम" की अर्चना वर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **हंस**, जुलाई 1990, पृ. 62)

पुस्तक से उद्धरण देते हुए :

मलयज की पुस्तक रामचंद्र शुक्ल की भूमिका के आरंभ में नामवर सिंह ने लिखा है "आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बारे में एक और किताब नहीं यह एक नई "रस-मीमांसा" है। मलयज के ही इस कथन का उल्लेख करते हुए "आज की रस मीमांसा कविता की पंक्तियों में लिखी जा रही" संघर्ष-मीमांसा है, नामवरसिंह ने आगे बढ़कर कहा है "आलोचना में यह मलयज की संघर्ष मीमांसा का खाका है।"

(मलयज की पुस्तक **रामचन्द्र शुक्ल** पर डॉ. परमानंद श्रीवास्तव द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **आलोचना**-85, अप्रैल-जून 1988, पृ. 102)

पुस्तक के महत्व की स्थापना द्वारा :

*मार्क्स और एंगेल्स ने जिस दृढ़ शक्ति और निरंतर खोज के बाद मार्क्सवादी सिद्धांतों की संपदा का विकास किया था, रामविलास शर्मा की पुस्तक **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** उसी समाज चिंतन का ऐतिहासिक ग्रंथ है। मार्क्स की मेधा, भावना और चरित्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि एपिकुरूस और ईस्सखुलस की प्रेरणा से निर्मित हुई थी। रामविलास शर्मा यूरोप में, इटली, इंग्लैंड और फ्रांस के साथ तुलनात्मक दृष्टि से भारत और एशिया में यूनानी रोमन समाज और संस्कृति की जड़ें खोजते हैं।*

(डॉ. रामविलास शर्मा की पुस्तक, **मार्क्स और पिछड़े हुए समाज** की विष्णुचंद्र शर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **दिनमान** 12-18 अक्टूबर 1986)

लेखक परिचय से :

हिंदी में निबंध को नये विचारों और संदर्भों से जीवंत बनाने वाले निबंधकारों में रमेशचंद्र शाह एक उल्लेखनीय नाम है। उनके निबंधों का पहला संग्रह "रचना के बदले" 1965 में प्रकाशित हुआ था। व्यक्ति व्यंजक निबंधों से इस संग्रह में सांस्कृतिक बोध की बांसुरी सुनाई दी थी। फिर उनका दूसरा निबंध संग्रह "वागर्थ" साहित्य देवता की नई छवि का

विचार बिंब बना। इधर ''सबद निरंतर'' जैसे विशिष्ट निबंध संग्रह सामने आए हैं।

(रमेशचंद शाह के निबंध संग्रह **शैतान के बहाने** की डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा लिखित समीक्षा का आरंभिक अंश, **इंडिया टुडे**, 31 जुलाई 1987)

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा कि समीक्षा का आरंभ कैसे किया जा सकता है। कई बार समीक्षक समीक्षा के आरंभ में गैर जरूरी बातों में उलझ जाता है जो पुस्तक को समझने में कोई मदद नहीं करती या फिर वह लेखक के बारे में या पुस्तक से संबंधित किसी एक बात को इतने विस्तार से लिख देगा कि पुस्तक के बारे में लिखने के लिए अधिक अवकाश नहीं रहेगा। इससे समीक्षा असंतुलित हो जाती है। इसलिए यह ध्यान रखना चाहिए कि पुस्तक समीक्षा ''आरंभ'' करने के बाद शीघ्र ही समीक्षक को समीक्षा के मुख्य कलेवर पर आ जाना चाहिए।

15.5.2 मध्य भाग या मुख्य कलेवर

मुख्य कलेवर में सामान्यतः पुस्तक की विषय वस्तु का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। इस अंश को लिखते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि आपकी बातें सुस्पष्ट, तर्कसंगत और बोधगम्य हों। पुस्तक को आप जितनी तन्मयता और गंभीरता से पढ़ेंगे उतने ही बेहतर ढंग से आप अपना विवेचन प्रस्तुत कर सकेंगे। वास्तव में, समीक्षा का यही अंश सबसे अधिक महत्व का होता है क्योंकि इसी से पाठक पर आपकी समीक्षा पद्धति की धाक जमेगी। पुस्तक समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को चाहिए कि वह ऐसी बातों में अपने को न उलझाए जो किताब की विवेचना के लिए आवश्यक न हों। हाँ, विस्तृत समीक्षा में यह गुंजाइश होती है कि समीक्षक चाहे तो पुस्तक के किसी खास पक्ष को अधिक विस्तार दे और अपना मत भी विस्तार से प्रस्तुत करे। लेकिन इस स्तर की समीक्षा में समीक्षक को तभी प्रवृत्त होना चाहिए जब स्वयं समीक्षक उस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखता हो। उदाहरण के लिए, एक लब्धप्रतिष्ठ इतिहासकार अगर किसी दूसरे महत्वपूर्ण इतिहासकार की पुस्तक की समीक्षा लिखेगा तो बहुत संभव है कि वह पुस्तक के किसी खास हिस्से पर ही अपनी समीक्षा को केंद्रित कर ले। लेकिन ऐसी समीक्षा का अपना महत्व होता है। नये समीक्षकों को लेखन का सामान्य प्रचलित तरीका ही अपनाना चाहिए। समीक्षक को चाहिए कि पुस्तक की विवेचना करते हुए जहाँ संभव हो अपने मत की पुष्टि में पुस्तक से उद्धरण देना चाहिए। इससे आपकी बात का वज़न बढ़ जाएगा। लेकिन समीक्षा के आकार का भी ध्यान रखना चाहिए। यह भी नहीं होना चाहिए कि आपका विवेचन मात्र उद्धरणों का मोहताज होकर रह जाए। पुस्तक का विवेचन किस ढंग से किया जाना चाहिए इसका एक उदाहरण हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

*भारत भूषण का **अग्निलीक** राम के नायकत्व की आदर्शवादी रेखाओं को तोड़ता है उन्हें मानवीय भूमि पर लाता है। यहाँ कवि सीता का पक्षधर है, पर भवभूति की करुणा के स्तर पर नहीं तर्क के धरातल पर। वाल्मीकि बराबर राम के नायकत्व की रक्षा करना चाहते हैं, पर भारत भूषण उनकी मानवीय कमजोरियाँ भी सामने लाते हैं, उन्हें सामयिक संदर्भों तथा आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं। राम आज के नायक हैं, अपनी सीमाओं से बंधे हुए लोलुप पंडितों, चाटुकारों से घिरे, बेलगाम महत्वाकांक्षाओं में कैद। यह निर्मम महत्वाकांक्षा सारे मानवीय रिश्तों को भुला देती है—उस प्रिय सीता को भी जो राम के साथ वन में गयी थीं। निष्कासित सीता सामान्य जन के प्रतिनिधि पात्र रथवान के माध्यम से राम को संदेश भिजवाती है : बनवास देते समय इतना तो सोचते कि जब उन्हें बनवास मिला था तो मैं उनके साथ गयी थी।*

(प्रेमशंकर द्वारा लिखित **अग्निलीक** की समीक्षा, **आलोचना**-44 जनवरी-मार्च 1987, पृ. 107)

15.5.3 अंतिम भाग

पुस्तक समीक्षा का अंत किसी भी ढंग से किया जा सकता है। पुस्तक का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करते हुए, पाठकों को पुस्तक के संबंध में मशविरा देते हुए, पुस्तक के विवेचन को पूरा करते हुए या प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी करते हुए। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए

कि जहाँ समीक्षा समाप्त हो वहाँ समीक्षा के अधूरेपन का अहसास नहीं होना चाहिए। आमतौर पर अंत में पुस्तक पर बहुत नकारात्मक टिप्पणी पसंद नहीं की जाती। अगर कोई ऐसी बात कहनी हो तो उसे समीक्षा के मध्य भाग में ही कहना चाहिए। अंत तो किसी न किसी सकारात्मक और उत्साहवर्द्धक टिप्पणी के साथ ही करना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि समीक्षक समझौतावादी रुख अपनाये। लेकिन यह सही है कि अगर कोई पुस्तक समीक्षा के योग्य समझी गई है तो फिर उसमें कुछ न कुछ सकारात्मक अवश्य होगा। उसे पहचान कर उसको रेखांकित करते हुए समीक्षा समाप्त करना ज्यादा उचित होगा। यहाँ समीक्षा की समाप्ति के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

पुस्तक के समग्र मूल्यांकन के साथ :
कुल मिलाकर ***जंगल का दर्द*** *कवि के विकास की ऊर्ध्वमुखी यात्रा के प्रति आश्वस्त करता है। निजी और सामाजिक दोनों ही प्रकार के संबंधों में यह एक नये भाव संसार की कवि की तलाश और नयी भाषिक रचना के विन्यास को रूपायित करता है :*

ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमसे बड़ा हो
यदि हम कुछ भी छोटा न करना चाहते हों।

(सर्वेश्वर के काव्य संग्रह ''जंगल का दर्द'' की अर्चना वर्मा द्वारा लिखित समीक्षा का अंतिम पैरा, **आलोचना,** 46, जुलाई-सितंबर 1978, पृ. 89)

उपर्युक्त अंश में समीक्षक ने अपने कथन की समाप्ति पुस्तक की दो काव्य पंक्तियों के उद्धरण के साथ की है।

पुस्तक के महत्व का प्रतिपादन करते हुए :
इन सब कमियों के बावजूद कहा जा सकता है कि यह विश्वकोश सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य के संबंध में एक मानक संदर्भ ग्रंथ का काम करेगा। इसमें जो लेख दिये गये हैं और उनमें जितनी सूचनाएँ हैं, वे अब तक प्रकाशित किसी भी अन्य ग्रंथ में एक साथ एक ही जगह नहीं मिलेंगी। इस दृष्टि से विद्यार्थियों, विद्वानों, पत्रकारों, शोधकर्ताओं, पुस्तकालयों आदि के लिए इसकी उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। साहित्य अकादमी के पास इस कोश के लिए पर्याप्त साधन हैं। इन साधनों का यदि उचित उपयोग किया जा सके तो कोई कारण नहीं कि आगे प्रकाशित होने वाले खंडों में कमियाँ बनी रहें।

(**एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिटरेचर** की डॉ. उर्मिला जैन की समीक्षा का अंतिम पैरा, **हंस**, सितंबर 1990 पृ. 66)

15.5.4 भाषा-शैली

पुस्तक समीक्षा के लेखन की भाषा-शैली इस बात से तय होगी कि आप किस तरह की समीक्षा और किस के लिए लिख रहे हैं। अगर समीक्षा, सामान्य पाठकों के लिए और परिचयात्मक स्तर की है तो आपकी समीक्षा विवरणात्मक होनी चाहिए तथा भाषा भी सरल, बोधगम्य और संप्रेष्य होनी चाहिए। लेकिन आप अगर किसी विशिष्ट क्षेत्र से जुड़े गंभीर पाठकों के लिए विश्लेषणात्मक या मूल्यांकनपरक समीक्षा लिख रहे हैं तो आपकी भाषा में कुछ हद तक गंभीरता और जटिलता आ सकती है। आपकी शैली भी उतनी सरल और विवरणपरक नहीं होगी। परन्तु ऐसी समीक्षा भी अगर क्लिष्टता उत्पन्न करे या उलझाव उत्पन्न करे तो समीक्षा अपने मकसद में असफल ही कहलाएगी। भाषा और शैली दोनों स्तरों पर समीक्षा पाठक में यह तो एहसास पैदा करे कि समीक्षक अपने समीक्षा कार्य के प्रति गंभीर है और उसे विषय की गहरी पकड़ है परंतु उस पर यह असर नहीं पड़ना चाहिए कि समीक्षक पुस्तक के मंतव्य को समझा ही नहीं है या वह स्वयं उलझा हुआ है। यहाँ हम परिचयात्मक और विश्लेषणात्मक समीक्षा की भाषा के दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। वैसे समीक्षा की भाषा-शैली के लिए इकाई 14 और इस इकाई में प्रस्तुत किये गये विभिन्न उदाहरणों को इस दृष्टि से पुनः पढ़ सकते हैं।

परिचयात्मक समीक्षा
प्रस्तुत पुस्तक यांत्रिक सभ्यता की अधुनातन पहचान से संबंधित है। इसमें यांत्रिक मानव की दार्शनिक व्याख्या या आर्थिक विवेचन अभिप्रेत नहीं। लेखक ने यंत्र मानव की संरचना, उसके विकास एवं उसकी क्षमता का विवेचन किया है। पुस्तक सरल भाषा में है।

ङ) प्रकाशन स्तर पर टिप्पणी

....

....

च) प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

....

....

15.6 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपने समीक्षा लेखन करने की एक दिशा प्राप्त कर ली है। आप अपनी लगन और मेहनत से इस क्षेत्र में प्रवीण हो सकते हैं।

- आप जान गये हैं कि समीक्षा के तीन प्रकार होते हैं—परिचयात्मक समीक्षा, विश्लेषणात्मक समीक्षा और मूल्यांकनपरक समीक्षा। परिचयात्मक समीक्षा में जहाँ पुस्तक परिचय पर अधिक जोर होता है, वहाँ विश्लेषणात्मक और मूल्यांकनपरक समीक्षा में क्रमशः विश्लेषण और मूल्यांकन पर।
- समीक्षा लिखने के पहले समीक्षक को कुछ तैयारी करनी पड़ती है, मसलन उसे समीक्ष्य पुस्तक का गंभीरता से अध्ययन करना होता है, वर्णित तथ्यों की जाँच करनी होती है, समीक्ष्य पुस्तक के विषय से संबंधित दूसरी पुस्तकों का अध्ययन करना होता है और पुस्तक की प्रासंगिकता पर विचार करना होता है।
- इसके बाद समीक्षक पुस्तक की समीक्षा लिखता है। इसमें वह पुस्तक एवं लेखक का परिचय देता है, केन्द्रीय विषय को रेखांकित करता है, और विषय वस्तु तथा भाषा-शैली का मूल्यांकन करता है। इसके अतिरिक्त समीक्षक प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ भी देता है और उनके स्तर पर भी टिप्पणी करता है।
- अन्त में, हमने इस बात पर भी विचार किया है कि समीक्षा का आरंभ कैसे किया जाए, मध्य और अंत में क्या-क्या सामग्री शामिल की जाए तथा उनका लेखन कैसे हो।

15.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) परिचयात्मक, विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक समीक्षा में क्रमशः पुस्तक का परिचय, विश्लेषण और मूल्यांकन पर बल होता है। देखें भाग 15.2

2) (क) × (ख) × (ग) × (घ) √

3) (क) × (ख) √ (ग) √ (घ) ×

4) समीक्षा की प्रामाणिकता के लिए यह जरूरी है।
देखें 15.3.2

5) (क) √ (ख) × (ग) × (घ) ×

6) पुस्तक के प्रासंगिक होने पर ही उसकी समीक्षा भी प्रासंगिक होती है और पाठक उसे रुचि के साथ पढ़ता है। (देखें उपभाग 15.3.4)

अभ्यास

अभ्यासों के उत्तर इकाई पढ़कर स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

इकाई 16 साक्षात्कार की तैयारी

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 साक्षात्कार का महत्व
16.3 साक्षात्कार के प्रकार
16.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
16.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार
16.4 साक्षात्कार की तैयारी
16.4.1 व्यक्ति का निर्धारण
16.4.2 पूर्वानुमति
16.4.3 आवश्यक अध्ययन
16.5 प्रश्नावली का निर्माण
16.5.1 प्रश्नों का लेखन
16.5.2 मुख्य बातें
16.5.3 आरंभिक प्रश्न
16.6 साक्षात्कार लेना
16.6.1 सहज मन:स्थिति
16.6.2 तादात्म्य
16.6.3 आरंभिक चरण का महत्व
16.6.4 अन्य जरूरी बातें
16.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग
16.7.1 स्मरण-शक्ति
16.7.2 नोट लेना
16.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग
16.8 सारांश
16.9 शब्दावली
16.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के पाठ्यक्रम की यह सोलहवीं इकाई है। इस इकाई में आप ''साक्षात्कार की तैयारी'' के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फीचर लेखन के क्षेत्र में साक्षात्कार का क्या महत्व है, यह बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के प्रकार बता सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के संबंध में क्या-क्या बातें जानना जरूरी है, इसको समझा सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे;
- साक्षात्कार ले सकने की क्षमता का विकास कर सकेंगे; और
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक सामग्री का सही उपयोग कर सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन के पाठ्यक्रम से संबंधित चौथे खंड की यह सोलहवीं इकाई है। इकाई 16 और 17 में आपको साक्षात्कार के संबंध में बताया जाएगा। साक्षात्कार पत्रकारिता की एक

प्रमुख विधा है। साक्षात्कार रेडियो एवं टी.वी. के लिए भी लिया जाता है। साक्षात्कार लेना और देना दोनों ही महत्वपूर्ण कार्य है। न साक्षात्कार लेना आसान है और न ही देना। इनके लिए व्यवसायिक कुशलता और निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। इस इकाई का उद्देश्य आपको यह बताना है कि साक्षात्कार के लिए किस तरह की तैयारी आवश्यक है। साक्षात्कार केवल दो व्यक्तियों की निरुद्देश्य बातचीत नहीं है। साक्षात्कार के पीछे निश्चित उद्देश्य होता है। इस उद्देश्य के अनुसार ही प्रश्नों का निर्माण होता है। साक्षात्कार किससे लिया जाना है, कब लिया जाना है, किस पत्र-पत्रिका के लिए लिया जाना है, भेंटकर्ता कौन है, साक्षात्कार का विषय या क्षेत्र क्या है–ये सभी बातें महत्वपूर्ण होती हैं। जिनसे आप साक्षात्कार लेना चाहते हैं, वह महत्वपूर्ण व्यक्ति हो सकता है। हो सकता है उसके पास समयाभाव हो। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि आप पहले से समय तय कर लें। इसी तरह जिस व्यक्ति से आप मिलने जा रहे हैं, उसके बारे में आपको पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। आपके प्रश्न सुविचारित होने चाहिए। आप में आत्म विश्वास होना चाहिए। आपके प्रश्न बुद्धिमतापूर्ण होने चाहिए। आपके पास साक्षात्कार के समय नोटबुक का होना आवश्यक है। आपको टेपरिकार्डर का सही इस्तेमाल करना आना चाहिए। साक्षात्कार से संबंधित इन सभी बातों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की गयी है। उन्हें उदाहरणों द्वारा पुष्ट किया है। साथ ही बोध प्रश्नों द्वारा आप इकाई को कितना समझ रहे हैं, इसकी परीक्षा कर सकते हैं।

इकाई में बीच-बीच में अभ्यास दिये हैं। इनको करने से आपमें साक्षात्कार लेने की क्षमता का विकास होगा। आप अपने आस-पड़ोस या मित्रों से साक्षात्कार लें और अपने अभ्यास को बढ़ायें। सृजनात्मक लेखन का यह पाठ्यक्रम व्यवहारमूलक है, इसलिए व्यवहारिक कुशलता का विकास आवश्यक है। साक्षात्कार के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए एक वीडियो भी तैयार किया गया है। आप उसे अवश्य देखें। इससे आपको साक्षात्कार लेने में पर्याप्त मदद मिलेगी। आप पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले साक्षात्कारों को ध्यान से पढ़ें और उनकी विशेषताओं और सीमाओं को नोट करें। इससे आपकी अपनी कुशलता का विकास होगा।

16.2 साक्षात्कार का महत्व

पत्र-पत्रिकाओं में फीचर लेखन का एक महत्वपूर्ण अंग है: साक्षात्कार। साक्षात्कार अर्थात् किसी अन्य व्यक्ति से मिलकर और उससे बातचीत कर किसी विषय विशेष के बारे में उससे उसका पक्ष जानना। आप पत्र-पत्रिकाओं में लगातार साक्षात्कार पढ़ते होंगे। राजनेताओं, मंत्रियों, अभिनेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों आदि के साक्षात्कार प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। उदाहरण के लिए, बजट के समय प्रमुख अर्थशास्त्रियों से साक्षात्कार कर उनकी राय ली जाती है। इसी प्रकार क्रिकेट टेस्ट मैचों के दौरान प्रसिद्ध खिलाड़ियों से साक्षात्कार लिये जाते हैं। साक्षात्कार हमेशा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से ही नहीं लिये जाते, आम आदमी से भी साक्षात्कार लिये जाते हैं। उदाहरण के लिए, बजट के प्रभाव का जायजा लेने के लिए आप किसी गृहिणी, मजदूर, दूकानदार, सरकारी कर्मचारी आदि से साक्षात्कार ले सकते हैं। इस तरह के साक्षात्कार से आपको यह जानकारी मिलेगी कि जनता के विभिन्न हिस्से बजट के बारे में क्या सोचते हैं।

साक्षात्कार के संबंध में मुख्य बात यह है कि इससे हम उस व्यक्ति के विचार उसी के शब्दों में जान सकते हैं, जिससे हम साक्षात्कार लेते हैं। इससे विषय विशेष के संबंध में उस व्यक्ति के विचारों को जानने के बाद पाठक स्वयं अपना निष्कर्ष निकाल सकता है। उदाहरण के लिए, एक साक्षात्कार के निम्नलिखित अंश को देखिए:

प्रश्न : *पहले की और आज की पत्रकारिता में आप क्या अंतर देखते हैं?*
उत्तर : *पत्रकारिता ज्यादा पेशेवर और व्यावसायिक होती गई है और होती जा रही है। शुरू के पत्रकार कुछ आदर्शवादी पत्रकार थे और अधिकतर संपादक और मालिक अलग नहीं थे। उनकी दृष्टि और आदर्श अलग-अलग नहीं थे। अब पत्रकार अधिकतर नौकरी करने वाले हैं। मालिक दूसरा है। मालिकों की दृष्टि व्यावसायिक होती है, पत्रकारों की*

दृष्टि उन्हीं के अनुरूप हो जाती है। सभी पत्रों के लिए बिक्री बढ़ाना जरूरी है। लोगों का मत बदलना, इसका महत्व कम है। पत्र या पत्रिका बिके, इसका महत्व ज्यादा है। इसके जो परिणाम होते हैं वे पत्रकारिता में दीख ही रहे हैं।

(**अज्ञेय से साक्षात्कार**, जनसत्ता, 3 अप्रैल 1988 में प्रकाशित)

उपर्युक्त अंश में अज्ञेय ने पत्रकारिता के संबंध में जो विचार प्रस्तुत किये हैं उससे पाठक स्वयं निष्कर्ष निकाल सकता है कि वे पहले की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में क्या अंतर करते हैं। पाठक अपने अनुभव द्वारा उनके विचारों की परीक्षा भी कर सकते हैं।

साक्षात्कार का लाभ यह भी है कि इसके माध्यम से किसी घटना या विषय-विशेष के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए "बजट" को लिया जा सकता है। बजट पर मिलने वाली प्रतिक्रियाएँ प्रायः अलग-अलग दृष्टिकोणों और हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं। राजनीतिक दल अपनी दलीय नीति के अनुसार बजट का समर्थन और विरोध करते हैं। दुकानदार और व्यावसायिक हित को ध्यान में रखता है। नौकरी पेशा व्यक्ति को महँगाई और आयकर में छूट की ज्यादा चिंता होती है। गरीब तबकों को आम जरूरत की चीजों के दाम परेशान करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि साक्षात्कार के द्वारा हम समाज के विभिन्न समूहों के विचारों से परिचित होते हैं और उन्हें समाज के अन्य समूहों तक पहुँचाते हैं।

साक्षात्कार और विचार-विमर्श में अंतर होता है। साक्षात्कार विचार-विमर्श नहीं है। **इसलिए भेंटकर्ता (प्रश्नकर्ता) को अपने विचारों के प्रति आग्रही नहीं होना चाहिए। पाठक साक्षात्कारदाता के विचार जानना चाहता है न कि भेंटकर्ता के। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को हमेशा** सावधानीपूर्वक प्रश्न पूछने चाहिए और उस उद्देश्य को हमेशा सामने रखना चाहिए जिससे प्रेरित होकर उसने व्यक्ति विशेष से साक्षात्कार करने का निर्णय लिया है। निरुद्देश्य लिया गया साक्षात्कार आपसी बातचीत होकर रह जाता है और पाठक ऐसे साक्षात्कार से कुछ हासिल नहीं पर पाता। प्रश्नकर्त्ता को हमेशा साक्षात्कार को महत्वपूर्ण मानना चाहिए। यह समझना चाहिए कि वह साक्षात्कार के माध्यम से एक सामाजिक दायित्व पूरा कर रहा है। साक्षात्कार वस्तुतः एक पुल है जिससे व्यक्ति (जिससे साक्षात्कार लिया जा रहा है) और समाज को एक-दूसरे के नजदीक लाया जाता है। प्रश्नकर्त्ता के माध्यम से समाज ही उस व्यक्ति विशेष से संवाद स्थापित करता है इसलिए प्रश्नकर्त्ता का दायित्व व्यापक भी है और गंभीर भी। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को साक्षात्कार लेने से पूर्व पूरी तैयारी करनी चाहिए और पूरी गंभीरता के साथ इंटरव्यू लेना चाहिए।

16.3 साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार के लिए व्यक्तियों का चयन किसी कारण विशेष से किया जाता है। उदाहरण के लिए, काश्मीर की समस्या पर गृह मंत्री का साक्षात्कार। यहाँ साक्षात्कार का उद्देश्य शंकर राव चव्हाण नामक व्यक्ति से उनका व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करना नहीं है बल्कि उद्देश्य शंकर राव चव्हाण नामक व्यक्ति जो भारत का गृहमंत्री है उससे काश्मीर संबंधी समस्या पर बातचीत करना है। यहाँ साक्षात्कारदाता (अर्थात् जिसका साक्षात्कार लिया जाना है) गृहमंत्री के रूप में उत्तर देगा। इस तरह के इंटरव्यू किसी विषय-विशेष पर आधारित होंगे। अन्य उदाहरण लें, जैसे सुनील गावस्कर से क्रिकेट के बारे में बात करना, नागार्जुन से उनकी कविताओं या साहित्य के संबंध में बात करना या बाबा आमटे से पर्यावरण के बारे में बात करना—वस्तुतः विषय आधारित साक्षात्कार ही कहलायेंगे। यह भी संभव है कि आप किसी साहित्यकार से राजनीति के बारे में या किसी खिलाड़ी से सामाजिक हालात के बारे में बातचीत करें किन्तु यहाँ भी महत्व विषय का है इसलिए ऐसे इंटरव्यू भी विषय-आधारित इंटरव्यू कहलायेंगे।

लेकिन कुछ इंटरव्यू ऐसे भी होते हैं जिनमें किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व से परिचित कराना उद्देश्य होता है। उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन से उनके व्यक्तिगत जीवन, अभिरुचियों, कार्यों, विचारों तथा

मान्यताओं के संबंध में बातचीत करना। यहाँ उद्देश्य ही मकबूल फिदा हुसैन के व्यक्ति को उजागर करना है, इसलिए ऐसे साक्षात्कार व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहलायेंगे, न कि विषय-आधारित।

इस प्रकार हम साक्षात्कार के मोटे तौर पर दो भेद कर सकते हैं:

i) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार; और
ii) विषय-आधारित साक्षात्कार

16.3.1 व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार

व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार में किसी व्यक्ति-विशेष का व्यक्तित्व केन्द्र में होता है। इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता आमतौर पर ऐसे प्रश्न पूछता है जो उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करे। इस तरह के साक्षात्कार में व्यक्ति के निजी जीवन के बारे में भी सवाल पूछे जाते हैं। उसका कोई सीमित क्षेत्र नहीं होता। प्रश्नकर्त्ता को ही यह तय करना होता है कि वह उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के किन पहलुओं को और कितना उजागर करे और इसके लिए किस तरह के प्रश्न पूछे। इस प्रकार के इंटरव्यू में प्रश्नों का रूप कुछ इस तरह का होता है:

- *क्या आपको बचपन से ही क्रिकेट का शौक था?*
- *लिखने की प्रेरणा आपको किससे मिली?*
- *आपके व्यक्तित्व पर आपकी माता का असर अधिक है या पिता का?*
- *स्कूली शिक्षा के दौरान भी आप इतने ही गंभीर थे?*

उपर्युक्त प्रश्नों में हमें व्यक्ति-विशेष के निजी जीवन और उनकी अभिरूचियों-प्रवृत्तियों आदि का ज्ञान होता है और इससे हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। इसी तरह के व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक अंश देखिए:

प्रश्न : *आपके बारे में आमतौर पर कहा जाता है कि आपको बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है?*

उत्तर : *यह सही नहीं है। गुस्सा आता है, लेकिन तभी जब मैं कोई गलत काम होते देखता हूँ। आमतौर पर मेरी कोशिश होती है कि किसी के काम में दखल न दूँ। लेकिन जानते-बूझते गलत काम होने देना मेरी नैतिकता के खिलाफ है। इसी चीज का जब मैं दृढ़ता से विरोध करता हूँ तो लोग मुझे गुस्सैल और तुनक मिज़ाज कहने लगते हैं।*

प्रश्न : *लेकिन अगर आपका दृष्टिकोण सही है तो आपका समर्थन भी लोग करते होंगे?*

उत्तर : *निश्चय ही, जहाँ तक मेरा अनुभव है, आमतौर पर लोगों ने मेरा समर्थन ही किया है। विरोध तो केवल दो-चार स्वार्थी लोगों ने ही किया है।*

उपर्युक्त साक्षात्कार से उस व्यक्ति के स्वभाव और रुझान का अनुमान लगाया जा सकता है। व्यक्ति-आधारित इंटरव्यू का एक स्वरूप यह भी हो सकता है कि इसमें किसी क्षेत्र विशेष में विशेष दक्षता-प्राप्त करने वाले व्यक्ति की मानसिक बुनावट को समझने का प्रयास किया जाए। उदाहरण के लिए, एक लेखक या खिलाड़ी से ऐसे आत्मीय और संवेदनात्मक प्रश्न पूछे जाएँ जिससे वह अपनी भावनाओं और अंतःप्रवृत्तियों को पाठकों के सामने खोलकर रख सके।

16.3.2 विषय-आधारित साक्षात्कार

विषय-आधारित साक्षात्कार में व्यक्ति नहीं बल्कि कोई विषय, घटना या विचार महत्वपूर्ण होता है। इस तरह के इंटरव्यू भी किसी व्यक्ति विशेष से ही लिये जाते हैं, लेकिन प्रायः उनसे निजी किस्म के प्रश्न नहीं पूछे जाते। दूसरे, इस तरह के इंटरव्यू में प्रश्नकर्त्ता के सामने निश्चित उद्देश्य होता है और आमतौर पर उसके प्रश्न उसी उद्देश्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उदाहरणतः

प्रश्न : *दूसरी बात जो आपने कही—जहाँ विचार-प्रधान हो वहाँ दूसरी तरह की कविता भी हो सकती है। तो ऐसा भी हो सकता है कि आपने कविता के माध्यम से कुछ विचार प्रेषित करना चाहा हो?*

उत्तर : *ऐसा है कि विचार जब आये तो हमने गद्य ही लिखा। ऐसा संयोग हुआ या उसमें जिज्ञासा इतनी थी, तर्क देना था तो जब विचार की बात आयी मैंने गद्य लिखा। दोनों चीजें थीं, समाधान भी, जिज्ञासा भी, तर्क भी, वह कविता में नहीं आता था। गीत में तो नहीं आ सकता। चाणक्य की नीति को गा तो नहीं सकते।*

प्रश्न : *लेकिन आपके गद्य में बहुत से ऐसे गुण हैं जो काव्य के माने जाते हैं। वैसे मानक गद्य है वह, लेकिन काव्यमय भी बहुत है। तो गद्य लिखने की ओर आपकी रुचि इसलिए हुई या बढ़ी, या अभी तक आप यही मानती हैं कि गद्य का क्षेत्र अलग है, काव्य का अलग है?*

उत्तर : *ऐसा मानती हूं अब भी। क्योंकि एक में हम बुद्धि को छूना चाहते हैं, जिज्ञासा जगाना चाहते हैं और चाहते हैं कि प्रश्न करे कोई। और एक में हम संप्रेषण चाहते हैं, एकदम एकता चाहते हैं। तो ऐसा होता है कि कविता में हम वहां ले जाते हैं—जिसको साधारणीकरण कहें या न कहें लेकिन वह हृदय को छूना चाहती है। तो भाषा का फर्क हो ही जाएगा। और एक में हम तर्क करना चाहते हैं, समाधान लेना या देना चाहते हैं। तो कविता में उसका विस्तार मुझे लगता है, नहीं है, महाकाव्य में हो सकता है।*

प्रश्न : *लेकिन संप्रेषण की बात या साथ ले चलने की बात गद्य के लिए भी उतनी ही आवश्यक है, वह बहा न भी ले चले।*

उत्तर : *लेकिन बुद्धि ग्रहण दूसरी तरह करती है, हृदय दूसरी तरह करता है। किसी को रोते देखें या कोई घटना देखें तो उसका प्रभाव बुद्धि पर दूसरा पड़ता है, हृदय पर दूसरा पड़ता है।*

प्रश्न : *तो क्या इष्ट यह नहीं हो सकता कि दोनों का सामंजस्य हो?*

उत्तर : *पूरी तरह नहीं होगा कभी सामंजस्य, ऐसा मुझको लगता है। गद्य रहेगा अपने ढंग से और शायद बहुत शक्तिशाली भी। जहां तक कविता का प्रश्न है वह प्रभाव छोड़ती है, संस्कार छोड़ती है और मैं समझती हूं कि अच्छी कविता आपको किसी समस्या में उलझा कर नहीं छोड़ेगी।* ....

(महादेवी वर्मा से अज्ञेय की बातचीत, **दिनमान** 4-10 दिसम्बर,' 83)

उपर्युक्त साक्षात्कार को देखें तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि इसका एक निश्चित विषय क्षेत्र है और प्रश्नकर्ता ने अपने प्रश्न उस क्षेत्र के इर्द-गिर्द ही बुने हैं। ऐसे साक्षात्कार को हम विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे।

विषय आधारित इंटरव्यू दो प्रकार के हो सकते हैं :

i) **सूचनात्मक साक्षात्कार, और**
ii) **व्याख्यात्मक साक्षात्कार**

i) सूचनात्मक साक्षात्कार : सूचनात्मक साक्षात्कार में मुख्य उद्देश्य पाठकों तक सूचना पहुँचाना है। किसी घटना के संबंध में उससे संबंधित किसी अधिकारी व्यक्ति या व्यक्तियों का साक्षात्कार लेकर लोगों के मन में उस घटना से उत्पन्न विभिन्न जिज्ञासाओं का समाहार करना होता है। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना या बाढ़ या चीनी और तेल की बढ़ती किल्लत ऐसे किसी मुद्दे पर संबंधित अधिकारी से बात करके लोगों तक उससे संबंधित नवीनतम जानकारी पहुँचाई जा सकती है।

उदाहरण : रेल दुर्घटना पर रेल मंत्री से बातचीत

प्रश्न : *इस दुर्घटना के पीछे आप क्या कारण मानते हैं?*

उत्तर : *अभी निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। हमने जाँच का आदेश दे दिया है। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष दुर्घटना के कारणों की जाँच करेंगे और अपनी रिपोर्ट एक माह के भीतर दे देंगे।*

प्रश्न : *क्या आपको इस दुर्घटना के पीछे आतंकवादियों का हाथ लगता है?*

उत्तर : *दुर्घटना से प्रभावित लोगों से बातचीत करने से मुझे ऐसा नहीं लगता। फिर भी जाँच के दौरान इस संभावना पर भी विचार किया जाएगा।*

प्रश्न : यात्रियों की सुरक्षा के लिए आप क्या कदम उठाने जा रहे हैं?
उत्तर : हमने रेलगाड़ियों में सुरक्षा बलों की संख्या में और वृद्धि करने का आदेश दिया है। रेल पटरियों की सुरक्षा के लिए भी और व्यापक प्रबंध किए जा रहे हैं। जनता से हमारी भी अपील है कि ऐसी वस्तु लेकर न चले जिससे किसी भयंकर दुर्घटना होने का अंदेशा हो। अगर कोई आपत्तिजनक वस्तु डिब्बों में दिखाई दे तो तत्काल पुलिस या रेल अधिकारी को सूचित करें।

इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्ता के लिए यह जानना जरूरी है कि :
i) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
ii) इनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
iii) इनके बारे में अधिकतम और अधिकारिक सूचना कौन दे सकता है?

प्रश्नकर्ता को चाहिए कि वह समस्या से संबंधित सभी महत्वपूर्ण तथ्यों से स्वयं भी भलीभांति परिचित हो। उदाहरण के लिए, रेल दुर्घटना से संबंधित रेल मंत्री से साक्षात्कार का निम्नलिखित अंश देखिए :

प्रश्न : मंत्री जी, अभी तक आपने रेल दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए सहायता राशि की घोषणा नहीं की है?
उत्तर : आपका यह कहना गलत है? दुर्घटना के तत्काल बाद ही मैंने सहायता राशि की घोषणा कर दी थी और यह रेडियो और टी.वी. दोनों से प्रसारित भी हुई थी।

इस तरह के प्रश्नोत्तर प्रश्नकर्त्ता की कमजोरी को दर्शाते हैं। इसके विपरीत अगर प्रश्नकर्त्ता को सही तथ्यों की पर्याप्त जानकारी होती तो वह अधिक सार्थक प्रश्न पूछ सकता था।

प्रश्न : आपने दुर्घटना से प्रभावित लोगों के लिए जो सहायता राशि की घोषणा की है, क्या वह पर्याप्त है?
प्रश्न : क्या आप इसे बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं?

उपर्युक्त प्रश्नों से स्पष्ट है कि प्रश्नकर्त्ता को तथ्यों की सही जानकारी है और उसे यह भी मालूम है कि जनता क्या जानना चाहती है। इन प्रश्नों के उत्तर से स्वयं लोगों के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर मिल सकता है। इस तरह के इंटरव्यू में "टाइमिंग" एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अगर साक्षात्कार सही समय और अवसर पर प्रकाशित नहीं हुआ तो वह अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ेगा। इसलिए इस तरह के इंटरव्यू के लिए तत्काल तैयारी करनी चाहिए। कई बार तो ऐसे इंटरव्यू टेलीफोन द्वारा ही ले लिये जाते हैं।

ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार : इस तरह के साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता का उद्देश्य किसी समस्या या घटना विशेष के संबंध में ज्ञात तथ्यों के प्रकाश में व्यक्ति-विशेष के विचार जानना है। ऐसे साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता स्वयं तथ्य प्रस्तुत करता है और साक्षात्कारी से उनके संबंध में स्पष्टीकरण या उसके विचार पूछता है। इस तरह के साक्षात्कार का उद्देश्य यह है कि इससे लोगों को उत्तरदाता का पक्ष प्रामाणिक रूप में ज्ञात हो जाता है। इससे पाठक स्वयं सही-गलत का निर्णय ले सकता है। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह ऐसे ही प्रश्न पूछे जो कथित घटना या समस्या के संबंध में उत्तरदाता के पक्ष में सभी पहलुओं को उजागर कर सके। इसलिए इस तरह के साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को उत्तर के अनुसार प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कहीं वह उत्तरदाता से बहस में न उलझ जाए। प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह प्रश्न पूछते हुए सजग रहे। प्रश्न संक्षेप में परन्तु सधी हुई भाषा में पूछे। प्रश्न स्पष्ट हो जिसे समझने में कोई कठिनाई न हो। अन्यथा उत्तर अस्पष्ट और उलझा हुआ मिलेगा। जो भी उत्तर मिले उसके मंतव्य को समझते हुए अगर आवश्यक हो तो तत्काल प्रतिप्रश्न पूछना चाहिए।

प्रश्नकर्त्ता को इस तरह के साक्षात्कार में तथ्यों या सूचनाओं के बारे में पूछने से बचना चाहिए बल्कि तथ्यों या सूचनाओं को आधार बनाकर अपने प्रश्न पूछने चाहिए। उदाहरण के लिए, सरकार ने नयी शिक्षा नीति की घोषणा की है और इस संबंध में आप शिक्षा मंत्री से साक्षात्कार लेना चाहते हैं तो शिक्षा मंत्री से यह मत पूछिए कि नयी शिक्षा नीति क्या

है? इसकी जानकारी आपको पहले से होनी चाहिए। नयी शिक्षा नीति का अध्ययन कीजिए और उसके संबंध में स्पष्टीकरण या व्याख्या माँगिए।

निम्नलिखित प्रश्नोत्तर को देखिए, इससे स्पष्ट हो जाएगा कि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं :

प्रश्न : *नयी शिक्षा नीति की समीक्षा करते समय किन मुद्दों पर आप खास तौर से ध्यान देंगे।*
उत्तर : *इस बारे में संसद में दिया गया हमारा बयान एकदम स्पष्ट था कि यह कदम 1986 से लागू शिक्षा नीति का पुनरावलोकन है। अब सवाल यह उठता है कि किस बात की समीक्षा की जानी चाहिए? 1964 में पहली बार कोठरी आयोग द्वारा यह लक्ष्य निर्धारित किया गया था कि सकल राष्ट्रीय आय का 6% शिक्षा में व्यय किया जाए। इस लक्ष्य को बाद की सभी सरकारों ने अपनाया भी किन्तु इसको कभी पूरी तरह लागू नहीं किया जा सका। वर्तमान में यह 4.2% है, जो 1400 करोड़ होता है। हमने घोषणा-पत्र में वायदा किया था कि हम 6% के लक्ष्य को 1995 तक पा लेंगे। तकरीबन 42 करोड़ भारतीय अशिक्षित हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों का दुगुना है। शिक्षा पा रही लड़कियों का प्रतिशत लड़कों की तुलना में काफी कम है। हरिजनों में शिक्षा का औसत 10% से भी कम है, जबकि शिक्षा का राष्ट्रीय औसत 36% से भी अधिक है।*

प्रश्न : *महिलाओं की शिक्षा के विषय में आप क्या सोचते हैं?*
उत्तर : *हमारा उद्देश्य है कि महिलाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए....*

उपर्युक्त इंटरव्यू राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की इस घोषणा के बाद शिक्षा राज्य मंत्री चिमनभाई मेहता से लिया गया है कि सरकार नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा करेगी। इसलिए इसके प्रश्नोत्तर इस घोषणा को विस्तार से स्पष्ट करते हैं और उन कारणों पर प्रकाश डालते हैं, जो नयी शिक्षा नीति की पुनर्समीक्षा के आधार हैं।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अपने उत्तर इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से मिलाइए।

1) निम्नलिखित में से सही कथन के आगे (√) का चिह्न लगाइए।

   i) साक्षात्कार दो व्यक्तियों की पारस्परिक बातचीत है। ( )

   ii) साक्षात्कार के माध्यम से किसी घटना या विषय के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। ( )

   iii) साक्षात्कार में भेंटकर्त्ता का दृष्टिकोण प्रमुख रहता है। ( )

   iv) साक्षात्कार के द्वारा समाज व्यक्ति-विशेष से संवाद स्थापित करता है। ( )

2) सूचनात्मक साक्षात्कार और व्याख्यात्मक साक्षात्कार में मुख्य अंतर दो-तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

3) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

....

....

....

....

4) सूचनात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

....

....

....

....

....

5) व्याख्यात्मक साक्षात्कार में प्रश्नकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए।

....

....

....

....

....

अभ्यास

1) निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बताइए कि ये किस तरह के साक्षात्कार के लिए उपर्युक्त हैं?

   i) मुख्यमंत्री महोदय, आप अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कब कर रहे हैं?

   (...)

   ii) रेल के यात्री किराये में वृद्धि करने के पीछे क्या विवशता रही है?

   (...)

   iii) आपके उपन्यासों के नायक टूटे हुए, कुंठित और निराशावादी क्यों होते हैं?

   (...)

   iv) पारिवारिक जीवन के दायित्व क्या आपके लेखन को प्रभावित नहीं करते?

   (...)

   v) विश्व कप में भारतीय हॉकी टीम की पराजय के लिए आप किसे दोषी मानते हैं?

   (...)

2) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए आपके शहर में बढ़ते प्रदूषण के कारणों और उसके निवारण के उपायों पर प्रश्न तैयार कीजिए। प्रश्नों की संख्या पाँच से अधिक न हो।

....

....

....

....

....

....

....

....

16.4 साक्षात्कार की तैयारी

साक्षात्कार लेने से पूर्व साक्षात्कारकर्ता को यह अवश्य जान लेना चाहिए कि उसे इस साक्षात्कार के माध्यम से क्या लक्ष्य प्राप्त करना है अर्थात् साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है।

क्या साक्षात्कार का उद्देश्य किसी समस्या के विभिन्न पक्षों को उजागर करना है या किसी क्षेत्र विशेष के संबंध में सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाना है? आपके साक्षात्कार का उद्देश्य किसी घटना विशेष के संबंध में संबंधित विशेषज्ञों के विचारों को एकत्र करना है या आप किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व से लोगों को परिचित कराना चाहते हैं? आपके साक्षात्कार का जो भी उद्देश्य हो, सबसे पहला प्रश्न यही उपस्थित होता है कि आप साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का चुनाव कैसे करें।

16.4.1 व्यक्ति का निर्धारण

सही व्यक्ति के चुनाव के लिए आवश्यक है कि आपको स्वयं विषय-विशेष या घटना-विशेष से संबंधित तथ्यों की पर्याप्त जानकारी हो। यह कार्य बेहतर ढंग से तभी संभव है जब वह क्षेत्र विशेष आपकी अभिरुचि और विशेषज्ञता से संबंधित हो। उदाहरण के लिए, आप किसी क्रिकेट खिलाड़ी का साक्षात्कार लेना चाहते हैं परन्तु आपकी दिलचस्पी क्रिकेट के बारे में बिल्कुल नहीं है तो आप उत्तरदाता को अपने प्रश्नों से प्रभावित नहीं कर पायेंगे। हो सकता है आपकी अनभिज्ञता उत्तरदाता को असंतुष्ट कर दे।

जब क्षेत्र स्वयं आपकी दिलचस्पी और विशेषज्ञता का होगा तो आप अधिक बेहतर ढंग से अपने प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे। आपके समझदारीपूर्ण प्रश्नों से उत्तरदाता को भी इंटरव्यू देते हुए प्रसन्नता होगी। और यह भी संभव है कि वह ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने के **लिए भी तैयार हो जाए, जिस पर आमतौर पर वह अपना मत व्यक्त करने को तैयार नहीं होता**

सही क्षेत्र के निर्धारण के साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय पर आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसकी प्रासंगिकता क्या है? अर्थात् क्या पाठक उस इंटरव्यू को दिलचस्पी के साथ पढ़ेगा? मान लीजिए आप किसी ऐसे विषय पर इंटरव्यू लेते हैं जिसमें उस पत्र-पत्रिका के पाठकों की कोई रुचि नहीं है तो आपका इंटरव्यू अनपढ़ा ही रह जाएगा।

अंत में, आपको यह विचार करना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए हम किसका चयन करें। यह सोचिए कि उस क्षेत्र विशेष के लिए सही अधिकारी व्यक्ति कौन हो सकता है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा? क्या पाठक उस व्यक्ति के इंटरव्यू में दिलचस्पी लेंगे?

मान लीजिए, आप अपने शहर की बिजली-व्यवस्था के संबंध में इंटरव्यू लेना चाहते हैं तो कोशिश कीजिए कि बिजली-विभाग के सबसे बड़े अधिकारी से आप साक्षात्कार लें। विश्वविद्यालय में छात्रों के प्रवेश संबंधी कठिनाइयों के लिए आप कुलपति से बात करें। साथ ही आप बिजली समस्या पर बिजली उपभोक्ताओं का इंटरव्यू भी ले सकते हैं और प्रवेश के संबंध में छात्रों और उनके संरक्षकों आदि से भी बातचीत कर सकते हैं। इसलिए पहले आपको यह तय करना होगा कि आपको किन-किन से इंटरव्यू लेना है जिनके मतों को जानने में पाठकों की दिलचस्पी होगी।

शुरुआत के लिए आपको अपने आसपास के लोगों का इंटरव्यू लेकर अभ्यास करना चाहिए। आप अपने कॉलेज की फुटबाल टीम के कप्तान का इंटरव्यू ले सकते हैं। अपने मुहल्ले या कालोनी के किसी बुजुर्ग व्यक्ति से रिटायर्ड जीवन की मुश्किलों के बारे में बात कर सकते हैं?

16.4.2 पूर्वानुमति

जब आप यह तय कर लें कि आपको किसका इंटरव्यू लेना है तो सबसे पहले आपको उस व्यक्ति से संपर्क करके उससे इंटरव्यू के लिए अनुमति प्राप्त करनी चाहिए। यह कार्य आप व्यक्तिगत मुलाकात द्वारा, टेलीफोन द्वारा या पत्र द्वारा कर सकते हैं। अनुमति लेने के लिए आपको अपने इंटरव्यू का मकसद तथा विषय स्पष्ट करना चाहिए। यह बताना चाहिए कि इंटरव्यू का उद्देश्य प्राप्त करने में उत्तरदाता का योगदान क्यों महत्वपूर्ण है तथा किस पत्र-पत्रिका के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं।

अनुमति मिल जाने पर आप इंटरव्यू के लिए दिन, समय और स्थान भी उत्तरदाता के साथ तय कर लीजिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि इंटरव्यू के लिए उत्तरदाता को पर्याप्त समय मिले। इंटरव्यू का स्थान निर्धारित करते हुए आप उत्तरदाता को अपने सुझाव दे सकते हैं, लेकिन निर्णय उनकी सुविधा को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए। इंटरव्यू के लिए जितना समय तय हो, आप अपने प्रश्नों को उसी समय अवधि के अनुसार तैयार कीजिए, लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि अगर उत्तरदाता साक्षात्कार के दौरान ही अवधि बढ़ाने के लिए तैयार हो जाता है तो आपके पास साक्षात्कार आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त और महत्वपूर्ण प्रश्न होने चाहिए।

16.4.3 आवश्यक अध्ययन

इंटरव्यू पर जाने से पहले आपको संबंधित विषय की पर्याप्त जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए। तथ्यों की भी जाँच-परख कर लेनी चाहिए तथा उत्तरदाता के संबंध में भी आपको सही जानकारी होनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि आपकी गलत जानकारी या अनभिज्ञता इंटरव्यू के दौरान हास्यास्पद स्थिति पैदा कर दे। विशेष रूप से उत्तरदाता के संबंध में आपका ज्ञान पूरी तरह से तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। इंटरव्यू के दौरान वार्तालाप निम्नलिखित ढंग से नहीं चलना चाहिए।

प्रश्न : *आप लंबे समय तक लोकसभा के सदस्य भी रहे हैं इस नाते आप इस समस्या के बारे में क्या सोचते हैं?*

उत्तर : *मैं लोकसभा का सदस्य कभी नहीं रहा, सिर्फ एक अवधि के लिए राज्य सभा का सदस्य रहा हूं?....*

या

प्रश्न : *आपने जो कपड़ा नीति लागू की उसके बाद भी कपड़ा उद्योग में कोई सुधार नहीं आया है?*

उत्तर : *देखिए, अभी हमने नयी कपड़ा नीति लागू नहीं की है, अभी तो हम पूर्व सरकार की कपड़ा नीति की समीक्षा ही कर रहे हैं, उसके बाद ही कपड़ा नीति में परिवर्तन के संबंध में कुछ कहना संभव होगा।*

जब साक्षात्कार उपर्युक्त ढंग से चलता है तो पाठक की नज़र में साक्षात्कारकर्त्ता की प्रतिष्ठा कम हो जाती है? पाठक यह सोचने लगता है कि साक्षात्कारकर्त्ता अपने कार्य के प्रति गंभीर नहीं है। इसलिए जरूरी है कि साक्षात्कारकर्त्ता को साक्षात्कार से पूर्व आवश्यक अध्ययन और पर्याप्त जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए।

16.5 प्रश्नावली का निर्माण

साक्षात्कार से पूर्व सबसे महत्वपूर्ण काम है प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार सोद्देश्यपूर्ण बातचीत है। इसलिए प्रश्नकर्त्ता को प्रश्न निर्माण करते वक्त हमेशा साक्षात्कार का उद्देश्य अवश्य सामने रखना चाहिए। साक्षात्कारकर्त्ता जिस व्यक्ति से, जिस विषय में बातचीत करने जा रहा है, उसके संबंध में उसका ज्ञान पर्याप्त होता है, होना चाहिए। लेकिन इंटरव्यू के दौरान प्रश्नकर्त्ता की स्थिति सिर्फ श्रोता की होती है। उसे साक्षात्कारदाता से बहस करने से बचना चाहिए और अपनी राय या मत को इंटरव्यू पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इससे इंटरव्यू का उद्देश्य ही खत्म हो जाएगा। लेकिन प्रश्नों में आपका ज्ञान और समझदारी अवश्य अभिव्यक्त होनी चाहिए।

16.5.1 प्रश्नों का लेखन

प्रश्न तैयार करने के दो आधार हो सकते हैं। जब प्रश्नकर्त्ता साक्षात्कारदाता से सिर्फ सूचनाएँ प्राप्त करना चाहता है तो उसके प्रश्नों का स्वरूप अलग होगा। ऐसे प्रश्न आमतौर पर कौन? कब? और कहाँ? के आधार पर निर्मित होंगे? जैसे:

- *नयी निर्यात नीति से भारतीय उद्योग को* ***क्या*** *लाभ होगा?*

- *क्रिकेट बोर्ड के इस निर्णय का औचित्य आप **कैसे** निर्धारित करेंगे?*
- *आप **क्यों** ऐसा मानते हैं कि नयी उद्योग नीति से निर्यात को बढ़ावा मिलेगा?*

उपर्युक्त सभी प्रश्नों में किसी ज्ञात तथ्य को आधार बनाकर साक्षात्कारदाता से उसका पक्ष जानने का प्रयास किया गया है।

प्रश्न बनाते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर इतना संक्षिप्त न हो कि आगे प्रश्न पूछना ही संभव न लगे। उदाहरण के लिए, यह पूछने के बजाय कि ''क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?'' यह पूछना चाहिए कि ''ईश्वर के संबंध में आपके क्या विचार हैं?'' पहले प्रश्न का उत्तर ''हाँ'' या ''नहीं'' में होगा और अगर आप पहले से ऐसे उत्तर की आशा नहीं करते तो आप प्रतिप्रश्न नहीं पूछ पायेंगे और साक्षात्कार में अवरोध उत्पन्न हो जाएगा? दूसरे, बात आगे बढ़ाने के लिए अंततः फिर उसी प्रश्न पर आना होगा यानी आपको पूछना होगा कि ''आपके विश्वास या अविश्वास का आधार क्या है?'' इसलिए व्याख्या वाले प्रश्नों में हमेशा **क्यों** और **कैसे** की ध्वनि विद्यमान रहनी चाहिए अन्यथा उत्तर पूरे और स्पष्ट प्राप्त नहीं होंगे।

- *क्या आपकी पार्टी संसद में दल-बदल विधेयक का समर्थन करेगी?*

या

- *क्या आपकी पार्टी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में शामिल होगी?*

इस तरह के प्रश्नों से जो उत्तर प्राप्त होंगे वे ''हाँ'' या साक्षात्कारदाता ''टिप्पणी नहीं'' कहेगा। लेकिन इतना तय है कि उत्तरदाता को कोई न कोई स्पष्ट अभिमत प्रकट करना होगा। अगर वह इसके बावजूद गोलमोल उत्तर देगा तो पाठकों के सामने उस नेता की ''दुविधा'' भी स्पष्ट हो जाएगी।

16.5.2 मुख्य बातें

प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारदाता के प्रति पूर्वग्रह से ग्रस्त नहीं होनी चाहिए। न उसे चुभने वाली और न अपमानित करने वाली बात कहनी चाहिए। हाँ, यह संभव है कि कभी-कभी इंटरव्यू के दौरान आप कुछ ऐसे तीखे प्रश्न पूछें कि उत्तरदाता कुछ सीमा तक उत्तेजित हो जाए। लेकिन ऐसे अवसरों पर भी आप में व्यक्तिगत दुराग्रह व्यक्त नहीं होना चाहिए और पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि आपका उद्देश्य पाठकों तक सच्चाई पहुँचाना है। व्यक्तिगत जीवन से संबंधित ऐसे प्रश्न न पूछें जो साक्षात्कारदाता के लिए अपमानजनक हो। प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारदाता आमतौर पर प्रश्नकर्त्ता के पूर्वग्रह से चिढ़ सकते हैं जैसे ऐसे प्रश्न पूछना :

- *आपने ऐसी जगह से चुनाव लड़ने का **बचकाना** निर्णय क्यों लिया **जहाँ आपका कोई जनाधार नहीं था?***
- *भारतीय टीम में रोज-रोज नयी तब्दीली करने के इस **भौंडे नाटक** के संबंध में **क्या आप कुछ सफाई दे सकते हैं?***

आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि ये प्रश्न किसी को भी चुभ सकते हैं। प्रश्नों को हमेशा सही और तार्किक क्रम से पूछना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि आप पहले से प्रश्नों की रूपरेखा बना लें। आपको यह भी अनुमान लगाना चाहिए आपके प्रश्न का क्या उत्तर मिलने की संभावना है? इस ''संभाव्यता'' के आधार पर अगले प्रश्न तैयार कीजिए। अगर आपने उत्तरदाता के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लिया है तो एक हद तक उत्तर का अनुमान पहले से लगा सकते हैं।

अगर प्रश्न के उत्तर आपके अनुमान से अलग मिलते हैं तो आप अपने आगे के प्रश्नों को इंटरव्यू के दौरान ही परिवर्तित कीजिए। अपने तैयार प्रश्नों पर अड़े मत रहिए।

जितना संभव हो प्रश्नों को छोटा और स्पष्ट बनाइए। लंबे और अस्पष्ट प्रश्नों से बचिए। ऐसे प्रश्न उत्तरदाता को प्रेरित नहीं करेंगे। प्रश्न पूछते हुए आप अपने मत या दृष्टिकोण को विस्तार से बताने की कोशिश मत कीजिए। दो-तीन प्रश्न एक साथ मत पूछिए। एक बार में एक ही प्रश्न पूछिए।

'प्रश्न पूछते हुए यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह इतने खुले हुए भी नहीं होने चाहिए कि उसके उत्तर या तो देना ही संभव न हो या इतने लंबे हों कि उनको साक्षात्कार में समेटना कठिन हो जाए। उदाहरण के लिए, इस तरह के प्रश्न *"आप अपने बचपन के बारे में बताइए"* या *"आप कभी एक माह तक होनोलूलू में प्रवास करके लौटे हैं, उसके बारे में हमारे पाठकों को कुछ बताइए।"*

इंटरव्यू में प्रश्न पूछते हुए आप स्वयं उत्तर का सुझाव न दें। जैसे *"नयी शिक्षा नीति के बारे में आपका क्या विचार है? मेरे विचार में तो यह शिक्षा नीति शिक्षा के क्षेत्र में मूलभूत परिवर्तन का आधार बनेगी।"* प्रश्न पूछने का यह ढंग प्रश्नकर्त्ता की अपरिपक्वता को दर्शाता है।

प्रश्न पूछते हुए उत्तरकर्त्ता को अपनी ओर से उत्तर सुझाने में और भी खतरे हैं।

- *आपको इस बार लोकसभा का टिकट नहीं दिया गया है क्या आपको इसके योग्य नहीं समझा गया या आप स्वयं इच्छुक नहीं थे?*

इस तरह के प्रश्न में आपने अपनी तरफ से दो उत्तर दे दिये हैं। यह भी संभव है कि उत्तरदाता इन दोनों उत्तरों से सहमत न हो। और वह आपकी बात सिरे से ही काट दे। वह कोई तीसरा जवाब दे। इसलिए बेहतर यही है कि आप सीधे प्रश्न पूछें:

- *इस बार आपको लोकसभा का टिकट नहीं मिलने का क्या कारण है?*

इंटरव्यू के दौरान उत्तरदाता के दृष्टिकोण से भिन्न दृष्टिकोण या राय आपको ज्ञात हो तो उन्हें आधार बनाकर प्रतिप्रश्न पूछना इंटरव्यू को और अर्थवान् बनाता है। लेकिन ऐसे प्रश्न पूछते हुए आपकी वस्तुपरक निष्पक्षता अवश्य प्रतिबिंबित होनी चाहिए। ऐसे प्रश्न पूछने का सही ढंग यह होगा।

- *जो लोग यह मानते हैं कि नयी शिक्षा नीति वस्तुतः शिक्षा-विरोधी है, ऐसे मत के संबंध में आपकी क्या प्रतिक्रिया है....*
- *यह तर्क दिया जाता है कि....आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे*

लेकिन ऐसे प्रश्न निम्नलिखित ढंग से कभी न पूछिए

- *लेकिन यह भी तो कहा जाता है कि....*
- *कुछ लोगों का यह मत है कि....*

यहाँ प्रश्न नहीं पूछे गये हैं बल्कि भिन्न मत प्रस्तुत कर दिये गये हैं। ऐसे कथन का उत्तर देना साक्षात्कारदाता के लिए आवश्यक नहीं है और ऐसी स्थिति में इंटरव्यू में अवरोध उत्पन्न हो सकता है।

16.5.3 आरंभिक प्रश्न

साक्षात्कार से पूर्व उसका उद्देश्य आपके मस्तिष्क में स्पष्ट होना चाहिए। आपने जिस व्यक्ति से साक्षात्कार लेने का निश्चय किया है, उसे पहले ही अपने उद्देश्य के संबंध में बता दीजिए। इस पर भी उसके साथ विचार कर लीजिए कि आप किस तरह के प्रश्न पूछेंगे और साक्षात्कार का आरंभ कैसे करेंगे।

आपके इंटरव्यू का उद्देश्य क्या है उसके अनुसार अपने प्रश्न बनाइए। अगर किसी दुर्घटना यात्रा या उल्लेखनीय घटना के संबंध में जानना चाहते हैं तो आपके साक्षात्कार का लक्ष्य उस व्यक्ति की स्मृतियों को जगाना होना चाहिए। आप अगर किसी विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं तो आपको उसके ज्ञान को सामने लाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर आप किसी समस्या के संबंध में किसी अधिकारी से बात कर रहे हैं तो आप समस्या को आधार बनाकर प्रश्न पूछिए। किसी महत्वपूर्ण लेखक, खिलाड़ी या कलाकार से बात करते हुए उसके कार्यों और उसके व्यक्तित्व को उजागर करने की कोशिश कीजिए।

इंटरव्यू की **शुरुआत** महत्वपूर्ण होती है। आपका साक्षात्कार कैसे आरंभ हो, इस पर आगे की बातचीत निर्भर करेगी। पहले प्रश्न से आप भूमिका बाँधिए और उसके बाद लक्ष्य की ओर आगे बढ़िए।

उदाहरण के लिए, अगर किसी फिल्म अभिनेता से आप साक्षात्कार ले रहे हैं और इंटरव्यू से कुछ अरसे पूर्व उस अभिनेता को कोई पुरस्कार मिला है या उसकी कोई फिल्म रिलीज़ हुई है या किसी खास संदर्भ में उसकी चर्चा हुई है तो उल्लेख करते हुए बात शुरू कीजिए। अगर किसी प्रतियोगिता के आरंभ होने से पूर्व किसी संबंधित खिलाड़ी का इंटरव्यू लिया जाता है तो उसकी शुरुआत कुछ इस ढंग से की जा सकती है।

प्रश्न : *रिलायंस कप में भारत की संभावनाएँ क्या हैं?*

उत्तर : *मैं क्रिकेट खेलने का सिर्फ एक तरीका जानता हूँ और वह है, जीतने की कोशिश। मुझे पक्का यकीन है कि हम ही जीतेंगे।*

इंटरव्यू के आरंभ में पूछे गये प्रश्न दो काम करते हैं :

i) उत्तरदाता के साथ प्रश्नकर्ता अपना तादात्म्य स्थापित करता है।

ii) पाठकों को बातचीत की भूमिका स्पष्ट होती है। वे अनुमान लगा सकते हैं कि आगे की बातचीत की दिशा क्या होगी। इससे उनकी दिलचस्पी बढ़ती है।

लेकिन यह भी ध्यान रखिए कि आप महत्वपूर्ण प्रश्नों पर जल्दी ही आ जाएँ अन्यथा बाद में समय के अभाव में अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न छूट जायेंगे। या यह भी संभव है कि बात किसी अन्य दिशा की ओर मुड़ जाए जिसका अधिक महत्व न हो। **तमस** नामक टीवी सीरियल के प्रसारण के अवसर पर **रविवार** साप्ताहिक ने प्रख्यात कथाकार भीष्म साहनी का साक्षात्कार किया। यह सीरियल उन्हीं के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित था। इस साक्षात्कार का पहला प्रश्न औपचारिक है, लेकिन बातचीत शीघ्र ही अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होने लगती है। साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों से यह स्पष्ट है :

सवाल (1) तमस *के लेखक को अपनी रचना परदे पर देखकर कैसा महसूस हो रहा है?*

सवाल (2) *क्या ऐसा नहीं लगता कि यह धारावाहिक उन सभी लोगों को चेतावनी देता है, जो एक बार फिर मुल्क के बँटवारे की बात कर रहे हैं?*

सवाल (3) *किस ढंग से? आपके लिहाज से ऐसी कौन-सी बात **तमस** उन करोड़ों हिंदुस्तानियों तक पहुँचाता है जो इसे देख या पढ़ रहे हैं?*

बोध प्रश्न

6) साक्षात्कार के लिए सही व्यक्ति का निर्धारण कैसे किया जाना चाहिए? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

7) साक्षात्कारकर्त्ता को इंटरव्यू लेने से पूर्व किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

8) निम्नलिखित बातों/समस्याओं के लिए किन-किन व्यक्तियों से इंटरव्यू लेना चाहिए?

i) शहर में बढ़ते अपराधों के संबंध में

....

ii) महँगाई की समस्या को उजागर करने के लिए

....

iii) छात्रों के राजनीति में भाग लेने के संबंध में

....

iv) प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान पर

....

9) साक्षात्कार से पूर्व साक्षात्कारकर्त्ता के लिए अध्ययन की क्यों आवश्यकता है? कोई दो कारण बताइए।

....

....

....

....

....

10) प्रश्न पूछते हुए साक्षात्कारकर्त्ता को किन प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए?

....

....

....

....

....

अभ्यास

3) निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो रूप दिये गये हैं। इनमें से कौन-से रूप अधिक उचित हैं, उन पर √ का चिह्न लगाइए।

i) क) आप अज्ञेय को बड़ा कवि मानते हैं या मुक्तिबोध को? ( )

ख) कवि के रूप में आपको अज्ञेय और मुक्तिबोध में क्या समानता और विभिन्नता नजर आती है? ( )

ii) क) कुछ लोगों ने इस कांड के साथ आपके नाम को जोड़ने की कोशिश की है। आप है। आप इस संबंध में क्या कहना चाहेंगे? ( )

ख) इस घोटाले में क्या आपका भी हाथ है? ( )

iii) क) आपने इस फिल्म में काम करने से इसलिए इंकार किया क्योंकि निर्माता आपको मुँहमांगा पैसा नहीं दे रहा था? फिल्म की सफलता के बाद आपको आपको पछतावा नहीं हो रहा है? ( )

ख) इस फिल्म में काम करने से इंकार करने की क्या वजह थी? फिल्म की सफलता के बाद आप क्या अनुभव करते हैं? ( )

iv) क) इस टेस्ट श्रृंखला में आप इतना खराब क्यों खेले? ( )

ख) इस टेस्ट श्रृंखला में आप अपने खेल का मूल्यांकन किस रूप में करते हैं? ( )

4) अपने किसी मित्र से साक्षात्कार लेने के लिए कुछ प्रश्न लिखिए। विषय हो– कॉलेज में प्रवेश में आने वाली कठिनाइयाँ।

....

....

....

....

....

....

16.6 साक्षात्कार लेना

जब आप साक्षात्कार लेने जाएँ तो हमेशा समय पर पहुँचिए। देर से पहुँचने पर यह भी संभव है कि वह व्यक्ति आपकी प्रतीक्षा करके अन्य काम में व्यस्त हो गया हो। यह भी संभव है कि आपके देर से पहुँचने के कारण वह साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय न दे

सके और यह भी संभव है कि आपके प्रति वह प्रतिकूल रुख अपना ले। ये तीनों स्थितियाँ साक्षात्कार के लिए उचित नहीं हैं। इसलिए बेहतर यही है कि आप समय पर पहुँचें ताकि साक्षात्कारदाता पर आपका प्रभाव अच्छा पड़े और आप उसका विश्वास जीत सकें।

16.6.1 सहज मनःस्थिति

अगर आप पहली बार साक्षात्कार लेने जा रहे हैं तो आपका घबराना स्वाभाविक है। इसलिए यह बेहतर है कि किसी पत्र-पत्रिका के लिए साक्षात्कार लेने से पहले आप अपने आसपास रहने वालों से इंटरव्यू लेने का अभ्यास कीजिए ताकि आपकी झिझक खत्म हो सके।

अगर आपने इंटरव्यू से पहले पर्याप्त तैयारी कर ली है तो आप निश्चय ही अपने अंदर विश्वास महसूस करेंगे। आप अपने प्रश्नों को एक बार अच्छी तरह से दोहरा लीजिए और प्रश्नों के लिखित रूप को इंटरव्यू के दौरान अपने सामने रखिए। अपनी वेशभूषा सलीकेदार रखिए ताकि साक्षात्कारदाता पर गंभीर प्रभाव पड़े। यह भी ध्यान रखिए कि आप किनसे मिलने जा रहे हैं। अगर आपकी वेशभूषा का साक्षात्कारदाता पर प्रतिकूल असर पड़ता है तो साक्षात्कार सुखद माहौल में नहीं हो सकेगा।

जब साक्षात्कार के लिए पहुँचे तो घबराइए मत। जल्दबाजी और हड़बड़ाहट की बजाय धीरे-धीरे सोच-समझकर अपनी बात आरंभ कीजिए। अगर आप किसी बड़े नेता, प्रख्यात अभिनेता या कलाकार से मिलने जा रहे हैं तो भी घबराइए मत। ये सभी लोग हमारी तरह सामान्य इंसान हैं। आमतौर पर इनका व्यवहार मित्रतापूर्ण और सौहार्दता से भरा होता है।

अगर आप भयभीत और संकोची रहेंगे तो अपनी बात ठीक से न रख सकेंगे और न ही साक्षात्कारदाता के उत्तर सुन पायेंगे। अगर आपके चेहरे पर घबराहट व्यक्त होगी तो साक्षात्कारदाता भी साक्षात्कार के दौरान सहज नहीं हो पाएगा।

इसलिए आप सहज होकर, पूरी तैयारी के साथ, पूरे आत्मविश्वास के साथ इंटरव्यू के लिए जाइए।

16.6.2 तादात्म्य

जब आप साक्षात्कार आरंभ करें तो अपने प्रश्नों पर आने से पूर्व साक्षात्कारदाता से तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कारदाता के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करते हुए उसे बताइए कि यह साक्षात्कार किस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है। साक्षात्कारदाता को यह भी बताइए कि इंटरव्यू के दौरान आप किस तरह के प्रश्न पूछना चाहते हैं। साक्षात्कारदाता अगर प्रश्नों के स्वरूप में या क्रम में परिवर्तन चाहता है या कुछ प्रश्न जोड़ना या हटाना चाहता है और इससे आपके उद्देश्य पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता है तो आप साक्षात्कारदाता के कहे अनुसार परिवर्तन कर लीजिए। यदि साक्षात्कारदाता के सुझाव आपके उद्देश्य की प्राप्ति में बाधक है तो आप उसे अपना पक्ष ठीक से स्पष्ट कीजिए। निश्चय ही एक सफल साक्षात्कारकर्त्ता को अपना व्यवहार लचीला और विनम्र बनाना चाहिए।

16.6.3 आरंभिक चरण का महत्व

साक्षात्कार का आरंभिक चरण महत्वपूर्ण होता है। विषय पर आपकी दक्षता, आपकी गंभीरता, आपकी समझदारी और आपके कुशल व्यवहार का आरंभिक प्रभाव आगे के क्षणों में साक्षात्कारदाता के व्यवहार को तय करने में मदद करेगा। साक्षात्कारदाता पर अगर आपके व्यवहार का असर अच्छा पड़ता है तो वह आपको साक्षात्कार में पूर्ण सहयोग देगा। यदि उसे आपके व्यवहार में या इंटरव्यू लेने के तरीके में कोई बात खटकने वाली लगी तो उसका मूड बिगड़ सकता है। इसलिए यह ध्यान रखना चाहिए कि आरंभ से ही आपका समग्र प्रभाव साक्षात्कारदाता के लिए उत्साहवर्द्धक हो।

जिससे आप साक्षात्कार ले रहे हैं, वह अगर अधिक अनुभवी न हो या इंटरव्यू देने का यह उसके लिए पहला अवसर हो तो आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण और मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ आप औपचारिक साक्षात्कार आरंभ करने से पूर्व अनौपचारिक

बातचीत शुरू कीजिए। इसी प्रक्रिया में धीरे-धीरे आप अपने प्रश्नों पर आइए। इंटरव्यू का आरंभिक हिस्सा बाद में चाहें तो आप संपादित कर सकते हैं।

साक्षात्कार की जब औपचारिक शुरुआत हो तो आप साक्षात्कारदाता के उत्तर को ध्यान से सुनिए उन्हें नोट करते जाइए। अगर इंटरव्यू रिकार्ड नहीं हो रहा है और आप लिखने में पिछड़ रहे हैं तो साक्षात्कारदाता से विनम्रता से दोहराने के लिए कह दीजिए। कोशिश कीजिए कि आप साक्षात्कारदाता के बोलने के साथ-साथ लिख सकें। इसमें शार्टहैंड सहायक हो सकती है। अगर शार्टहैंड न भी आती हो तो आप स्वयं शब्दों, पदों या वाक्यों के संकेत विकसित कर सकते हैं जिन्हें पुनर्लेखन के दौरान विस्तार दे सकें।

साक्षात्कारदाता के बोलते समय आप उसकी बात को ध्यान से सुनिए। साक्षात्कारदाता को लगना चाहिए कि आप उसकी बात ध्यान से सुन रहे हैं। हाँ, यह अवश्यं है कि "हा" "हूं" या "ठीक" "बहुत ठीक" आदि बोलकर उसके बोलने की लय को भंग मत कीजिए।

अगर साक्षात्कारदाता आरंभ में ही अपनी लय बैठा लेता है तो आपको एक अच्छा साक्षात्कार लेने का श्रेय मिल सकता है।

16.6.4 अन्य जरूरी बातें

साक्षात्कार आरंभ होने के बाद आपके आगे के प्रश्न पहले के प्रश्नों के जवाब में कही गयी बातों पर आधारित होने चाहिए। प्रश्नों में क्रमबद्धता और तार्किकता नजर आनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब आप इंटरव्यू से पूर्व पर्याप्त तैयारी कर चुके हों और साक्षात्कारदाता से आरंभिक बातचीत कर चुके हों।

कई बार यह भी संभव है कि उत्तरदाता उत्तर देते हुए गैर जरूरी बातों में भटक जाए। ऐसे में आपका अगला प्रश्न भी आपके उद्देश्य से इतर हो सकता है या आप बातचीत के ऐसे बिंदु पर पहुँच सकते हैं जहाँ आगे बातचीत कैसे और किस दिशा में ले जायी जाए, यह निर्णय लेना कठिन हो जाए। ऐसी स्थिति में आपको अत्यंत सावधानी से बात को पुनः अपने लक्ष्य की ओर मोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। आप साक्षात्कारदाता की बात के महत्व को स्वीकार करते हुए अपना प्रश्न दोहराइए या साक्षात्कारदाता के उत्तर में से ही कोई सूत्र पकड़ कर उसे वापस अपने उद्देश्य की ओर लाइए। इसके लिए आप अगला प्रश्न निम्नलिखित ढंग से पूछ सकते हैं।

- *आपने अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही है। लेकिन इस संबंध में एक भिन्न दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया गया है.... आपका इस संबंध में क्या विचार है?*

या

- *आपने यह जो बात कही है उससे मैं समझता हूँ कि इस बात को इस नजरिए से भी देखा जा सकता है.... क्या आप अपने इस विचार को और स्पष्ट करेंगे?*

कई बार साक्षात्कारदाता उत्तर देते हुए पूरी तरह से खुलते नहीं। वे आधे अधूरे या टालने वाले उत्तर देकर चुप हो जाते हैं। आमतौर पर ऐसा रुख वे प्रायः विवादास्पद मुद्दों पर अपनाते हैं। जबकि ऐसे विवादास्पद मुद्दों पर उनका पक्ष विस्तार से जानने पर ही हमारे साक्षात्कार की सफलता निर्भर करती है। इसके लिए यह जरूरी है कि आप पहले साक्षात्कारदाता का पूरा विश्वास हासिल करें। विनम्रता के साथ प्रश्न पूछें। अगर उत्तर आपके अनुकूल न हो तो, न तो उत्तेजित हों न घबराएँ। आप अपनी बात को आगे बढ़ाएँ, और उसी प्रश्न को किसी भिन्न रूप में पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप एक ही बात को कई ढंग से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और आपकी चतुराई से पूरी संभावना है कि साक्षात्कारदाता अंततः अपने मन की बात कह दे।

आप इंटरव्यू के लिए जितनी तैयारी के साथ जायेंगे आपको साक्षात्कार में भी उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। अगर आपकी तैयारी ही अपूर्ण है तो आप प्रतिप्रश्न पूछने की क्षमता खो बैठेंगे और फिर आपको जो भी उत्तर मिलेगा उसी से आपको संतुष्ट होना पड़ेगा।

इंटरव्यू के दौरान आप ध्यान से उत्तर सुनिए और त्वरित गति से सोचिए कि अगला प्रश्न क्या पूछा जाना चाहिए। आपकी सजगता और समझदारी साक्षात्कार को जीवंत बनाएगी।

जब साक्षात्कार समाप्ति की ओर बढ़ने लगे या आप अंतिम प्रश्न पूछना चाहें तो अपना प्रश्न इस तरह से पूछें–

अंत में मैं यह जानना चाहूंगा''
''संक्षेप में क्या आप.....''

इससे साक्षात्कारदाता को अपनी बात का समाहार करने का अवसर मिल सकेगा। जब इंटरव्यू समाप्त हो तो साक्षात्कारदाता के प्रति आभार अवश्य व्यक्त कीजिए।

16.7 साक्षात्कार की रिकार्डिंग

इंटरव्यू प्रकाशित होने के बाद कई बार साक्षात्कारदाता उसमें कही गयी बात का खंडन कर देता है या यह भी कह देता है कि मैंने यह बात इस रूप में या इस संदर्भ में नहीं कही थी। इसलिए बेहतर यह है कि आप इंटरव्यू के दौरान पूरी सावधानी से नोट लें। अपनी स्मरण-शक्ति का भी पूरा उपयोग करें। अगर साक्षात्कारदाता अनुमति दे तो टेप रिकार्डर का प्रयोग करें। इंटरव्यू प्रकाशन के लिए भेजने से पहले अगर संभव हो तो साक्षात्कारदाता को दिखा दें ताकि विवाद की गुंजाईश न रहे।

16.7.1 स्मरण-शक्ति

इंटरव्यू के दौरान आपकी एकाग्रता और स्मरण-शक्ति का बहुत महत्व है। कई बार इंटरव्यू के समय साक्षात्कारदाता द्वारा कही गयी बातों को ठीक उसी रूप में लिख लेना संभव नहीं होता। अगर आपने पूरी एकाग्रता से साक्षात्कारदाता की बात सुनी है तो आपको बाद में साक्षात्कार का पुनर्लेखन करने में कठिनाई नहीं आएगी।

16.7.2 नोट लेना

इंटरव्यू के दौरान आप नोट अवश्य लीजिए। इसके लिए ऐसी नोट बुक का इस्तेमाल कीजिए जिसे सरलता से उपयोग में लाया जा सके। अपने लिखने की गति को बढ़ाइए। इसके लिए संकेतों का इस्तेमाल कीजिए। साक्षात्कारदाता की बात को यथासंभव उसी के शब्दों में लिखिए। लेकिन लिखते हुए अपना ध्यान साक्षात्कारदाता की ओर रखिए। अगर आपका ध्यान साक्षात्कारदाता की ओर नहीं होगा तो वह उपेक्षित महसूस कर सकता है। आपका ध्यान अगर साक्षात्कारदाता की ओर रहेगा तो आप प्रश्नों और उत्तरों के साथ उसके बदलते हाव-भाव को भी नोट कर सकेंगे। कई बार इंटरव्यू के दौरान शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण साक्षात्कारदाता के हाव-भाव होते हैं। हँसना, मुस्कराना, उत्तेजना के साथ उत्तर देना या तत्काल उत्तर न देकर थोड़ी देर मौन रहकर उत्तर देना, धारा-प्रवाह बोलना या रुक-रुक कर बोलना–इन सब बातों का इंटरव्यू में महत्व हो सकता है। अगर आपने उत्तर के साथ-साथ इन बातों को भी नोट किया है तो आपका इंटरव्यू और अधिक जीवंत और सार्थक बन सकेगा।

16.7.3 टेप रिकार्डर का प्रयोग

साक्षात्कार के दौरान टेप रिकार्डर का प्रयोग करना इस दृष्टि से उचित है कि इससे साक्षात्कारदाता की बातों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। दूसरे, इससे साक्षात्कार के संबंध में उठने वाले विवाद से बचा जा सकता है। किन्तु टेप रिकार्डर का उपयोग साक्षात्कारदाता की अनुमति लेकर ही कीजिए। कई साक्षात्कारदाता टेप रिकार्डर के प्रयोग की अनुमति नहीं देते क्योंकि साक्षात्कार के दौरान अनजाने में साक्षात्कारदाता कुछ ऐसी बातें भी कह जाता है जिन्हें वह प्रकाशित नहीं करवाना चाहता। अगर ऐसी बातें टेप हो जाती हैं तो उनके उपयोग का खतरा बना रहता है।

टेप रिकार्डर का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखिए कि वह ठीक से काम करे। आरंभ में थोड़ी रिकार्डिंग करके सुन लीजिए। कहीं ऐसा न हो कि किसी खराबी के कारण साक्षात्कार रिकार्ड ही न हो। जहाँ तक संभव हो टेप रिकार्डर के लिए सेल का प्रयोग कीजिए ताकि बिजली के अभाव में भी रिकार्डिंग हो सके।

टेप रिकार्ड का प्रयोग करते हुए भी साथ-ही-साथ नोट बुक पर नोट अवश्य लीजिए। कई बार टेप रिकार्डर पर आवाज साफ नहीं सुनाई देती या कोई-कोई शब्द समझ में नहीं आता। ऐसे समय नोट उपयोगी साबित होते हैं।

बोध प्रश्न

11) साक्षात्कार लेने के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। इनमें से कुछ बातें सही हैं, कुछ गलत। आप सही पर (√) का और गलत पर (×) का चिह्न लगाइए।

क) साक्षात्कार के लिए निर्धारित समय से पंद्रह मिनट देर से पहुँचिए ताकि आप साक्षात्कारदाता पर अपने महत्वपूर्ण व्यक्ति होने का प्रभाव जमा सकें। (सही/गलत)

ख) साक्षात्कार के लिए सहज होकर, पूरी तैयारी और आत्मविश्वास के साथ जाइए। (सही/गलत)

ग) आप वही प्रश्न पूछिए जो आप पूछना चाहते हैं, चाहे साक्षात्कारदाता पसंद करे या न करे। (सही/गलत)

घ) विनम्र और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से आप उत्तरदाता को अपने अनुकूल बना सकते हैं। (सही/गलत)

ङ) साक्षात्कार के लिए पर्याप्त तैयारी के साथ जाइए। (सही/गलत)

12) साक्षात्कारदाता के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए क्या करना आवश्यक है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....
....
....
....
....

13) एक नये साक्षात्कारदाता के साथ भेंटकर्त्ता का व्यवहार कैसा होना चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....
....
....
....
....

14) उत्तरदाता अगर किसी विवादास्पद विषय पर स्पष्ट राय न देना चाहे तो भेंटकर्त्ता को क्या करना चाहिए?

....
....
....
....
....

15) साक्षात्कार के दौरान नोट लेते वक्त किन-किन बातों की सावधानी अपेक्षित है?

....
....
....

....

....

अभ्यास

5) मान लीजिए आपको अपने क्षेत्र के किसी राजनेता से क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर दस मिनट का साक्षात्कार लेना है। इसके लिए पूर्व तैयारी के तौर पर आप पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

6) नीचे एक प्रश्न का उत्तर दिया गया है। यह **तमस** के संदर्भ में पूछे गये एक प्रश्न का भीष्म साहनी द्वारा दिया गया जवाब है। आप इसे पढ़कर प्रश्न की पुनर्रचना कीजिए।

जवाब : 1947 में मेरे अपने शहर रावलपिंडी में दंगे हुए थे। उसके कुछ दिन बाद देश के बँटवारे का फैसला हो गया। एक ऐसा बवंडर मचा, जिसमें लाखों लोग बेघर हुए और हजारों मारे गये। यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा और खुद भी भोगा। ये तमाम तस्वीरें उन दिनों मेरे जेहन में थीं। देश आजाद हो गया। लेकिन सांप्रदायिक दंगे नहीं रुके। तब तो हम अंगरेज को दोष दे देते थे। अब सवाल यह पैदा होता है कि किसे दोष दिया जाये? 1974 में ऐसा ही एक दंगा हुआ। शायद भिवंडी में या कहीं और। उस समय मैं अपने आपको न रोक सका और यह उपन्यास लिखना शुरू कर दिया। उपन्यास लिखते वक्त मैंने इस बात की भरसक कोशिश की कि जो कुछ अपनी आँखों से देखा है, झेला है, और अनुभव किया है, उसे कागज पर उतार दूं और शायद बहुत कुछ ऐसा मैं कर सका। बस यही भावना थी मेरी। मैं लोगों को इस उपन्यास के जरिये चेतावनी देना चाहता था, उन्हें सचेत करना चाहता था।

....

....

....

....

....

16.8 सारांश

- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी के बारे में बताना इस इकाई का उद्देश्य रहा है। साक्षात्कार पत्रकारिता का महत्वपूर्ण अंग है। साक्षात्कार में किसी अन्य व्यक्ति से

बातचीत द्वारा उसके विचार जाने जाते हैं। यह बातचीत सोद्देश्य होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति विशेष के विचारों को उसी के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है। एक ही समस्या या विषय पर एक से अधिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार का महत्व बता सकते हैं।

- साक्षात्कार के उद्देश्य के आधार पर उसके दो भेद किये जा सकते हैं। अगर किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व को उजागर करना साक्षात्कार का उद्देश्य है तो उसे हम व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। यदि साक्षात्कार किसी समस्या या विषय-विशेष के संबंध में व्यक्ति-विशेष के विचार जानने के लिए लिया जाता है तो उसे विषय-आधारित साक्षात्कार कहेंगे। विषय-आधारित साक्षात्कार के भी दो भेद किये जा सकते हैं—सूचनात्मक और व्याख्यात्मक साक्षात्कार। सूचनात्मक साक्षात्कार में सूचना एकत्र करना उद्देश्य होता है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में स्पष्टीकरण या पक्ष-विशेष को जानना उद्देश्य होता है। अब आप साक्षात्कार के उपर्युक्त भेदों को परिभाषित कर सकते हैं।
- साक्षात्कार की तैयारी के लिए सबसे पहले तो किस विषय पर, किस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना है, इसकी क्या प्रासंगिकता है आदि प्रश्नों पर विचार करना होगा। इंटरव्यू के लिए निर्धारित व्यक्ति से पूर्वानुमति भी आवश्यक है तथा जिस विषय पर साक्षात्कार लेना है, उसके संबंध में आवश्यक अध्ययन भी करना होगा। इंटरव्यू से पूर्व इतनी तैयारी के बिना स्तरीय साक्षात्कार संभव नहीं है, इकाई पढ़ने के बाद आप इंटरव्यू लेते वक्त उक्त बातों का ध्यान रख सकते हैं।
- साक्षात्कार का सबसे महत्वपूर्ण अंग है—प्रश्नावली का निर्माण। साक्षात्कार से पूर्व प्रश्नों का सोच-विचारकर निर्माण करना चाहिए। आपके प्रश्न इंटरव्यू के उद्देश्य को फलीभूत करने वाले होने चाहिए। पहले से तैयार प्रश्नों से आपको इंटरव्यू लेने में सुविधा होगी। प्रश्न स्पष्ट और सरल भाषा में होने चाहिए। ताकि उत्तर भी सही और स्पष्ट मिलें। इकाई को पढ़ने के बाद साक्षात्कार के लिए प्रश्नों के निर्माण में आपकी कुशलता में वृद्धि हो सकेगी।
- साक्षात्कार पूर्ण तैयारी और आत्मविश्वास के साथ लीजिए। हड़बड़ी और घबराहट से आपको सफलता नहीं मिलेगी। उत्तरदाता से विनम्र व्यवहार कीजिए। उससे तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश कीजिए। साक्षात्कार के लिए नोट बुक साथ ले जाइए। अगर अनुमति मिले तो टेप रिकार्डर का भी उपयोग कीजिए। परंतु अगर आप एकाग्रचित्त होकर उत्तर सुनेंगे और अपनी स्मरण-शक्ति पर भरोसा रखेंगे तो वह अधिक लाभप्रद होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप साक्षात्कार के लिए अपने को तैयार कर सकते हैं।

16.9 शब्दावली

साक्षात्कारकर्त्ता : साक्षात्कार लेने वाला (Interviewer) व्यक्ति।

साक्षात्कारदाता : साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति (Interviewee) अर्थात् जिससे साक्षात्कार लिया जाता है।

साधारणीकरण : काव्य या कला का आस्वादन करते हुए पाठक या प्रेक्षक का ऐसी स्थिति में पहुँचना जहाँ वह पूर्णतः रचना के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है।

16.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) × ii) √ iii) × iv) √

2) सूचनात्मक साक्षात्कार में व्यक्ति विशेष से किसी विषय के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती है जबकि व्याख्यात्मक साक्षात्कार में ज्ञात तथ्यों के संबंध में व्यक्ति विशेष का पक्ष या स्पष्टीकरण जाना जाता है।

3) i) व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व को उजागर करना।
   ii) उसकी अभिरुचियों, प्रवृत्तियों और मानसिक बुनावट से साक्षात्कार कराना।

4) i) पाठक किन समस्याओं से उद्वेलित हैं?
   ii) उनके संबंध में वे क्या जानना चाहते हैं?
   iii) इनके बारे में अधिकारिक और अधिकतम सूचना कौन दे सकता है?

5) किसी ज्ञात तथ्य के संबंध में व्यक्ति-विशेष के पक्ष को प्रस्तुत करना और उससे स्पष्टीकरण प्राप्त करना इसका उद्देश्य है। इसके लिए समस्या के संबंध में भेंटकर्ता की पर्याप्त तैयारी होनी चाहिए। उसे प्रतिप्रश्न पूछने के लिए तैयार रहना चाहिए।

6) जिस क्षेत्र विशेष के लिए आप इंटरव्यू लेना चाहते हैं उसके लिए अधिकारी व्यक्ति कौन है? क्या वह सरलता से इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा क्या उस व्यक्ति से इंटरव्यू लेना प्रासंगिक है?

7) इंटरव्यू लेने से पूर्व आप जिस विषय पर इंटरव्यू लेना चाहते हैं, उसके संबंध में आवश्यक जानकारी अवश्य प्राप्त करें। साक्षात्कारदाता से पूर्वानुमति लें और उसके संबंध में भी आवश्यक जानकारी हासिल कर लें। साक्षात्कारदाता से समय निर्धारित करें। प्रश्न बना लें और यह भी विचार कर लें कि प्रश्नों को किस क्रम में पूछेंगे।

8) i) उच्च पुलिस अधिकारी या शहर प्रशासक से।
   ii) गृहिणी, छोटा दुकानदार, नौकरीपेशा व्यक्ति, वित्तमंत्री से।
   iii) छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों, नेताओं से।
   iv) प्रेमचंद के पाठकों, रचनाकारों, समीक्षकों एवं प्रेमचंद पर शोध कार्य करने वालों से।

9) i) गलत जानकारी या अनभिज्ञता से हम गलत प्रश्न पूछेंगे जिनका साक्षात्कारदाता पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।
   ii) आवश्यक अध्ययन के बिना हमारे प्रश्न सामान्य स्तर के होंगे और प्रतिप्रश्न भी नहीं पूछ पायेंगे।

10) i) प्रश्नों की भाषा साक्षात्कारदाता के प्रति पूर्वग्रहयुक्त नहीं होनी चाहिए।
    ii) चुभने वाली और तीखी भाषा के इस्तेमाल से बचना चाहिए।
    iii) प्रश्न पूछते हुए अपनी ओर से उत्तर नहीं सुझाना चाहिए।

11) क) गलत ख) सही ग) गलत घ) सही ङ) सही

12) अच्छा साक्षात्कार लेने के लिए जरूरी है कि आप साक्षात्कारदाता से तादात्म्य स्थापित करें। इसके लिए सबसे पहले साक्षात्कारदाता के महत्व और व्यस्तता की चर्चा करें और समय देने के लिए उसके प्रति आभार प्रकट करें। उत्तरदाता से साक्षात्कार के उद्देश्य की चर्चा कीजिए। जो प्रश्न आप पूछना चाहते हैं उनके बारे में बताएँ और उससे सुझाव लें और यथासंभव प्रश्नों में परिवर्तन कर लें। आपका व्यवहार लचीला और विनम्र होना चाहिए।

13) नये साक्षात्कारदाता के साथ आपका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण एवं मित्रवत् होना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ साक्षात्कार से पूर्व मुद्दों पर अनौपचारिक बातचीत कर लीजिए। इसी प्रक्रिया में आप धीरे-धीरे अपने प्रश्नों पर आइए।

14) पहले साक्षात्कारदाता का विश्वास प्राप्त कीजिए। विनम्रता से प्रश्न पूछें। अगर उत्तर से आप संतुष्ट न हों तो आप बिना घबराए और उत्तेजित हुए भिन्न ढंग से उसी प्रश्न को पूछें। अगर आप पूरी तैयारी के साथ गये हैं तो आप अपने सवाल को कई तरीके से पूछ सकते हैं। धैर्य, विनम्रता और समझदारी के साथ आप अपने प्रश्न का उत्तर पा सकते हैं।

15) देखिए 16.7.2

अभ्यास

1) i) सूचनात्मक साक्षात्कार
   ii) व्याख्यात्मक साक्षात्कार
   iii) यह प्रश्न दोनों तरह के साक्षात्कार में शामिल किया जा सकता है
   iv) व्यक्ति-आधारित साक्षात्कार
   v) व्याख्यात्मक साक्षात्कार

2) इस साक्षात्कार में आप निम्नलिखित विषयों पर प्रश्न पूछ सकते हैं :
   i) प्रदूषण के कारण; दोषपूर्ण सफाई व्यवस्था, कारखानों से निकलने वाले धुएँ और बढ़ते वाहन आदि।
   ii) प्रदूषण से बचने के उपाय :
      क) सफाई व्यवस्था कैसे सुधारी जाए।
      ख) कारखाने से निकलने वाले धुएँ और अपशिष्ट से फैलने वाले प्रदूषण से कैसे ब जाए।
      ग) वाहनों से निकलने वाले धुएँ को कम करने के क्या उपाय हैं।

3) i) ख ii) क iii) ख iv) ख

4) प्रश्न बताते समय यह ध्यान रखिए कि एक प्रश्न से दूसरा प्रश्न परस्पर संबद्ध हो एवं सामान्यतः पहले प्रश्न के उत्तर से ही दूसरा प्रश्न बनना चाहिए।

5) सबसे पहले आप वह क्षेत्र निर्धारित कीजिए जिससे संबंधित प्रश्न आप पूछेंगे। मान लीजिए विषय है : शहर में बढ़ता साम्प्रदायिक तनाव। आप निम्नलिखित प्रश्न तैयार कर सकते हैं?
   i) हमारे शहर में सांप्रदायिक सद्भाव की लंबी परंपरा रही है, लेकिन पिछले कुछ समय से इस माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की जा रही है, आप इसे किस रूप में लेते हैं?
   ii) जो ताकतें सांप्रदायिक तनाव बढ़ा रही हैं, उनके एकाएक पनपने का क्या कारण है?
   iii) क्या इसके लिए राजनीतिक पार्टियां और राजनेता भी दोषी नहीं हैं।
   iv) आप इस समस्या से निपटने के लिए क्या उपाय सुझाते हैं?
   v) जनता को सांप्रदायिकता के विरुद्ध कैसे एक्यबद्ध करना चाहिए? क्या आप कुछ ठोस सुझाव देंगे?
   दिये गये उत्तर के अनुसार प्रश्नों में आप आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं।

6) **प्रश्न** : "तमस" लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली? ऐसी कौन-सी बात थी, जिसने आपको इस विषय पर कलम उठाने के लिए मजबूर कर दिया?